अघोरानंद और एंबरग्रिस

अनिल शेखर "अमस"

अघोरानं

द

और

एम्बरग्रि

स

-: डिस्क्लेमर :-

****

यह संपूर्ण कथानक काल्पनिक है और लेखक की शुद्ध कल्पना है ।

किसी वास्तविक पात्र या प्रसंग या स्थान से किसी भी प्रकार की युति अगर बैठती है तो उसे केवल एक संयोग माना जाए ।

कथा के प्रसंग में जिन साधनाओं तथा मंत्रों का उल्लेख है । उनको प्रतीकात्मक समझा जाए ।

किसी भी प्रकार की साधना तथा प्रयोग सक्षम गुरु के सानिध्य में तथा उनके निर्देशन में ही संपन्न किए जाएं , तभी उपयुक्त परिणाम प्राप्त होते हैं ।

इस कथानक में दिए गए मंत्रों को तथा साधना विधियों को लेखक की कल्पना मान कर पढ़ें तथा स्वयं किसी भी प्रकार से उनका उपयोग न करें । क्योंकि यह गुरुगम्य विषय है ।

किसी प्रकार की त्रुटि होने पर गंभीर दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं , जिसकी जिम्मेदारी आपकी स्वयं की होगी ।

नरबलि तथा अन्य प्रक्रियाओं का उल्लेख केवल कथा में रोमांच पैदा करने के लिए किया गया है । इसका किसी भी वास्तविक घटना या व्यक्ति से किसी भी प्रकार का संबंध होना महज एक संयोग है ।

पाठक स्वविवेक से कार्य करें और साधना के पथ पर किसी योग्य और अनुभवी साधक या गुरु के मार्गदर्शन में ही आगे बढ़े ।

कथा में उल्लिखित किसी भी प्रक्रिया का जो कानूनन अपराध हो, प्रयोग ना करें !

यह आपके लिए हानिकारक होगा ।

किसी भी गैर कानूनी गतिविधि में संलिप्त होने पर आपको कानून के तहत दंड का पात्र होना पड़ेगा ।

अंत में .....

इस रचना को तंत्र कथा के रूप में मनोरंजन के लिए पढ़ें तथा इस का आनंद लें ।

सस्नेह

अनिल शेखर

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा का नायक मैं, यानि अघोरानंद, 26 वर्षीय एक गृहस्थ युवा था । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं जो नहीं लिखी जा सकती । कई बातें ऐसी हैं जो अविश्वसनीय है ।

बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो बेहद रोमांचक हैं और जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा ।

ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से और भगवती महानील सरस्वती की कृपा से शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है ..... जो आशा करता हूँ कि आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है । इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है ! इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है | अंत में ..... यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है ! उसका आनंद लें ...

सस्नेह :-

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

सफर का आगाज

अघोरानंद की पिछली यात्रा (अघोरानंद और चम्पा बंजारन) में आपने पढ़ा था कि वह देवकी गुरुक्कल के साथ केरल की यात्रा पर निकल गया था और वहां भगवती के श्री विग्रह में देवकी गुरुक्कल समाहित हो गई थी !

उस अभूतपूर्व दृश्य को देखने के बाद भाव विह्वल होकर अघोरानंद देवी के श्री चरणों में दंडवत प्रणाम करता हुआ बेहोश हो गया था .....

अब आगे की यात्रा पर चलते हैं .

उस अद्भुत अनुभव से गुजरने के बाद लगभग चौबीस घंटे तक मेरी मानसिक स्थिति डांवाडोल रही । मेरी भी इच्छा हो रही थी कि मैं भी भगवती के श्री विग्रह में समाहित हो जाऊं.....

लेकिन ऐसा सौभाग्य हर किसी का नहीं होता । लगभग 24 घंटे के बाद मेरी मानसिक स्थिति थोड़ी सामान्य हुई और फिर मुझे लगा कि अब लौटने का समय हो चुका है । मैं वापस उस स्थान पर पहुंचा जहां पर विमान को छोड़ा था .....

जैसा कि आप लोग जानते हैं कि वह मानसिक शक्ति से चलने वाला विमान था तो जैसे ही मैं वहां पर पहुंचा तो वह विमान पुनः स्पष्ट हो गया । मैं उस में बैठ कर चल पड़ा वापसी की यात्रा में.....

विमान वापस मदालसा के गांव पहुंचा और वहां पर विमान अपने आप नीचे उतरने लगा ।
नीचे चंपा खड़ी हुई थी ! संभवत: वह देवकी गुरुक्कल के स्वागत के लिए आई होगी ।

विमान का द्वार खुला और वह दौड़कर अंदर प्रवेश कर गई । विमान के अंदर मुझे अकेले देख कर चंपा ने देवकी गुरुकल के विषय में पूछा .....
उत्तर में मैंने वहां घटी हुई सारी घटनाएं विस्तार से बताई । जिन्हें सुनकर वह भी आश्चर्यचकित हुई .....
कुछ क्षण उदास और शांत रहने के बाद बोली - चलो मैं आपको घर छोड़ देती हूँ !
विमान वापस आकाश में उड़ गया कुछ समय की यात्रा के बाद वह विमान उसी प्रकार से सूक्ष्म रूप से मेरे घर के पास पहुंचा !

उस समय अर्धरात्रि के बाद का समय हो चुका है था । चारों तरफ सुनसान वीरान सन्नाटा फैला हुआ था । विमान वहां पर उतरा और उसके बाद चंपा और मैं उस विमान से उतरे । विमान से चलकर हम दोनों मेरे घर तक आए ।

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे छोटे से घर में माधुरी और चंपा जैसी अद्भुत साधिकाओं के चरण कमल स्पर्श हुए हैं । भगवती महामाया के इन दिव्य स्वरूपों का किसी भी घर में आगमन सौभाग्य से कम नहीं है क्योंकि यह वे साधिकायें हैं जिन्होंने भगवती जगदंबा को साक्षात अपने शरीर में समाहित किया हुआ है । इनका आगमन स्वयं जगदंबा के आगमन के समान ही महत्वपूर्ण विलक्षण दिव्य और आशीर्वाद से युक्त होता है । चंपा आकर अंदर कुर्सी पर बैठ गई । मैंने चाय पिलाने का ऑफर दिया । जिसे उसने स्वीकार कर लिया । बढ़िया अदरक वाली चाय बनाकर मैंने उसे पिलाई और उसके बाद चंपा मुझ से विदा लेकर वापस चली गई ।

मैं वापस अपने प्यारे घर में लौट चुका था । जैसा कि स्वाभाविक था 5 मिनट के बाद घन घोर निद्रा की

गहराइयों में जा चुका था । एक नए सुबह के इंतजार में .....

जहां शायद कुछ और नई घटनाएं मेरा इंतजार कर रही होती ।

अगले दिन सुबह दूधवाली ग्वालन माई का आगमन हुआ । उन्होंने काफी सारी बातें सुनाई और अचानक इस प्रकार से गायब हो जाने से दूध देना बंद करने की धमकी भी दी ।

मैं चुपचाप उनकी सारी बातें सुनता रहा । मुझे मालूम था कि इस प्रकार से गायब होना तो मेरी नियति बन चुकी है । यह घटनाएं घटित होती रहेंगी इसलिए मैं ऐसी कोई भी बात नहीं कह सकता था जो उस ग्वालन को आश्वस्त कर सकती हो ।

खैर.....

इस बात को वह भी जानती थी कि मैं सुधरने वाला नहीं हूं ....

वह अपनी पूरी बात सुना कर अपने रास्ते की ओर चल पड़ी ...

अगर आप गृहस्थ जीवन में है तो यह आपके बड़े काम की चीज है । इस टेक्नोलॉजी को अपनाकर आप अपना गृहस्थ बड़े ही आराम से चला सकते हैं । गृहस्थ पुरुष के ऊपर उसकी पत्नी अपना नियंत्रण रखना चाहती है और वह चाहती है कि वह उसकी बात को चुने । अधिकांश अवसरों पर पति अपनी पत्नी की बात नहीं सुनते इसलिए उनको इस बात की हमेशा शिकायत रहती है ।

इसका एक बड़ा सुंदर सा उपाय है , कि आप उनकी बात को सुनें और सहमति जरूर जताएँ । उदाहरण के लिए आपको शाम को देर से घर आने की आदत है और आप अपने दोस्तों से मिलकर गप्पे लड़ा के 7:30 बजे घर लौटते हैं और आपकी पत्नी आपको इस बात के लिए झाड़ती है और आप उससे झगड़ा करना प्रारंभ कर देते हैं ।

ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

जब भी वह कहे कि तुम शाम को देर से आना बंद कर दो तो आप बिल्कुल सहमति जताये और कहे कि हां मैं देर से आना बंद कर दूंगा ।

जब भी पत्नी ऐसा कहे कि कल से यह सब बिल्कुल बंद हो जाना चाहिए तो आपको सहमति में सिर हिलाना है ।

अगले दिन भी आपको उसी प्रकार अपने समय से घर आना है.....

फिर अगर पत्नी कहे कि तुमने कल वादा किया था कि कल से तुम समय पर घर आओगे ।

तो.....

आपको बिल्कुल स्वीकार कर लेना है कि आपने ऐसा वादा किया था और पत्नी से कहना है कि ठीक है मैं कल से समय पर घर आ जाऊंगा ।

यह बात आपको रोज कहनी है लेकिन आपको अपने समय पर ही घर आना है .....

ऐसा आप महीने भर तक लगातार करें तो निश्चित मानिए कि आपकी पत्नी इस विषय पर आप को टोकना बंद कर देगी ।

इसके उलट अगर आप उसे सफाई देने लगेंगे .....

समस्या बताने लगेंगे.....

झूठ बोलेंगे .....

तो बेवजह का झगड़ा टंटा चलता रहेगा ।

इससे बचने का यह एक शानदार उपाय है । इसे आप ट्राई करकर देखें । मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि आप 99% इस में सफल होंगे । धीरे-धीरे आपकी पत्नी को आपसे शिकायत भी कम होने लगेगी ।

क्योंकि.....

उन्हें यह बात समझ में आ जाएगी कि यह भैंस के आगे बीन बजाने जैसा वाला मामला है और इससे कोई लाभ नहीं होने वाला ।

हां !

यह जरूर ध्यान रखिएगा कि झगड़ा नहीं करना है .....

पत्नी की बात का सम्मान और आदर करना है ।

भले ही आप उसे माने या न माने .....

खैर.....

अपनी बात सुनाकर ग्वालन चली गई और मैं भी तैयार होकर अपने अधिकारी की दो-चार बात सुनने के लिए ऑफिस की ओर रवाना हो गया ।

ऑफिस वापसी और बॉस

मैं काफी दिनों से गायब था और इसके एवज में अधिकारी को कुछ बातें सुनाने का हक होता है । मैं धीरे से मानसिक रूप से तैयार होता हुआ अपने अधिकारी के कक्ष में सिग्नेचर करने के लिए पहुंचा ।

आप लोगों की भी जानकारी में होगा कि कई कार्यालयों में कर्मचारियों के आगमन को अर्थात उनके अटेंडेंस को वेरीफाई करने के लिए एक रजिस्टर रखा जाता है । जिसमें रोज सिग्नेचर करना होता है ।

मेरे कार्यालय में यह रजिस्टर मेरे अधिकारी श्री वी एस एस राव के कक्ष में रखा रहता था । श्री राव का पूरा नाम था वेंकट सन्निधानम शास्त्री राव । हम सभी उन्हें राव साहब कहते थे । राव साहब बेहद सरल सहज प्रवृत्ति के अधिकारी थे । उनकी वेशभूषा भी काफी सादगी से भरी हुई रहती थी ।

राव साहब के पिता तिरुपति के अधिपति वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर में कार्य करते थे । राव साहब बहुत ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । देवी-देवताओं के अस्तित्व पर उनको प्रबल विश्वास था । इस कारण

से उनका एक सॉफ्ट कॉर्नर मेरे प्रति भी था क्योंकि वह जानते थे कि मैं एक साधक हूं ।

समय के वे बड़े पाबंद थे और यह अवगुण मेरे अंदर भी था ।

कार्यालय का समय दस बजे प्रारंभ होता था और वह द्स बजने को 5 मिनट पहले कार्यालय में उपस्थित हो जाते थे ।

मैं भी लगभग उसी समय पर कार्यालय में उपस्थित हो जाता था । इस बात पर वह मुझसे थोड़े प्रसन्न भी रहा करते थे ।

लेकिन.....

इस प्रकार से लंबी अनुपस्थिति को कोई भी अधिकारी स्वीकार नहीं करता है । ऐसी स्थिति में उसका अपने कर्मचारी को डांटना डपटना धमकाना यह सब एक सामान्य घटना में आती है .....

जिससे मैं कई बार रुबरु हो चुका था ।

वैसे ही किसी घटना का साक्षी होने के लिए मैंने कमरे के अंदर प्रवेश किया ।

जब मैंने कमरे के अंदर प्रवेश किया तो राव साहब अपनी कुर्सी पर बैठे हुए थे । उन्होंने अपनी नाक पर

ऐनक को ठीक करते हुए मेरी ओर देखा और अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए बोले - आओ मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था, मुझे तुमसे एक जरूरी काम है ।

इतना कहकर वह मुझे हाथ पकड़ कर कार्यालय के बाहर बने हुए बगीचे की ओर ले गए । यह पहली बार था जब वह मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार कर रहे थे । इसलिए मुझे लगा कि कोई विशेष बात होगी .... तभी वह इतने ज्यादा चिंतित है ।

उन्होंने मुझसे कहा - अघोरानंद ! मेरे पत्नी के दूर के रिश्ते का एक दामाद है । वह एक बड़ी मुसीबत में फंसा हुआ है ! तुम तो तांत्रिक हो ! मैं चाहता हूं कि तुम उसकी मदद कर दो ।

मैंने कहा - राव साहब आप समस्या बताएं, अगर मेरे अधिकार क्षेत्र में होगा तो मैं कोशिश जरूर करूंगा ।

राव साहब बोले - यहां नहीं ! क्या तुम मेरे घर आ सकते हो ?

मैंने कहा - शाम को ऑफिस से निकलने के बाद आ सकता हूं, या फिर कल रविवार है, कल आ जाऊंगा ।

राव साहब ने कहा - ठीक है ! फिर एक काम करो तुम कल दस बजे मेरे घर आ जाओ ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया और जान बची तो लाखों पाए वाली मुस्कुराहट के साथ अपनी सीट पर आकर जम गया।

बहुत सारा काम बचा हुआ था !

काफी कुछ मेरे सहयोगीयों ने निपटा दिया था ....

तो वह दिन भरपूर व्यस्तता के साथ गुजरा और शाम को थका हारा मैं वापस घर पहुंच गया ।

उस समय मौसम ठंडा था !

भोजन आदि से निपट कर मैं बिस्तर के संपर्क में आ गया और पंखे की ठंडी हवा के सानिध्य में वापस निद्रा देवी की गोद में सो गया ।

रात को हमें सपने दिखाई देते हैं .....

इनमें से कई सपने हमारी दिनभर की गतिविधियों का या किसी पढ़े गए प्रसंग का मानसिक चित्रण होते हैं ।

कई बार यह किसी पुरानी याद का स्वरूप भी हो सकते हैं .....

हाँ .... कई बार अजीब से सपने आते हैं ....

हमारे ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत स्वप्न फल का भी एक अलग विभाग है । जिसमें स्वप्न के फल के विषय में बहुत सारी बातें और उनके संभावित परिणामों के बारे में भी बताया जाता है .....

उस रात नींद में मुझे एक पत्थर जैसी आकृति दिखाई दी , जो इससे पहले मैंने कभी नहीं देखी थी ।
वह आकृति हल्के सफेद मटमैले रंग की थी ।
उस प्रकार का पत्थर मैंने पहले कभी नहीं देखा था ।
यह कुछ-कुछ नदी में मिलने वाले सफेद पत्थरों के जैसा था।
लेकिन.....
कुछ तो उसमें ऐसा था जो अजीब लग रहा था ।
इस प्रकार के सपने मुझे तब आते हैं जब ऐसी किसी चीज से सामना होने वाला होता है । जब सामना होता है ..... तब उसके विषय में जानकारी भी हो जाती है..... इसलिए विचारों को झटक कर .... उठकर मैं अपने काम में लग गया ।
नाश्ता संपन्न होने के बाद राव साहब से मिलने जाना था । मैं ठीक दस बजे उनके घर में पहुंच गया। राव साहब

की पत्नी एक धर्म परायण महिला थी । उनका काफी समय पूजा पाठ में व्यतीत होता था ।
उनके घर के पास पहुंचते ही किसी मंदिर जैसी अनुभूति होने लगती थी .....
अगरबत्ती और धूप की जलने की मंद मंद खुशबू बिखरी रहती थी ।
कई बार मंत्रों की ध्वनियाँ गुंजरित होती रहतीं जो वे पूजन में उपयोग करती थी ।
या फिर एम एस सुब्बालक्ष्मी जी के शुद्ध स्पस्ट उच्चारण मे गाये हुए स्तोत्र उनके घर में उच्चरित होते रहते थे !
कुल मिलाकर बड़ा ही सात्विक और मन को शांत कर देने वाला माहौल हुआ करता था ।
इससे पहले कई बार मैं उनके यहाँ आ चुका था ।

महिलाओं की छठी इंद्री बड़ी तेज होती है । वह बड़ी आसानी से भाँप जाती हैं कि सामने वाला व्यक्ति कैसा है ?
संभवत: उन्हें मेरे विषय में भी ऐसा कुछ आभास हुआ होगा । वह मेरे पहुंचने पर विशेष रुप से नाश्ता चाय

वगैरह करा कर ही भेजती थी । इस प्रकार से उनके प्रति मेरी आत्मीयता भी काफी बढ़ चुकी थी । वह मुझे मातृवत लगती थी क्योंकि वह उसी प्रकार से चिरौरी करके नाश्ता चाय आदि के लिए बाध्य कर देती थी ।
राव साहब मेरे इंतजार में थे ।
तब तक पूजन कक्ष से घंटी की ध्वनियाँ आने लगी । संभवतः राव साहब की पत्नी का पूजन भी समाप्त हो चुका था और वह आरती संपन्न कर रही थी । थोड़ी देर बाद वे आरती की थाली लेकर बाहर आई और चारों तरफ दिखाकर हम लोगों को भी आरती देकर वापस चली गई ।
मुझे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई और थोड़ी देर में पानी का ग्लास ले कर लौटी और बोली - इस बार तुम्हें बहुत दिनों के बाद हमारी याद आई । बीच-बीच में आते क्यों नहीं हो ?

अब मैं उनको क्या बताता ।
मैंने सहमति में सिर हिलाया और चुपचाप बैठा रहा ।
राव साहब के साथ कुछ इधर-उधर की बातें होती रहीं .....

लेकिन उन्होने अपनी समस्या के विषय मे कोई बात नहीं की ।
अधिकारी वाले संकोच मे मैं भी पूछ नहीं पाया ।

चाय लेकर माताजी पुनः उपस्थित हुई । सामान्यतः हम तीनों साथ में बैठकर चाय पिया करते थे और किसी विषय पर चर्चा भी कर लेते थे तो वह भी हमारे साथ बैठ गई और मुझसे कहा - राव साहब ने मेरे कहने पर तुम्हें बुलाया है ।

मैं सोच में पड़ गया कि माताजी को मुझसे क्या काम हो गया ? क्योंकि वह तो स्वयं धर्म परायण महिला हैं । उनके साथ कुछ गड़बड़ होने की संभावना नहीं थी । तांत्रिक प्रयोग वाली बात राव साहब ने की थी तो वह किसके लिए की थी ?
मैं यही सोचता हुआ बैठा था .... तभी माताजी ने कहा - मेरा एक रिश्ते में भतीजी दामाद है..... वह एक मछुआरा है । कुछ साल पहले अचानक उसने न जाने ऐसा कौन सा काम चालू किया जिसकी वजह से वह लाखों में खेलने लगा और धीरे-धीरे उसने काफी तरक्की कर ली । लेकिन पिछले 6 महीने से उसको

बहुत सारी समस्याएं आ रही हैं । उसी के विषय में बात करने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है ।

उन्होंने जो बातें मुझे बताइ, उससे कुछ खास स्पष्ट नहीं हुआ था !
मछुआरे के लाखों से खेलने की बात मुझे थोड़ी सी संदिग्ध लगी .....
जैसा कि सामान्य मानवीय मानसिकता है उसके हिसाब से सबसे पहले मैंने इसमें किसी प्रकार की गड़बड़ होने की संभावना के विषय में विचार किया । मुझे लगा कहीं यह बंदा ड्रग्स का धंधा तो नहीं करता है ?
क्योंकि वही एक ऐसा धंधा है जिसमें अचानक से पैसे मिलने की संभावना होती है .....
हां ! फस जाने पर लंबे समय तक जेल में रहना भी पड़ता है.....

दामाद बाबू

मेरे मन में यही सब विचार घूम रहे थे, जब कमरे के अंदर से एक गहरे काले रंग का युवक जो लगभग 30-32 वर्ष की अवस्था का रहा होगा वह बाहर निकल कर आता हुआ दिखाई दिया ।

उसने बढ़िया कपड़े पहने हुए थे !

हाथ में सोने की ब्रेसलेट और गले में मोटा सोने का चेन दिखाई दे रहा था !!

जो उसके आर्थिक रूप से संपन्न होने का एडवर्टाइजमेंट था ।

सोने की चमक काले रंग के ऊपर बहुत ज्यादा उभरती है.....

इसलिए सोने के आभूषण वाले शोरूम में भी जो पुतला बनाया जाता है वह काले रंग का होता है जब इस पर रोशनी पड़ती है तो सोने की चमक और बढ़ जाती है .....

कुछ-कुछ वैसा ही इस मामले में भी हो रहा था ।

इसलिए उसके शरीर पर वह ब्रेसलेट और माला दोनों बहुत खूबसूरत लग रही थी ।

पास आकर उसने मुझे प्रणाम किया ।

माताजी ने उससे मेरा परिचय कराया और कहा कि यही मेरा भतीजी दामाद है इसका नाम मुथु है ।
मैंने भी उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया और सारी बात को विस्तार से बताने के लिए कहा ।
वह बोला - अगर आप मेरे कमरे में चलोगे तो मुझे बताने में कम संकोच होगा ।

यह मुझे थोड़ा अजीब सा लगा.....
क्योंकि मैं तो राव साहब के बुलावे पर आया था.....
तो उनके सामने से अचानक इस प्रकार से उठकर जाना शायद उनको भी अच्छा ना लगे ऐसा सोच कर मैंने उनकी तरफ देखा.....
उन्होंने सहमति में सिर हिलाते हुए जाने का इशारा किया तो मैं मुथु के साथ चल पड़ा.....

कमरे में पहुंचने के बाद उसने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया और मुझे एक कुर्सी पर बिठाकर पास में दूसरी खुशी खींच कर बैठ गया और बोलने लगा.....

मेरा नाम मुथुस्वामी है और मुझे लोग मुथू के नाम से जानते हैं । मैं आपको अपनी कहानी शुरु से बताता हूं ।

इतना कह कर उसने बताना चालू किया आगे की बात उसी के शब्दों में .....

मैं आंध्रप्रदेश के श्रीकाकुलम के पास मछुआरों के एक गाँव मे पैदा हुआ । यह गाँव समुद्र तट के पास स्थित है । नाम है मंगलपेट्ट .....

जैसा कि आप जानते हैं समुद्र का तट जिसे बीच भी कहा जाता है..... वह बड़ा सुंदर और आकर्षक होता है । जहां सैलानी बड़े उत्साह के साथ जाना पसंद करते हैं ।

समुद्र में लहरें उठती है और वे तेजी से किनारों की ओर बढ़ती है और किनारे तक पहुंचते-पहुंचते शांत हो जाती है और मध्यम गति में आकर जब हमारे पाँव से टकराती है तो वह एहसास बड़ा सुखद होता है ।

दरअसल हम स्वयं पंच तत्वों के मेल से बने हुए हैं जिसमें से एक तत्व जल भी है । अलग-अलग लोगों में अलग-अलग तत्वों के प्रति आकर्षण ज्यादा होता है ।

यह उनके अंदर स्थित तत्वों के प्रबल होने या दुर्बल होने के हिसाब से तय होता है ।

कई लोग ऐसे होते हैं जिनको पानी बहुत ज्यादा पसंद होता है .....

ऐसे लोग पानी के तालाब, झील, समुद्र आदि के करीब जाना या पानी में पड़े रहना बहुत ज्यादा पसंद करते हैं ..... और प्रकृति उन्हें ऐसे अवसर प्रदान करती रहती है .....

अस्तु ...

मुथू आगे बोला - मैं मंगलपेट में पैदा हुआ । वह एक मछुआरों का गांव है । उस गांव में हमारी आबादी लगभग डेढ़ सौ या दो सौ लोगों की रही होगी । वहां समुद्र तट पर हमारी झोपड़िया बनी हुई थी ।

आप जानते ही होंगे समुद्र की लहरें कभी भी विकराल रूप धारण कर लेती है । समुद्र तट पर हवाएं भी कभी-कभी अपना तांडव मचा देती है । इसलिए समुद्र तट पर रहने वाले लोग हर प्रकार की स्थिति के लिए तैयार रहते हैं । हम लोग भी इसके लिए तैयार करते थे ।

समुद्र को मछुआरे अपनी मां मानते हैं, अपना देवता मानते हैं, अपना सब कुछ मानते हैं !

समुद्र के ऊपर उनकी अगाध श्रद्धा और विश्वास होता है !
मछुआरों की बस्ती में छोटे-छोटे बच्चे..... जिन्हें कपड़े पहनने का होश भी नहीं होता ..... वह नंगी पुंगी अवस्था में ही लहरों पर लोटते हुए आपको दिखाई दे जाएंगे ।
ये बच्चे किसी मछली की तरह समुद्र की लहरों पर तैरते हुए .... खिलवाड़ करते दिखाई दे जाएंगे ।
जिन्हें देखकर आपको ऐसा लगेगा कि वह शायद डूब जाएंगे ....
लेकिन.....
जाती हुई लहर के साथ वे समुद्र में चले जाते हैं और वापस आती हुई लहर के साथ किनारे आकर फिर अपने खेल में लग जाते हैं । यह उनका रोज का काम है.....

मेरा जीवन भी वैसे ही व्यतीत हो रहा था । नाव में चढ़कर मछली पकड़ कर लाना .... यह हमारा प्रमुख धंधा था ।
हमारे पास से पकड़ी हुई मछलियों को खरीदने के लिए कारोबारी आते थे और हमसे मछलियां खरीद कर ले जाते थे ।

उन पैसों से हमारा घर चलता था !
हमारी जरूरतें बहुत ज्यादा नहीं थी क्योंकि खाने के लिए मछली बहुतायत में थी और इन पैसों से चावल जैसी मूलभूत सुविधाएं भी आसानी से मिल जाती है । कुल मिलाकर जिंदगी अपने गति में चल रही थी और हम सब उसमें बड़े खुश थे । मेरी उम्र धीरे-धीरे बढ़ रही थी । मेरा सबसे खास दोस्त था कोंडय्या । हम दोनों लंगोटिया यार थे । दिन भर हम लोग साथ में रहते। मछली पकड़ने भी हम लोग साथ में जाते । तमाम तरह की प्रक्रिया हम साथ में ही करते थे .....
एक तरह से शोले के जय वीरू जैसी जोड़ी हमारी थी ।

मैं भगवान के ऊपर बहुत विश्वास करता था । साधु महात्माओं के ऊपर भी मेरी बड़ी श्रद्धा थी । यह सहज था । इसके विपरीत कोंडय्या को भगवान पर कोई खास विश्वास नहीं था, लेकिन गांव में होने वाले आयोजनों में सभी लोग शामिल होते थे तो वह भी शामिल हो जाता था । उसकी भक्ति इतनी ही थी । मैं लगभग रोज ही गांव में बने हुए मंदिर में जाता ..... माथा अवश्य टेकता था ।

मंदिर में देवी की एक अनगढ़ सी मूर्ति स्थापित थी और उनका नाम था चेपम्मा । तेलुगु में चेपा मछली को कहा जाता है । चेपम्मा का मतलब मछलियों को प्रदान करने वाली मां या हम मछुवारों का जीवन चलाने वाली मां .....
जिसके भरोसे हमारा जीवन चल रहा था ।
सनातन धर्म से जुड़े हुए तमाम लोगों में यह गुण पाया जाता है कि वह अपने कार्य क्षेत्र से जुड़ी हुई चीजों का सम्मान करते हैं !
उन चीजों में जो उन्हें रोजगार प्रदान करती है वह ईश्वर की उपस्थिति मानकर उसे प्रणाम अवश्य करते हैं !
उदाहरण के लिए अगर कोई ड्राइवर है तो वह गाड़ी में चढ़ने से पहले गाड़ी को प्रणाम करता है ।

मैं भी मछली से ही अपनी आजीविका कमा रहा था इसलिए उसे प्रदान करने वाली मछली की देवी अर्थात देवी चेपम्मा को मैं अपने आराध्य मानता था और उनकी कृपा से ही अपने जीवन को चलता हुआ स्वीकार करता था । यह विश्वास मुझे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हौसला प्रदान करता था । नाव जब गहरे समुद्र में

पहुंच गई और समय अचानक तूफान या तेज हवा चलने लग जाए तो नाव का संतुलन बिगड़ जाता है .....
ऐसी परिस्थिति में किनारे पर सुरक्षित पहुंच जाना एक कठिन कार्य होता है । जब भी ऐसी परिस्थितियां आती मैं माँ चेपम्मा को याद करता और कुछ ना कुछ मार्ग या चमत्कार जैसा कुछ घटित हो जाता और मैं लहरों के थपेड़ों से बचता हुआ वापस समुद्र तट पर पहुंच जाता.... वह भी सुरक्षित !
इस प्रकार की घटनाओं से मेरा देवी मां के ऊपर विश्वास बढ़ता चला गया ।
समय आगे बढ़ता गया मैं और कोंडय्या लगभग 18 साल के युवक हो चुके थे । हमारा काम ऐसा था जिसमें काफी कड़ी मेहनत लगती थी । इसलिए हम दोनों का शरीर गठा हुआ था जैसा कि मेहनतकश लोगों का होता है ।
मछुआरा होने की वजह से कह लीजिए या समुद्र के किनारे की गर्मी की वजह से कह लीजिए अधोवस्त्र के अलावा पुरुष ज्यादा वस्त्र धारण नहीं करते हैं क्योंकि कड़ी मेहनत और गर्मी की वजह से भरपूर पसीना

निकलता रहता है और खुले बदन रहने से वह पसीना हवा में सूख कर थोड़ी राहत प्रदान करता है ..... महिलाओं की वेशभूषा भी कुछ कुछ वैसी ही हुआ करती थी हां शारीरिक बनावट के कारण वे अपने शरीर का ऊपरी हिस्सा भी ढक कर रखती थी लेकिन उनके भी वस्तु छोटे हुआ करते थे । इसलिए स्त्रियों की देहा कृति बचपन से हमें दिखाई देती रही थी और उस पर कोई विशेष बात महसूस नहीं होती थी ।

अंग्रेज महिला की एम्बेरग्रिस खोज

एकदिन एक गोरी अंग्रेज महिला समुद्र तट पर कुछ खोजती हुई घूम रही थी । उसने एक फ्रॉक जैसी ड्रेस पहनी हुई थी जो मुश्किल से उसके घुटनों तक आ रही थी । मछुआरों की बस्ती में सभी गहरे रंग के होते हैं तो गोरा रंग हमारे लिए एक विशेष आकर्षण की वस्तु थी । उसे देखकर हम आंखें फाड़ कर उसकी त्वचा के गोरेपन को आंखों से महसूस करने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि हम लोगों की युवावस्था थी ..... उसे देखना हमारे लिए एक उत्तेजना से भरा अनुभव था । हम एक दूरी बनाकर उसका दीदार करते रहे वह भी इस बात को महसूस कर रही थी, लेकिन शायद इस प्रकार की घटनाओं की वह आदी हो चुकी थी । वह बिल्कुल गोरी चिट्टी थी और उसके बाल सुनहरे रंग के थे । जो उसके कंधों तक बिखरे हुए थे । उसके कंधे में काले रंग की चमड़े की एक थैली थी । वह समुद्र तट पर कुछ खोजती हुई घूम रही थी । वह किनारे पर पड़े हुए कुछ पत्थर जैसी चीजों को उठाती और फिर उन्हें देखने के बाद जमीन पर छोड़ देती । काफी देर तक हम लोग उसकी इस तरह की हरकतों को देखते

रहे । हमारा ध्यान उसकी हरकतों से ज्यादा उसके गोरे रंग पर था लेकिन उसकी अजीब सी हरकतें हमें उसके प्रति शंकालु भी बना रही थी । जब हम काफी देर तक उसका पीछा करते रहे तो उसने हाथ का इशारा करके हमें अपने पास बुलाया। हम जब उसके पास पहुंचे तो उसने हम दोनों से हाथ मिलाया । हम दोनों को ऐसा लगा जैसे किसी स्वर्ग की अप्सरा का स्पर्श हो गया हो । वह लगभग 35 40 वर्ष की महिला रही होगी । काफी भरे शरीर की महिला थी और दिखने में बेहद आकर्षक थी जैसा कि अंग्रेज महिलाएं होती हैं । वैसे भी भारत में गोरा होना सुंदर होने का पर्याय माना जाता है । इसी चक्कर में एक कंपनी कई वर्षों से भारत में अपनी क्रीम बेच रही है ..... खैर

टूटी फूटी तेलुगु में उसने हम दोनों का नाम पूछा । उसने अपना नाम बताया - शर्ली । शर्ली अमेरिका के टैक्सास नामक शहर में रहने वाली थी और वह भारत घूमने के लिए आई थी ऐसा उसने हमें बताया ।
मैंने झिझकते हुए उससे पूछ लिया कि वह क्या खोज रही है । जवाब में उसने अपने थैली में से एक डब्बा

निकाला । जिसमें अंदर एक मोटा सा कपड़ा था । जिसके अंदर कोई चीज लिपटी हुई थी । उसका आकार मुश्किल से एक छोटे आलू के आकार का रहा होगा ।

जैसे ही उसने उस डब्बे को खोला बदबू का एक भभका सा आया । यह बदबू हमारे लिए परिचित थी । यह मछली की गंदगी जैसी बदबू थी इसलिए हमें तो कुछ अजीब नहीं लगा क्योंकि हम रोज उसी के सानिध्य में रहते थे ।

लेकिन.....

आश्चर्य हुआ कि वह महिला इसे अपने बैग में रखकर क्यों घूम रही है ।

उस वस्तु को हमें दिखा कर उसने पूछा - क्या तुम इसे जानते हो ?

हम दोनों ने सहमति में सिर हिलाया और बोले - यह तो मछली की गंद लग रही है ।

उसने पूछा - क्या तुमने इसे कहीं देखा है ?

मैंने कहा - कई बार समुद्र में मछलियां पकड़ने जाते समय ऐसी चीज पानी में तैरती रहती है ।

यह सुनते ही उसकी आंखें चमक उठी !

लेकर सुबह 10 बजे तक मैं घर पर ही रहती हूं इस बीच में कभी भी तुम आ सकते हो ।

वह अपनी मोटरसाइकिल पर बिठाकर हम दोनों को अपने घर ले गई जो वहां से लगभग 2 किलोमीटर दूर था । बाइक पर उससे चिपक कर बैठने की वजह से मैं बहुत ज्यादा उत्तेजित हो गया था । भारतीय पुरुषों की मानसिकता होती है कि अंग्रेज महिलाएं बड़ी सहजता से किसी भी पुरुष के साथ संबंध बना लेती है और मुझे भी वैसा ही लगता था । उसके घर जाने से वैसी संभावनाएं मिलेंगी इस प्रकार की कल्पनाएं करता हुआ मैं उसके पीछे बैठा हुआ था । समुद्र के किनारे उसका घर एक ऐसी जगह पर बना हुआ था जहां से समुद्र का तट बिल्कुल सामने दिखाई देता था। वहां वैसे चार घर बने हुए थे उसमें से तीसरे नंबर का घर उसका था । घर के अंदर पहुंचने के बाद उसने हम दोनों को दो ग्लास में डाल कर बीयर ऑफर की । मुझे लगा इसके बाद आगे कुछ होगा लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ । उसने घर दिखाने के बाद वापस अपनी बाइक पर बिठा कर हमें गाँव मे छोड़ दिया.....

यह मेरे लिए कुछ कुछ स्वप्न भंग जैसा था, क्योंकि मैंने मन ही मन बहुत कुछ कर लिया था, जैसा कि पुरुष किसी स्त्री को देखकर करते हैं.....

काफी देर तक हम दोनों उसी के विषय में चर्चा करते रहे.....

फिर हजार रुपए को हम दोनों ने आपस में बांट लिया। उस समय हमें उस चीज की असली कीमत पता नहीं थी। शर्ली ने एंबरग्रीस की जो कीमत हमें बताइ थी ..... वह उसकी वास्तविक कीमत से बहुत कम थी जो मुझे काफी दिनों के बाद पता चला। उसने जो उपयोग बताया था वह भी गलत था।

हमें उस चीज के पैसे मिलने वाले थे। इसके लिए अलग से हमको कुछ करने की जरूरत नहीं थी। मछली पकड़ने के दौरान कई बार इस प्रकार की चीजें दिखाई दी जाती है। अगर वह दिखती तो उसे शर्ली के पास पहुंचाना था और पैसे ले लेने थे। यह हमारे लिए मछली पकड़ने के जैसा ही एक दूसरा काम था ..... इस प्रकार से हम लोगों की एंबरग्रीस को खोजने की यात्रा प्रारंभ हो गई।

मछली की गंद का इतना महंगा बिकना मेरे लिए भी आश्चर्य की बात थी तो मैंने मुथू को पूछा - वास्तव मे एम्बरग्रिस क्या है और यह किस काम आता है ?
मुथू बोला - एम्बरग्रीस व्हेल की आंतों से निकलने वाला पदार्थ है । जो उसकी आत में एक रक्षा परत की तरह काम करता है । यह व्हेल के शरीर के अंदर उसकी रक्षा के लिए पैदा होता है । वह कई प्रकार के समुद्री जीवो को खाती है । जिनमें से कई जीवो की खाल और खोल दोनों कड़े होते हैं । जिससे उसकी आंतों को नुकसान पहुंच सकता है । इसमें से एक जंतु है जिसका नाम स्क्विड होता है ।

इसकी चोंच धारदार होती है और वह अंतड़ियों को नुकसान पहुंचा सकती है, जिससे व्हेल के जीवन को खतरा हो सकता है । प्रकृति की तरफ से इस प्रकार के भोजन को पचा लेने की क्षमता व्हेल को दी गई है और वह भी विशेष रूप से एक प्रजाति की व्हेल को..... जो स्पर्म व्हेल के नाम से जानी जाती है ।

आम तौर पर व्हेल समुद्र तट से काफी दूर गहरे समुद्र में ही रहती हैं । वहीं पर इनके शरीर से यह बाहर

मछली की गंद का इतना महंगा बिकना मेरे लिए भी आश्चर्य की बात थी तो मैंने मुथू को पूछा - वास्तव मे एम्बरग्रिस क्या है और यह किस काम आता है ?
मुथू बोला - एम्बरग्रीस व्हेल की आंतों से निकलने वाला पदार्थ है । जो उसकी आत में एक रक्षा परत की तरह काम करता है । यह व्हेल के शरीर के अंदर उसकी रक्षा के लिए पैदा होता है । वह कई प्रकार के समुद्री जीवो को खाती है । जिनमें से कई जीवो की खाल और खोल दोनों कड़े होते हैं । जिससे उसकी आंतों को नुकसान पहुंच सकता है । इसमें से एक जंतु है जिसका नाम स्क्विड होता है ।

इसकी चोंच धारदार होती है और वह अंतड़ियों को नुकसान पहुंचा सकती है, जिससे व्हेल के जीवन को खतरा हो सकता है । प्रकृति की तरफ से इस प्रकार के भोजन को पचा लेने की क्षमता व्हेल को दी गई है और वह भी विशेष रूप से एक प्रजाति की व्हेल को..... जो स्पर्म व्हेल के नाम से जानी जाती है ।

आम तौर पर व्हेल समुद्र तट से काफी दूर गहरे समुद्र में ही रहती हैं । वहीं पर इनके शरीर से यह बाहर

निकलता रहता है । यह जब स्वाभाविक रूप से निकलता है तो इसका आकार छोटा होता है । जब शरीर में इसकी मात्रा ज्यादा हो जाती है तो उसे बाहर निकलना मुश्किल होता है । इसलिए मछली उल्टी के माध्यम से इसे बाहर निकाल देती है, जो आकार में बड़े होते हैं । कई बार यह 20-20 किलो के भी हो सकते हैं । उनके शरीर से निकले इस पदार्थ को समुद्र तट तक आने में कई साल लग जाते हैं । सूरज की रोशनी और नमकीन पानी के संपर्क के कारण यह पत्थर जैसा चिकना और भूरा गठान जैसा हो जाता है, जो मोम जैसा महसूस होता है ।

इसे सबसे ज्यादा इत्र के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है और इस वजह से काफी कीमती होता है। इसके अंदर अंबरीन नाम का एक पदार्थ पाया जाता है .... जो अगर इत्र के साथ मिलाया जाए तो इसकी वजह से इत्र की सुगंध काफी समय तक बनी रहती है । इस प्रकार के इत्र की कीमत बहुत ज्यादा होती है जो एक बार लगाने के बाद काफी समय तक अपनी खुशबू बिखेरते रहते हैं । आमतौर पर जो इत्र इस्तेमाल होते हैं उनकी खुशबू कुछ समय के बाद खत्म हो जाती है लेकिन जिन

महंगे इत्र में अंबरीन का इस्तेमाल होता है वह काफी समय तक अपनी खुशबू बिखेरते रहते हैं .....
इसी वजह से इसकी कीमत बहुत ज्यादा होती है .....
लगभग एक करोड़ रुपए प्रति किलो तक .....
इसी वजह से इसे "तैरता सोना" भी कहते हैं ।

मछली के गंद की कीमत एक करोड़ रुपए प्रति किलो सुनकर मैं हैरान रह गया.....
वास्तव में यह दुनिया अजीबोगरीब चीजों से भरी हुई है ।
मैंने उससे पूछा - तो क्या इसका दवाइयों में इस्तेमाल होने वाली बात शर्ली ने झूठ मुठ कह दी थी ?
मुथु - हां उसकी बात लगभग झूठी थी । एम्बरग्रीस ज्यादातर इत्र और दूसरे सुगंधित उत्पाद बनाने में इस्तेमाल किया जाता है । इसके बारे में प्राचीन काल से ही लोगों को पता है । वर्तमान समय में इस से बना हुआ इत्र कई देशों में बिकता है । खासतौर से अरब देशों में इसकी बहुत डिमांड है क्योंकि वह इत्र का इस्तेमाल बहुत ज्यादा करते हैं ।
मैं - अच्छा फिर क्या हुआ ?

मुथु बोला - शर्ली से मिलने के लगभग दो हफ्ते के बाद हम लोगों को एक वैसा ही छोटा टुकड़ा मिला और हम उसे लेकर रात के लगभग 8:30 बजे शर्ली के घर पहुंचे । उसने वह टुकड़ा ले लिया और एक एक बियर हमें पीने को दी । साथ ही खाने के लिए भी ऑफर किया जिसे हम लोगों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।
इस बार शर्लि ने हम दोनों को एक-एक हजार रुपए दे दिए थे और कहा - पिछली बार जो पैसे दिए थे उसको तुम ऐसे ही रख लो । यह दो हजार रुपये अभी जो तुम लेकर आए हो उसके दे रही हूँ । अगली बार जब और लेकर आओगे तो उसका साइज देखकर मैं तुमको और पैसे दूंगी ।
यह हमारे लिए डबल धमाका वाली बात थी । मुफ्त का खाना और दारू उड़ाने के बाद मिले हुए पैसों को लेकर हम वापस घर आ गए ।

इस प्रकार से हमारी खोज चलती रही और महीने में एकाध बार हमें इस प्रकार से पडा हुआ एम्बरग्रिस मिल जाता था ....

पैसा जब आता है तो धीरे-धीरे दोस्ती और रिश्तेदारी दोनों में कभी कभी दरार आनी चालू हो जाती है !
हम दोनों के साथ भी वैसा ही हुआ ।
कोंडय्या ने मेरे साथ जाने के अलावा अलग से नाव लेकर एमबरग्रीस की तलाश में घूमना चालू कर दिया था और कई बार उसे इसके टुकड़े तैरते हुए मिल जाते थे और शर्ली के पास वह अकेले चला जाता था ।
शर्ली चतुर थी ।
उसने मुझे कभी नहीं बताया कि कोंडय्या उसको अलग से लाकर भी एंबरग्रीस देता है ...
एक दिन मुझे इस बात का पता चल गया और मेरा शर्ली और कोंडय्या दोनों से झगड़ा हो गया ।
उसके बाद मैंने शर्ली के पास एंबरग्रीस देना बंद कर दिया .....
अगर कभी समुद्र में मुझे यह दिखाई देता तो मैं उसे चुपके से उठाकर ले आता और अपने झोपड़ी के अंदर छुपा कर रख देता था । इसके लिए मैंने झोपड़ी के अंदर चूल्हे के नीचे वाली जमीन में एक एलुमिनियम की मटकी गाड़ रखी थी । उसी में मैं इसे जमा करता जा रहा

था । देवी चैपम्मा की कृपा से महीने में एकाध बार मुझे ऐसे टुकड़े मिल जाया करते थे .....

उस घटना के बाद कोंडय्या और मेरी दोस्ती लगभग नहीं के बराबर रह गई थी .....

शर्ली ने कोंडय्या को अपना खास आदमी बना लिया था और अब वह उसके साथ ही रहने लगा था । इस बात से मुझे थोड़ी तकलीफ जरूर होती थी लेकिन उन दोनों ने मुझसे धोखा किया था इस वजह से मैं उधर जाता भी नहीं था ।

पता नहीं किस प्रेरणा से मैंने एंबरग्रीस भी शर्ली को देने की बजाय अपनी झोपड़ी में छुपाना चालू कर दिया था ....

बाकी सारे काम उसी प्रकार से चल रहे थे । कोंडय्या के पास काफी पैसे आ गए थे । अब उस का रहन सहन और कपड़ों का ढंग भी बदलने लगा था । कुछ दिनों के बाद शर्लिन ने उसे एक मोटर बोट खरीद कर दे दी । अब कोंडय्या शर्ली के साथ उसमें घूम घूम कर एमबरग्रिस की तलाश करता था .....

उसे देख कर मुझे थोड़ी जलन होती थी !

लेकिन मेरे पास शांत रहने के अलावा कोई रास्ता नहीं था .....

चेपम्मा और अक्षय पात्र

एक दिन एक रहस्यमय घटना घटी ।

मैं गहरी नींद में सो रहा था और सपने में मुझे एक विचित्र सा दृश्य दिखाई दिया.....

चेपम्मा मां के मंदिर के पास मैं खड़ा हुआ था और अचानक चेपम्मा का विग्रह एक मत्स्यकन्या में परिवर्तित हो गया .....

जिसका ऊपर का भाग स्त्री का था !

और नीचे का भाग मछली का था !!

उसे देखकर मैंने हाथ जोड़ लिए ।

वह मुस्कुराई और उसने कहा - कल तुम मंदा टापू पर आना । वहां मेरा एक मंदिर बना हुआ है । उस मंदिर के दाहिनी ओर एक त्रिशूल के आकार का पत्थर पड़ा है !

उसे उठाना !

उसके नीचे एक काले रंग का गोल बर्तन तुम्हें मिलेगा !!

वह अक्षय पात्र है !

वह मेरा आशीर्वाद है !!

उसे तुम हमेशा संभाल कर रखना .....

उसके बारे में किसी को मत बताना ।

। अगले दिन सवेरे नित्य कर्मों से निवृत्त होकर मैं नाव लेकर निकल पड़ा ।

लगभग डेढ़ घंटे के बाद उस टापू तक पहुंच गया । नाव को किनारे पर बांधकर मैं आगे बढ़ा । उस समय उस टापू पर कोई नहीं था ।

मैं मंदिर के पास पहुंचा और त्रिशूल के आकार के पत्थर की तलाश करने लगा .....

पूरे मंदिर का मैंने एक चक्कर लगा लिया !

मुझे वह पत्थर नहीं मिला !

मैं निराश होकर एक पत्थर पर बैठ गया । तभी वही रहस्यमय मत्स्यकन्या का स्वरूप एक बिंब के जैसे मेरे सामने आया और उसने मुझे साथ चलने का इशारा किया .....

मैं उसके पीछे पीछे चलने लगा ।

मंदिर के दाहिनी तरफ लगभग 50 मीटर चलने के बाद एक छोटा सा चौकोन पत्थर दिखाई दिया । उस पत्थर के ऊपर त्रिशूल की आकृति उकेरी हुई थी । वहां पहुंचने के बाद मत्स्यकन्या का बिम्ब गायब हो गया । मैंने मन ही मन उनको प्रणाम किया और उस पत्थर को उठाने की कोशिश की ....

। अगले दिन सवेरे नित्य कर्मों से निवृत्त होकर मैं नाव लेकर निकल पड़ा ।

लगभग डेढ़ घंटे के बाद उस टापू तक पहुंच गया । नाव को किनारे पर बांधकर मैं आगे बढ़ा । उस समय उस टापू पर कोई नहीं था ।

मैं मंदिर के पास पहुंचा और त्रिशूल के आकार के पत्थर की तलाश करने लगा .....

पूरे मंदिर का मैंने एक चक्कर लगा लिया !

मुझे वह पत्थर नहीं मिला !

मैं निराश होकर एक पत्थर पर बैठ गया । तभी वही रहस्यमय मत्स्यकन्या का स्वरूप एक बिंब के जैसे मेरे सामने आया और उसने मुझे साथ चलने का इशारा किया .....

मैं उसके पीछे पीछे चलने लगा ।

मंदिर के दाहिनी तरफ लगभग 50 मीटर चलने के बाद एक छोटा सा चौकोन पत्थर दिखाई दिया । उस पत्थर के ऊपर त्रिशूल की आकृति उकेरी हुई थी । वहां पहुंचने के बाद मत्स्यकन्या का बिम्ब गायब हो गया ।

मैंने मन ही मन उनको प्रणाम किया और उस पत्थर को उठाने की कोशिश की ....

वह काफी वजनी था ...

जो हाथ से ही नहीं उठ पा रहा था ।

फिर मैंने लकड़ी का इंतजाम किया और जुगाड़ के द्वारा उसे थोड़ा सा उठाने में कामयाब हो गया !

जैसे ही मैंने उसे उठाया ....

उसके नीचे से छोटे-छोटे बहुत सारे सर्प रेंगते हुए बाहर आ गए .....

उन्हें देख कर मैं डर कर थोड़ा पीछे हट गया .....

लेकिन वे सर्प मेरी तरफ ना आकर मंदिर की ओर आगे बढ़ते चले गए ।

उनके जाते ही मेरी सांस में सांस आई और मैंने फिर उस पत्थर को लकड़ी की मदद से उठाकर पलट दिया !

जैसे ही मैंने उसे पलटा !

पत्थर बीच से दो टुकड़ों में टूट गया .....

उसके अंदर फंसा हुआ एक काले रंग का छोटा सा पात्र नजर आया । जो लगभग तीन या साढ़े तीन इंच के व्यास का रहा होगा । वह काले रंग की किसी लोहे जैसी धातु का बना हुआ था । मैंने एक दूसरे पत्थर

से ठोककर उसे वहां से अलग कर लिया और निकाल लिया .....

मेरी समझ में नहीं आया कि यह उस पत्थर के अंदर कैसे आया होगा ?

लेकिन जिस प्रकार का निर्देश मुझे स्वप्न में मिला था ठीक उसी प्रकार से उस पात्र के मिलने से मेरा विश्वास उस पात्र पर और देवी पर और ज्यादा बढ़ गया था ।

जैसे ही उस पात्र को मैंने अपने दोनों हाथों में पकड़ा मुझे एक जोर का बिजली का झटका जैसा लगा और मैं वहीं पर गिर गया .....

ऐसा लगा जैसे कोई शक्ति उस पात्र मे से निकलकर मुझमे समा गयी हो ।

थोड़ी देर मे वह ऊर्जा का प्रवाह खतम हो गया ....

तब मैंने उस त्रिशूल को प्रणाम किया और वापस आते आते देवी के मंदिर में माथा टेककर उस छोटे काले बर्तन को अपने हाथ में लेकर नाव में चढ़ा और वापस अपनी बस्ती में आ गया ।

यह मेरे जीवन में घटने वाली सबसे अजीब घटना थी ।

इसके बाद मैं वापस अपने रोज के जीवन में रम गया । उस काले बर्तन को मैंने बड़ी सावधानी से छुपा कर रखा था ....

बीच बीच मे उसे निकाल कर दर्शन कर लेता था । कभी-कभी उसे छूने से मुझे बिजली का झटका जैसा लगता था, जिससे मैं यह समझ गया था कि वह कोई चमत्कारी बर्तन है । इसलिए मैं उसका बड़ा सम्मान करता था और काफी संभाल कर रखता था .....

पद्मलक्ष्मी

इस घटना के पंद्रह दिन के बाद एक लड़की जो काफी पढ़ी-लिखी लगती थी .... समुद्र तट पर शर्ली के जैसे घूमती हुई मुझे नजर आई....

मुझे लगा कि यह भी उसी की तलाश में होगी ।

शर्ली के द्वारा धोखाधड़ी की बात के बाद मैं थोड़ा सतर्क हो गया था ।

दो-चार दिन जब वह लगातार वहां दिखी तो धीरे-धीरे हमारी जान पहचान हो गई और बातें भी होने लगी ।

उसका नाम पद्मा लक्ष्मी था ।

वह एक कॉलेज में पढ़ रही थी और वहीं पर उसे एंबरग्रीस के बारे में पता चला था.....

उसने बताया कि वह भी एंबरग्रीस की तलाश में है ।

सवधानीवश मैंने उसे नहीं बताया कि मेरे पास एंबरग्रीस रखा हुआ है .....

उसने वह सारी जानकारी दी.....

जिसके बारे में मुझे पहले से ही पता था ।

उसने यह भी बताया कि एंबरग्रीस जितने साल पुराना होता है उस हिसाब से इसकी कीमत बढ़ती जाती है .....

नया निकला हुआ एंबरग्रीस का मूल्य कम होता है । वह चार पाँच लाख रुपये किलो तक बिकता है .....

कई साल पुराना हो जाने पर समुद्र का पानी और धूप लगने की वजह से उसमें से हल्की हल्की खुशबू आने लगती है .....

ऐसा एंबरग्रीस अगर मिले तो उसकी कीमत लगभग 30 से 50 लाख रुपए प्रति किलो होती है ।

यह सुनकर मेरे होश उड़ गए .....

इसका मतलब जो एंबरग्रीस मैंने शर्ली को दिए थे वह चार पाँच लाख रुपये की कीमत के थे और उसने हमे उल्लू बनाकर बीस हजार में नक्की कर दिया था .....

अब कुछ नहीं हो सकता था.....

लेकिन.....

मेरी समझ में आ गया कि शर्ली कितनी बड़ी खिलाड़ी है.....

और उसने किस प्रकार से हमें बेवकूफ बनाया ।

जब पद्मलक्ष्मी से थोड़ी जान पहचान बढी तो मैंने अपने गुप्त भंडार में से..... यानि दबी हुई एलुमिनियम की मटकी में से एक टुकड़ा निकाला और उसे दिखाया ।

पद्मा लक्ष्मी ने अभी तक केवल एंबरग्रीस के बारे में सुना था .....
उसकी फोटो देखी थी.....
लेकिन वास्तव में उसे नहीं देखा था !
इसलिए मेरे हाथ में एंबरग्रीस देखकर वह भौचक्की रह गई और उसने मुझे गले लगा लिया .....
उसके गले लगाते ही मुझे अपने अंदर कुछ कुछ होने का एहसास होने लगा.....
और वहां से हम दोनों की दोस्ती, दोस्ती से थोड़ी सी आगे बढ़ने लगी .....
उस एंबरग्रीस को लेकर वह अपने दोस्त के पास दिखाने ले गई ।
वह मुझे भी अपने साथ ले गई ।
उसका दोस्त एक इत्र बनाने वाली कंपनी में काम करता था । उसने उस पत्थर का निरीक्षण किया और विभिन्न प्रकार से उसकी जांच परख करने के बाद बताया कि

वह ज्यादा पुराना नहीं है । इसलिए लगभग बीस लाख रुपए किलो में बिक जाएगा । उसकी कीमत उसके वजन के आधार पर उसने एक लाख अस्सी हजार बताइ । जिसमे से 10 प्रतिशत उसका कमीशन काटने के बाद मुझे एक लाख बांसठ हजार रुपये मिले.....
इतने सारे पैसे मैंने जिंदगी में पहली बार देखे थे .....
इसलिए मुझे समझ में नहीं आया कि मैं उसका क्या करूं ?

मैंने पद्मलक्ष्मी को अपनी समस्या बताइ । उसने बैंक में अकाउंट खोलने की सलाह दी । उस समय मेरे पास बैंक अकाउंट नहीं था । पद्मलक्ष्मी ने मेरा एकाउंट खुलवाया । मैंने पैसे लेने के लिए कहा तो उसने हजार रुपये लेकर बाकी सारे पैसे मेरे बैंक अकाउंट में जमा कर दिए ।
इस प्रकार से हमारा काम चल निकला .....
मेरी मटकी में उस समय तक उस प्रकार के लगभग 6 टुकड़े जमा हो चुके थे । उनको बेचकर लगभग पंद्रह लाख रुपए मुझे मिले । जिसमें से एक लाख मैंने

पद्मलक्ष्मी को दे दिए और बाकी मेरे बैंक के अकाउंट में जमा थे ।

पद्मलक्ष्मी ने मुझे सलाह दी कि मैं एक खेत या कोई जमीन खरीद लूँ ।

पद्मलक्ष्मी की सलाह पर दस लाख रुपये मे मैंने अपने गांव के पास 5 एकड़ जमीन खरीद ली । उसमे एक घर बनवाना चालू कर दिया .....

एक रात सोते समय मुझे ऐसा लगा कि पद्मलक्ष्मी के आने से मेरे जीवन में लगातार उन्नति हो रही है.....

हो सकता है यही मेरी जीवनसंगिनी हो ।

यही सोचते हुए मैं सो गया !

सपने में वही मत्स्य कन्या रूपी देवी मेरे सामने आई और उसने कहा - पद्मलक्ष्मी से विवाह कर लो और विलुप्त हो गई।

यह मेरे मन की बात थी जिसे सुनकर मैं बहुत खुश हुआ ।

अगले दिन मैं खुशी-खुशी पद्मलक्ष्मी से मिलने गया और उसे विवाह का प्रस्ताव दे दिया ।

पद्मलक्ष्मी तैयार हो गयी .... लेकिन दिक्कत यह थी कि वह एक ब्राह्मण परिवार से थी और मैं एक मछुआरा

अक्षय पात्र का चमत्कार

अक्षय पात्र का अस्तित्व काफी पुराना है ....

इस प्रकार के चमत्कारिक अक्षय पात्र प्राचीन काल मे ऋषि-मुनियों के पास हुआ करते थे । जिससे वे अपनी तथा असंख्य शिष्यों की आवश्यकता की पूर्ति करते थे ।

अक्षय दो शब्दों से मिलकर बना है :-

अ = नहीं , क्षय = नाश

इसका अर्थ जिसका कभी क्षय या नाश न हो।

ऐसा पात्र जिसमें रखी वस्तु समाप्त नहीं होती ।

सनातन धर्म के प्राचीन ग्रंथ महाभारत में अक्षय पात्र संबंधित एक कथा है।

द्यूत क्रीडा मे हारने के परिणाम स्वरूप वनवास मिलने के बाद पांचों पांडव द्रौपदी के साथ 12 वर्षों के लिए जंगल में चले गए ।

राज परिवार से होने के कारण वे लोगों को भोजन कराना अपनी ज़िम्मेदारी समझते थे । जंगल मे उनसे मिलने कई प्रकार के लोग आते । जिनमे सामान्य लोगों के अलावा कई बार साधु-संत भी होते थे । पांचों

पांडवों सहित द्रौपदी को यही चिंता रहती थी कि वे भोजन कैसे करें और उन अतिथियों के लिए भोजन कहां से आए? क्योंकि उनके पास उस समय इसकी कोई व्यवस्था नहीं थी । वे स्वयं वनवासी का जीवन व्यतीत कर रहे थे तो उनके पास अन्न की व्यवस्था कहां से होती ?

कथा है कि ऋषि धौम्य उन्हें सूर्य की आराधना करने के लिए कहते हैं। द्रौपदी स्वयं अग्नि से उत्पन्न हुई अग्नि पुत्री है सूर्य को अग्नि का स्रोत माना जाता है । द्रोपदी की आराधना से भगवान सूर्य प्रसन्न हो जाते हैं और प्रकट होकर उनसे वरदान मांगने के लिए कहते हैं, तब द्रोपदी अपनी आवश्यकता बताती है - हे प्रभु ! मैं अपने पास आने वाले साधु संतों और लोगों को भोजन कराने में असमर्थ हूं। क्योंकि वनवास में होने की वजह से मेरे पास अन्य की व्यवस्था नहीं है इसलिए मैं आपसे अन्न की अपेक्षा रखती हूं। आप ऐसी कोई युक्ति प्रदान करें जिससे मैं अपने पास आने वाले सभी लोगों को भोजन करवा सकूं ।

पांडवों सहित द्रौपदी को यही चिंता रहती थी कि वे भोजन कैसे करें और उन अतिथियों के लिए भोजन कहां से आए? क्योंकि उनके पास उस समय इसकी कोई व्यवस्था नहीं थी । वे स्वयं वनवासी का जीवन व्यतीत कर रहे थे तो उनके पास अन्न की व्यवस्था कहां से होती ?

कथा है कि ऋषि धौम्य उन्हें सूर्य की आराधना करने के लिए कहते हैं। द्रौपदी स्वयं अग्नि से उत्पन्न हुई अग्नि पुत्री है सूर्य को अग्नि का स्रोत माना जाता है । द्रोपदी की आराधना से भगवान सूर्य प्रसन्न हो जाते हैं और प्रकट होकर उनसे वरदान मांगने के लिए कहते हैं, तब द्रोपदी अपनी आवश्यकता बताती है - हे प्रभु ! मैं अपने पास आने वाले साधु संतों और लोगों को भोजन कराने में असमर्थ हूं। क्योंकि वनवास में होने की वजह से मेरे पास अन्य की व्यवस्था नहीं है इसलिए मैं आपसे अन्न की अपेक्षा रखती हूं। आप ऐसी कोई युक्ति प्रदान करें जिससे मैं अपने पास आने वाले सभी लोगों को भोजन करवा सकूं ।

धन्य किया है ठीक वैसे ही अपने शिष्यों सहित उनका आतिथ्य स्वीकार करें। किंतु मेरा निवेदन है कि आप उनके यहां द्रौपदी के भोजन कर लेने के पश्चात ही जाएं ताकि द्रौपदी को आप के भोजन की व्यवस्था करते समय भूख का कष्ट न हो।

दुर्योधन को यह मालूम था कि द्रौपदी के पास सूर्य भगवान के द्वारा दिया हुआ अक्षयपात्र था जिसमे बना हुआ भोजन द्रौपदी के भोजन ग्रहण करते ही समाप्त हो जाता था । इसी बात को ध्यान में रखते हुए उसने दुर्वासा मुनि से इस प्रकार का वचन ले लिया था । ताकि वे द्रौपदी के भोजन ग्रहण कर लेने के बाद वहां पर पहुंचे और पांडव भोजन की व्यवस्था न कर पाए और दुर्वासा ऋषि के श्राप का पात्र बन जाए । ऋषि दुर्वासा दुर्योधन को दिये गए वचनानुसार द्रौपदी के भोजन ग्रहण कर लेने के पश्चात मध्याह्न में अपने शिष्यों सहित युधिष्ठिर के पास पहुंचे ।

वे बोले– हम शिष्यों के साथ नदी पर स्नान करने जा रहे हैं, वापस आकर हम भोजन ग्रहण करेंगे । तुम भोजन तैयार रखना ।

धन्य किया है ठीक वैसे ही अपने शिष्यों सहित उनका आतिथ्य स्वीकार करें। किंतु मेरा निवेदन है कि आप उनके यहां द्रौपदी के भोजन कर लेने के पश्चात ही जाएं ताकि द्रौपदी को आप के भोजन की व्यवस्था करते समय भूख का कष्ट न हो।

दुर्योधन को यह मालूम था कि द्रौपदी के पास सूर्य भगवान के द्वारा दिया हुआ अक्षयपात्र था जिसमे बना हुआ भोजन द्रौपदी के भोजन ग्रहण करते ही समाप्त हो जाता था । इसी बात को ध्यान में रखते हुए उसने दुर्वासा मुनि से इस प्रकार का वचन ले लिया था । ताकि वे द्रौपदी के भोजन ग्रहण कर लेने के बाद वहां पर पहुंचे और पांडव भोजन की व्यवस्था न कर पाए और दुर्वासा ऋषि के श्राप का पात्र बन जाए । ऋषि दुर्वासा दुर्योधन को दिये गए वचनानुसार द्रौपदी के भोजन ग्रहण कर लेने के पश्चात मध्याह्न में अपने शिष्यों सहित युधिष्ठिर के पास पहुंचे ।

वे बोले– हम शिष्यों के साथ नदी पर स्नान करने जा रहे हैं, वापस आकर हम भोजन ग्रहण करेंगे । तुम भोजन तैयार रखना ।

अब द्रौपदी को बड़ी चिन्ता हुई और उसने इस विपदा के समय भगवान् श्री कृष्ण को याद किया । द्रौपदी की याचना सुन श्री कृष्ण वहां पहुंच कर बोले– मुझे भूख लगी है । कुछ खाने को दो ।

कहां तो द्रौपदी कृष्ण से दुर्वासा मुनि के भोजन की व्यवस्था की समस्या पर बात करना चाहती थी और यहां तो स्वयं कृष्ण उनसे भोजन मांग रहे थे ।
द्रौपदी संकोच के साथ बोली - हे कृष्ण ! आप को भोजन कराना तो मेरा सौभाग्य है, लेकिन मैं बहुत बड़े धर्म संकट में हूँ , क्योंकि मेरी कुटी में आज भोजन के लिए कुछ भी नहीं है ।
आगे कुछ बोलने से पहले ही कृष्ण ने सूर्य भगवान के द्वारा दिए गए अक्षय पात्र की ओर इशारा किया और कहा – अच्छा वह पात्र तो लाओ; उसमें कुछ होगा ही ।
द्रौपदी सकुचाते हुए खाली अक्षयपात्र ले आई । उस पात्र में चावल का एक दाना लगा था।
श्री कृष्ण ने उसी एक कण का भोग लगा कर तीनों लोकों को तृप्त कर दिया ....

कृष्ण ने भीम से कहा - ऋषि गणों को भोजन के लिए बुला लाओ ।

भीम उन्हे बुलाने नदी तट पर पहुंचे ....

मुनिगण जब स्नान करके बाहर निकले तो सभी को अपना पेट भरा हुआ महसूस होने लगा क्योंकि श्री कृष्ण की लीला से वे पहले ही तृप्त हो चुके थे ।

भीम के आग्रह करने पर उन्होंने भोजन करने से मना कर दिया। दुर्वासा ऋषि शिष्यों के साथ वहाँ से चले गए .....

श्री कृष्ण ने इस तरह महर्षि दुर्वासा के क्रोध से द्रोपदी की रक्षा की थी ।

वनवास मे पांडव उसी अक्षयपात्र के कारण राजा तुल्य जीवन बिताते रहे ।

खैर....

उस अक्षय पात्र के आने से मेरी उन्नति होती जा रही थी ....

नाव लेकर समुद्र में जाने का मेरा काम अब भी चालू था । लेकिन अब मुझे एम्बेरग्रिस नहीं मिलता था .... दो-तीन महीने तक मैंने कोशिश की लेकिन जब नहीं

कोंडय्या की वापसी

कोंडय्या मेरी तरक्की को देखकर परेशान था । उसने स्वयं बात करना बंद किया था इसलिए वह मुझसे कुछ पूछ भी नहीं सकता था । पूछता तो भी मैं उसे कुछ बताने वाला नहीं था .....

कोंडय्या को भी एमबरग्रीस मिलना बंद हो गया था । इसकी वजह से वह शर्ली के किसी काम का नहीं रह गया था । शर्लि ने उसे अपने घर से निकाल दिया । वह वापस मछुआरा बस्ती में रहने लगा था और वहाँ लोग उसका खूब मजाक उड़ाते ।

मछली की खरीदी बिक्री का मेरा काम चल निकला था । अब मेरे पास पांच एकड़ खेत भी था, जिसमें मेरी खेती भी चल रही थी । पत्नी पद्मलक्ष्मी गर्भवती थी, इसलिए वह मेरा साथ नहीं दे पाती थी । ऐसी परिस्थिति मे मुझे एक सहायक की जरूरत थी और मैं इस के बारे मे सोच रहा था ।

एक दिन कोंडय्या मेरे पास आया और बोला - मुझे माफ कर दो । गांव में लोगों ने चिढ़ा चिढ़ा कर मेरा

जीना हराम कर दिया है । अगर तुम अपने पास काम पर रख लो तो मेरे लिए जिंदगी आसान हो जाएगी ....

वह मेरा पुराना मित्र था ... वह भी लंगोटिया मित्र !

तो मुझे उस पर तरस आ गया !

मैंने उसे खेत में दूसरे हिस्से में बने हुए झोपड़ी में रहने की अनुमति दे दी ।

अब वह वही रहता और खेत की देखभाल करता । इस तरह से मैं उस जिम्मेदारी से थोड़ा फ्री हो गया था ।

हां ! यह बात जरूर थी कि मैं उसके ऊपर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करता था और बराबर उसके ऊपर नजर बनाए रखता था .....

वह अपनी गलती पर शर्मिंदा था और पूरे मन से काम करता था .....

धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता गया ।

स्त्री शक्ति और उसका प्रभाव

पद्मलक्ष्मी एक सुंदर युवती थी ....

और सुघढ़ पत्नी भी !

उसके मेरे जीवन में आने से मैं एक तरह से संपूर्ण हो गया .....

बहुत सारे लोग मेरे से ईर्ष्या रखते थे क्योंकि मैं अचानक जमीन से उठकर काफी ऊंचाई पर आ चुका था ।

इन जलने वालों में एक कोंडय्या भी था ।

हम दोनों साथ साथ खेले और बड़े हुए थे ....

जब अंबरग्रीस की बात आई तब भी हम लोग साथ में ही उसे खोजने के लिए निकले थे .....

समय के साथ वह शर्ली के चपेट में आ गया और फिर जो हुआ वह आप जानते ही हैं ।

इसके विपरीत भगवती की कृपा से मेरे जीवन में पद्मलक्ष्मी आई ....

मुझे तो ऐसा लगता है कि साक्षात महालक्ष्मी ने मेरे जीवन में कदम रखा !

जब भी मैं उसके साथ होता मुझे बहुत सहज और सरल अनुभूति होती .....

उसने न सिर्फ मुझे एंबर ग्रीस के सही पैसे दिलवाए बल्कि उन पैसों का सही इस्तेमाल करना भी सिखाया .... क्योंकि मैं ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था और मछुआरे के दिमाग के हिसाब से ही मेरा भी दिमाग था । लेकिन.....

वह पढ़ी लिखी थी !

बुद्धिमान थी !!

और चतुर भी थी !!!

उसे दुनियादारी की समझ मुझसे ज्यादा थी ।

इन सब कारणों से मैं धीरे-धीरे अपने पैसे का सदुपयोग करने के कारण ऊंचाइयां चढ़ता चला गया ।

आमतौर पर ऐसा होता है कि जब आपके पास अचानक से पैसे आ जाए तो आप उसका नियंत्रण नहीं कर पाते । इफरात पैसे मिलने पर अयाशियां चालू हो जाती हैं, जब अयाशियां चालू हो जाती है तो फिर पैसे नाली में बहने चालू हो जाते हैं । कुछ दिन के बाद ऐसी स्थिति आती है जब वापस आदमी अपनी पुरानी औकात पर आ जाता है । यह अधिकांश लोगों की नियति होती है जिनको अचानक से पैसे मिलते हैं ।

लेकिन.....

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके पास पैसे आते हैं तो उसे नियंत्रण देने के लिए कोई न कोई मातृशक्ति उसके साथ मौजूद होती है .....

या कहीं ना कहीं से आ जाती है ।

तब वह उस पैसे को स्थिरता प्रदान करती है और साथ ही उस में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है ।

ऐसे उदाहरण आपने भी अपने आसपास देखे होंगे । मैंने ऐसा एक उदाहरण देखा है जिसमें एक व्यक्ति ने बस का बिजनेस प्रारंभ किया । तब उसके पास केवल एक बस थी । जिसे वह खुद चलाता था ।

अचानक उसे एक महिला मिल गई जो उसके लिए खाना पकाने से लेकर घर के बाकी सारे कामकाज करती थी ।

समय आगे बढ़ता गया और उसकी धीरे-धीरे प्रगति होने लगी !

जब से वह महिला उसके घर में आई तब से उसका धंधा धीरे-धीरे बढ़ने लगा !

इस बात को वह व्यक्ति समझ गया और उसने कालांतर में उसी स्त्री से विवाह भी कर लिया !!

आज उसी स्त्री के नाम से उसकी ट्रेवल्स की एजेंसी चलती है और कम से कम चालीस पचास बस उस एजेंसी के अंतर्गत भारत के विभिन्न भागों में अलग-अलग रूट पर चलती है । यहां तक कि उन बसों में स्लीपर सुविधा वाली बड़ी-बड़ी बसें भी शामिल है जिन्हें वोल्वो बस भी कहा जाता है .....

यह एक रहस्य है प्रकृति का....

जिसको समझना हर किसी के बस की बात नहीं होती , लेकिन इस प्रकार की घटनाएं आपको अपने आसपास कई जगहों पर होती हुई दिखाई दे जाएंगी ।

मातृशक्ति से मेरा तात्पर्य स्त्री से है.....

जो किसी भी स्वरूप में हो सकती है !

कई बार वह माता के रूप में होती है !

कई बार वह प्रेमिका के रूप में होती है !

कई बार वह पत्नी के रूप में होती है !!

कई बार वह बेटी या बहन के रूप में होती है !!!

और.....

कई बार ऐसे स्वरूप में होती है जिसको कोई नाम नहीं दिया जा सकता .....

उस स्वरूप में भी जब वह आती है तो जीवन को एक नया आयाम देती है .....
जीवन में नए-नए सोपान चढ़ने का अवसर प्रदान करती है ।

इस विषय पर मैं एक और उदाहरण जरूर देना चाहूंगा ।
आप सब स्वामी विवेकानंद को जानते हैं.....
अगर आप उनकी जीवनी पढ़ें तो आप इस मातृशक्ति के रहस्य को अवश्य समझ जाएंगे ।
जब वे अमेरिका पहुंचे थे तो एक ऐसी स्थिति आई थी .....
जब उनके पास के सारे पैसे खत्म हो चुके थे !
वह निराश हताश अवस्था में बैठे थे !!
कि .... आगे क्या होगा ?
उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करना है ?
ऐसी स्थिति में.....
उनके पास एक महिला आई .....
उसने शिकागो के धर्म सम्मेलन में शामिल होने से लेकर आगे के सारे कार्यक्रमों में उनको सहयोग किया .....
प्रेरित किया.....

और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया .....

जिसकी बदौलत उन्होने शिकागो सम्मेलन का वह ऐतिहासिक भाषण दिया जिसके बारे में हम आज यह कहते हैं कि उन्होंने सनातन धर्म का डंका पूरे विश्व के सामने बजाया .....

सनातन धर्म का सिद्धांत ही यही है कि.....

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता !

अर्थात जहां पर स्त्री शक्तियों की पूजा होती है, या उनका सम्मान होता है, वहीं पर देवताओं का वास भी होता है ।

गृहस्थ जीवन में बहुत सारे पुरुष जो नौकरी करते हैं या पैसे कमाते हैं .....

वह ऐसा समझते हैं कि उनकी पत्नियां कुछ नहीं करती.....

खाली घर में बैठकर रोटी तोड़ती रहती हैं ।

इसके साथ-साथ उनको ऐसा भी लगता है कि उनकी पत्नी निरी बेवकूफ है .....

उसे दुनियादारी की कोई समझ नहीं है....

कई पति अपनी पत्नियों को पत्नी बनने के लायक नहीं समझते हैं या दुनिया की सबसे बेकार पत्नी समझते हैं ।
इसके साथ साथ एक और जो समस्या सामने आती है वह है विवाह के बाद नई आई हुई वधू का ससुराल वालों के इच्छा अनुसार न चलना या सही वधू न मिलने की शिकायत होना .....
इस प्रकार की मानसिकता से थोड़ा परे हटने की जरूरत है ।
आप यह सोचे कि एक लड़की जो अपने जन्म से लेकर लगभग 18-20 साल तक एक परिवार में रही ....
वहां के माहौल में बड़ी हुई.....
मां का स्नेह मिला !
पिता का लाड मिला !!
भाई बहनों का संरक्षण मिला !!
वह किसी माली की निगरानी में बढ़ते हुए पौधे की तरह संरक्षित सुरक्षित होती हुई, विकसित, पुष्पित और पल्लवित होती चली गई ।

अचानक.....

उसके जीवन में एक घटना(या दुर्घटना) घटी जिसे हम विवाह कहते हैं ।

यह बिल्कुल वैसा ही था,

जैसे.....

किसी बगीचे में लगे हुए फूलों से लदे हुए किसी पौधे को अचानक से उखाड़ दिया गया हो.....

और किसी नई जगह पर स्थापित कर दिया गया हो ।

बिल्कुल वैसा ही किसी स्त्री के साथ विवाह के समय होता है !

वह अपने परिवेश ....

जिसकी वह आदी होती है ।

उसे छोड़कर एक बिल्कुल नए परिवेश में प्रवेश करती है ।

एक ऐसा परिवेश जहां के विषय में उसे बहुत ज्यादा जानकारी नहीं है ।

सबसे दुख वाली बात यह है कि उस नए परिवेश के सारे लोग उसी से यह उम्मीद करते हैं कि वह अपने आप सारी चीजों को समझ जाए...

और उस नए परिवेश के हिसाब से तत्काल ढल जाए ।

जबकि जब हम किसी पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह पर लगाते हैं तो उसे विशेष ध्यान की जरूरत होती है .....

हम कोशिश करते हैं कि उसे धूप न लगे !

लगे भी तो हल्की-हल्की लगे !

अगर कमजोर तने वाला है तो उसके साथ हम एक डंडा गाड़ देते हैं ताकि वह अपनी मजबूती को प्राप्त कर सके .....

उसे रस्सी से बांधते हैं ताकि उसे सहारा मिल सके !

हल्की-हल्की पानी की फुहार देते हैं .....

जोर से पानी भी नहीं डालते.....

ताकि उसके कमजोर पत्ते या नई लगी हुई जड़ पर कोई असर ना हो ।

इस प्रकार का संरक्षण और विशेष ध्यान जब मिलता है तो वह पौधा उस जमीन पर कुछ दिन में उगने लगता है .....

अपनी जड़े जमा लेता है.....

और फिर.....

जबकि जब हम किसी पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह पर लगाते हैं तो उसे विशेष ध्यान की जरूरत होती है .....

हम कोशिश करते हैं कि उसे धूप न लगे !

लगे भी तो हल्की-हल्की लगे !

अगर कमजोर तने वाला है तो उसके साथ हम एक डंडा गाड़ देते हैं ताकि वह अपनी मजबूती को प्राप्त कर सके .....

उसे रस्सी से बांधते हैं ताकि उसे सहारा मिल सके !

हल्की-हल्की पानी की फुहार देते हैं .....

जोर से पानी भी नहीं डालते.....

ताकि उसके कमजोर पत्ते या नई लगी हुई जड़ पर कोई असर ना हो ।

इस प्रकार का संरक्षण और विशेष ध्यान जब मिलता है तो वह पौधा उस जमीन पर कुछ दिन में उगने लगता है .....

अपनी जड़े जमा लेता है.....

और फिर.....

मुरझाए हुए पत्ते फिर से एक नई ताकत के साथ उठ खड़े होते हैं !

उनमें नन्हीं नन्ही कोपलें आने लगती है ।

फिर.....

एक दिन उसमें एक पुष्प विकसित होता है !

नया पुष्प !

उस जमीन से जुड़ जाने के एहसास को प्रदर्शित करता हुआ !

अपने नए स्थान को स्वीकार करने की प्रमाणिकता को दर्शाता हुआ !

एक पुष्प !!!!

वह पुष्प जब उस पौधे पर उगता है तो हम बेहद खुश होते हैं ....

और गर्व भी महसूस करते हैं कि हमने एक पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने के बाद उसे जिंदा बचा लिया.....

सिर्फ इतना ही विवाह के बाद ससुराल वालों को करना होता है ।

लेकिन आप भी जानते हैं कि बहुत कम ससुराल वाले इस बात पर ध्यान दे पाते हैं !

वे उम्मीद करते हैं कि वह पौधा अपने आप विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए उनकी जमीन को स्वीकार कर लें !

और तत्काल खड़ा होकर पुष्पित हो जाए !!

यह प्राकृतिक रूप से संभव नहीं है .....

अगर विवाह के पश्चात ससुराल के लोग....

चार छह महीने.....

नई वधु को परिवेश का एहसास करा दें !

उसे उस परिस्थिति से अवगत होने और नए माहौल के साथ एडजस्ट होने का मौका दें .....

थोड़ा सा अपनी तरफ से भी एडजस्ट हो.....

तो मेरे ख्याल से अधिकांश विवाह संबंध बेहद सुखद और शानदार ढंग से चल सकते हैं ।

लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं होता.....

खैर....

हम अपने विषय की ओर आते हैं ।

तो मेरी पत्नी के मेरे जीवन में आगमन के साथ मेरा जीवन उत्तरोत्तर प्रगति की ओर बढ़ता चला गया ।
देखने वाले कई लोगों मे इस बात से ईर्ष्या और जलन पैदा हुई .....
जब आप किसी की बराबरी नहीं कर सकते हैं.....
तो उससे ईर्ष्या तो जरूर कर सकते हैं ।
लेकिन इससे नुकसान आपका ही होता है क्योंकि जो आगे बढ़ गया वह तो बढ़ गया ..... आप उसे देख देख कर दुखी हो ..... इससे आपका ही खून जलेगा ।
दुर्भाग्य से हम अपने दुख से कम और दूसरों के सुख से ज्यादा दुखी होते हैं .....
यह वास्तविकता है ।
तो कोंडय्या भी मन ही मन मुझसे काफी दुखी था । उसे ऐसा लगता था कि मुझे सब कुछ मिल गया है लेकिन उसे कुछ भी नहीं मिला । समय आगे बढ़ता गया और उसका भी विवाह हो गया ।
इधर मेरे घर में पद्मा ने एक सुंदर कन्या को जन्म दिया और कालांतर में मुझे एक बेटा भी हुआ । दोनों स्वस्थ थे और अच्छी तरह बड़े होने लगे ।

उधर कोंडय्या का जिस कन्या से विवाह हुआ था वह थोड़ी सी गर्म स्वभाव की थी ।

कोंडय्या भी थोड़ा सा गर्म मिजाज पहले से था । दोनों के बीच में झगड़ा और मारपीट आम बात थी ।

कुछ दिनों तक मैंने भी उनको समझाने का प्रयास किया लेकिन मेरी समझ में आ गया कि यह असंभव सी बात है तो मैंने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया ।

शाम को खेत से वापस घर आने के बाद दोनों के बीच में किसी न किसी बात को लेकर बहस बाजी या झगड़ा होता ही था ....

यह उनका नित्यकर्म था ।

विवाह के लगभग 3 वर्ष हो चुके थे लेकिन उनके यहां संतान की प्राप्ति भी नहीं हुई .....

यह भी उनके बीच के झगड़ों की एक वजह थी ।

इधर मेरे साथ सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था लेकिन एक मुसीबत थी जो मेरे ऊपर आने वाली थी और वह भी कोंडय्या की तरफ से....

जिससे मैं अनजान था ।

काफी समय से लगातार उसके मेरे यहां काम करने की वजह से मुझे उसके ऊपर कुछ कुछ विश्वास होने लगा था । वह कोई ऐसी हरकत नहीं करता था , जिसकी वजह से उसके ऊपर अविश्वास किया जाए ....
अब एक तरह से वे दोनों मेरे परिवार के सदस्य हो चुके थे ।
हां !
मैंने यह जरूर ध्यान रखा कि उसे अपने घर में रहने का स्थान नहीं दिया । उसे उसी झोपड़ी में ही रहने दिया । पद्मलक्ष्मी कई बार मुझसे छुपा कर उनको पैसे वगैरह भी दे दिया करती थी ....
वह पदमा को उसके सभी प्रकार के कामों में मदद भी कर दिया करता था । उसकी पत्नी भी पदमा की यथासंभव सहायता करती थी । बच्चों को संभालने में भी वह उसकी मदद कर देती थी । इस प्रकार से उनके बीच में एक अलग प्रकार का आत्मीय संबंध हो गया था । जिसके चलते दोनों का घर में आना जाना लगा रहता था .... मुझे भी इस पर कोई आपत्ति नहीं थी ।
शराब पीना वहां एक सामान्य घटना थी ।
मैं भी पीता था और कोंडय्या भी पीता था ।

उसकी पत्नी रत्ना को कोंडय्या के घर में बैठ कर पीने पर आपत्ति थी ...

इसलिए कोंडय्या दारु की भट्टी पर जाकर दारु पीता था ।

यह उसका लगभग रोज का क्रम था ।

दारु की भट्टी को मेरा एक मित्र एक अलग ही नाम से पुकारता है । वह उसे सर्वधर्म मंदिर के नाम से पुकारता है । वह इसकी वजह भी बताता है कि यह बात सुनने में बड़ी अजीब लग सकती है लेकिन अगर आप दारु भट्टी की संस्कृति को देखे हैं तो आपको यकीन हो जाएगा कि यह वास्तव में वैसा ही है ।

खासतौर से देसी दारु की भट्टी में इस प्रकार का नजारा आपको जरुर दिखाई देगा । वहां ग्लास की संख्या कम होती है और पीने वालों की संख्या ज्यादा .....

तो कई बार ऐसा होता है कि ग्लास धोते भी नहीं है और एक शराबी दूसरे शराबी के गिलास में शराब डालकर पी लेता है .....

बोतल से पीने वालों में भी बोतल को शेयर करने का प्रचलन रहता है.....

उसमें कोई यह नहीं देखता की साथ में पीने वाला हिंदू है, मुसलमान है, कि इसाई है ।
ऊंची जात का है या नीची जात का ....
यह सारी चीजें वहां पर गौण हो जाती हैं ।
इसलिए वह सर्वधर्म सदभाव का सबसे बड़ा उदाहरण है ....
यहाँ तक कि कई बार जब एक बोतल खरीदने के पैसे नहीं होते तो दो अनजान लोग भी आपस में पैसे मिलाकर एक बोतल खरीद लेते हैं ....
फिर उसका बड़ी सफाई से बटवारा होता है.....
दोनों पीकर अपने अपने रास्ते बढ़ जाते हैं ।
इन सारी परिस्थितियों को देखते हुए ही मेरा दोस्त दारु की भट्टी को सर्व धर्म मंदिर कहता है ....
अर्थात जहां पहुंचने के बाद हर कोई सिर्फ एक ही देवता को अपना आराध्य मानता है ....
और वह होती है दारु .....
हर किसी के लिए वह उतनी ही प्राप्त करने के योग्य है ।
दारु की भट्टी में एक और चीज होती है और वह है दोस्ती !

चिन्नास्वामी : तांत्रिक

एक दिन जब कोंडय्या दारु भट्टी में गया तो वहां उसे दो लोग मिले जो उससे पहले कभी उसे उस भट्टी में नहीं दिखे थे ।

धीरे धीरे वह उस भट्टी में लगातार दिखने लगे और कभी कभी ऐसा होता जब कोंडय्या पी रहा होता तो वे लोग उसी के टेबल पर आकर साथ बैठते । कई बार वे उसे दारु भी पिलाते या उसके साथ शेयर करते ।

इस प्रकार से उनके बीच में दोस्ती होने लगी । उनमें से एक का नाम था बल्ली और दूसरे का नाम था चिट्टी ....

यह दोनों अब कोंडय्या के साथ ही शराब पीते थे धीरे धीरे पहचान हुई ...

और उन्होंने कोंडय्या को अपने गुरु के बारे में बताया । और यह भी समझाया कि उनके गुरु बड़े पहुंचे हुए और सिद्ध व्यक्ति हैं ।

उनके बीच में इस प्रकार की चर्चा चलती रहती थी । चिट्टी और बल्ली अपने गुरु के बारे में काफी बढ़ा चढ़ाकर अलग-अलग किस्म की बातें सुनाया

करते ..... कि वह बड़े चमत्कारी हैं किसी का भी कोई भी काम कर सकते हैं ।

धीरे धीरे कोंडय्या को वे प्रभावित करने में कामयाब हो गये ।

एक दिन शराब के नशे में उन दोनों के सामने कोंडय्या ने मेरे बारे में बताना चालू कर दिया .... मुथु इतना आगे बढ़ गया और मैं वही का वही रह गया .... हम दोनों साथ में काम करते थे लेकिन अभी मैं उसका नौकर हूं ... आदि... आदि....

इस प्रकार से उसका सारा दर्द उन दोनों के सामने निकलने लगा ।

उन्होंने उसे उकसाया और कहा - अगर तू गुरुजी के पास जाएगा तो जरूर कुछ ना कुछ ऐसा उपाय बताएंगे जिससे तू भी अमीर हो सकता है । इस प्रकार बातों के जाल में फंसा कर उन लोगों ने उसे अपने गुरु के पास जाने के लिए जाने के लिए तैयार कर लिया ।

आखिरकार एक दिन कोंडय्या उनके साथ जाने को तैयार हो गया ।

वे दोनों कोंडय्या को लेकर पास ही के एक गांव में ले गए ।

गांव से लगा हुआ जंगल था । उस जंगल में एक पुराना खंडहर था । जो अंग्रेजों के जमाने की कोई इमारत रही होगी । उसी के एक कमरे में गुरु जी का निवास था । दोनों उसे लेकर वही पहुंचे ।

गुरु जी का नाम था चिन्नास्वामी । चिन्नास्वामी एक तांत्रिक था जो कई प्रकार की मसानी शक्तियों का स्वामी था ।

चिन्नास्वामी बड़ा चलता पुर्जा किस्म का आदमी था । वह रहस्यमय चीजों के पीछे लगा रहता था । जिसमें विभिन्न प्रकार के जादुई सिक्के तथा अन्य तांत्रिक चीजें शामिल है .... कुल मिलाकर वह ऐसी चीजों की तलाश में रहता था जो उसे फायदा पहुंचा सके ।

जब कोंडय्या चिन्नास्वामी के पास पहुंचा तो चिन्नास्वामी अपने सामने रखी हुई धूनी को देख कर बैठा हुआ था और कुछ मंत्र जाप कर रहा था....

धूनी में हल्का-हल्का धुआं उठ रहा था और कुछ लकड़ियां पड़ी हुई थी .... लेकिन उसमें आग नहीं जल रही थी .....

जैसे ही वे लोग कमरे के अंदर पहुंचे चिन्नास्वामी ने अपने हाथ में रखी हुई कोई चीज फूंक मारकर उस धूनी की तरफ फेंकी .....

इसके बाद वह आसमान की तरफ हाथ उठाकर बैठ गया ।

इन सारी अजीबोगरीब हरकतों को कोंडय्या देख रहा था और आश्चर्यचकित हो रहा था ....

मन ही मन वह घबरा भी रहा था क्योंकि उसने इस प्रकार की चीजें पहले नहीं देखी थी ।

आश्चर्य.....

कुछ समय के बाद लकड़ी के बीच में एक आग की लपट प्रकट हुई .....

ऐसा लगा जैसे सुनने में से कोई अग्नि प्रकट हो गई हो और धीरे-धीरे उन सूखी लकड़ियों में आग लग गई ....

कोंडय्या आंखें फाड़ फाड़ कर इस दृश्य को देखता रहा.....

उसके लिए यह एक अद्भुत चमत्कार था । जिसे देखकर वह चिन्नास्वामी को चमत्कारी बाबा समझ बैठा और उसके पैरों में गिर गया.....

इस प्रकार के चमत्कार देखते ही हम नमस्कार करने लगते हैं क्योंकि हमको ऐसा लगता है कि ऐसा चमत्कारी बाबा हमारे जीवन में भी चमत्कार कर सकता है ।

जो काम आप एक छोटी सी माचिस की डिबिया से कर सकते हैं उसके लिए इस प्रकार का तमाशा करने की क्या आवश्यकता है ?

शून्य से आग प्रकट करके आप अपने जीवन में क्या फायदा ले सकते हैं ?

यह सब हम नहीं सोचते ।

हम सिर्फ यह सोचते हैं कि अगर उसने आग प्रकट कर दी तो उसका मतलब है कि वह कुछ भी प्रकट कर सकता है ..... जबकि हो सकता है कि वह आग ही प्रकट कर सकता हो । उसके अलावा कोई भी चीज ना प्रकट कर सकता हो ।

हम इस तरह से नहीं सोचते ।

यह हमारा अंधविश्वास है और हम सिर्फ चमत्कारों की भाषा समझते हैं इस चक्कर में कई बार धोखा खा जाते हैं ।

आप यकीन मानिए कि जो सिद्ध पुरुष होगा वह कम से कम चमत्कार करेगा वह अपने आप को जितना हो सके छुपा कर रखने की कोशिश करेगा.....

जो जितना ज्यादा चमत्कार दिखा रहा है वह ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है और यह तभी संभव है जब कि उसने इसे ही अपने जीवन का लक्ष्य मान रखा हो ।

इस प्रकार के चमत्कारों को बाजीगरी की भाषा में चुटकुले कहा जाता है । ये छोटी छोटी चीजें हैं जो थोड़ा सा प्रयास करके आप भी सीख सकते हैं । दरअसल यह सारी चीजें हाथ की सफाई होती है ।

एक रसायन होता है फास्फोरस ..... जो अगर आप खुली हवा में रखें तो उसमें आग लगने लगती है । यदि आप उसे सूखी लकड़ियों के बीच में रख दें और मन ही मन या होठों से कुछ मंत्र बुदबुदाने का नाटक करें तो थोड़ी देर हवा लगने पर उस में से आग निकलने लगेगी और लकड़ी आग पकड़ लेगी।

जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होगा कि आपने मंत्रों के माध्यम से आग लगा दी और देखने वाले आप की चमत्कारी क्षमता के कायल हो जाएंगे ।

चिन्नास्वामी ने ऐसा ही कुछ किया था और कोंडय्या वास्तव में उसका कायल हो गया ।

इसके बाद बाबा ने स्टैंडर्ड कुछ सवाल किए - बच्चा तू बड़ी परेशानी में है .....

तुझे अपने लोगों ने ही परेशान किया हुआ है.....

तेरे ही किसी आदमी ने तेरा बंधन किया हुआ है,

परिवार का ही आदमी है....

या तेरे दोस्त में से करीबी दोस्त.....

ऐसा दोस्त जो तेरे परिवार जैसा है .....

इतनी बातें बोलने से आप प्रभावित हो जाते हैं कि इसको मालूम है कि कोई ना कोई परिवार वाला ही किया होगा .....

जिनको अपने ऊपर प्रयोग होने का शक होता है उसमें से आधे से ज्यादा लोगों को यह पूरा विश्वास होता है कि उनके ही परिवार के किसी ने उसके ऊपर प्रयोग किया हुआ है । अगर बहू है तो उसका सीधा सीधा शक सास या ननद पर जाएगा .....

और अगर सास है तो उसका सीधा सीधा शक बहू पर जाएगा ।

यह 10 में से 9 लोगों की कहानी है ।

अगर आप उसे सच सच बता दें कि ऐसा कुछ भी नहीं है । तो वह विश्वास नहीं करेगा .... लेकिन यह बता दें कि किसी ने कुछ किया हुआ है तो वह तुरंत प्रभावित हो जाएगा ..... उसके निवारण के लिए आपको पैसे देने के लिए भी तैयार हो जाएगा.....तो कोंडय्या भी प्रभावित हो गया और उसने पूछा - बाबा, बताओ किस ##### ने किया है ?

अब यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब कोई भी तांत्रिक देने से बचता है....

तो स्वामी ने भी घुमा फिरा कर कहा- तुझे जानकर क्या करना ? तू बोल तो मैं उसे शांत कर सकता हूं ।

कोंडय्या इसके लिए तैयार हो गया । बाबा ने उसे अपने सामने बिठा लिया और दोनों शिष्यों को जाने का इशारा किया । दोनों कमरे से बाहर हो गए ।

चिन्नास्वामी बोला - तू इस बात से ज्यादा परेशान है कि तेरा दोस्त इतना आगे बढ़ गया और तू इतना पीछे कैसे रह गया .....

यह बात सुनते ही कोंडय्या फिर से चिन्नास्वामी के चरणों में गिर गया और बोला - हां बाबा यह बात बिल्कुल सही है ....

मुथु और मैं साथ साथ बड़े हुए .....

साथ-साथ नाव चलाया.....

साथ-साथ मछलियां पकड़ी.....

लेकिन आज वह मुथु सेठ है...

और मैं उसका नौकर बनकर जिंदगी गुजार रहा हूं ।

यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है.....

मैं भी उसके जैसी जिंदगी गुजारना चाहता हूं ...

चाहे इसके लिए मुझे कुछ भी करना पड़े ।

यह वही बात थी जो चिन्नास्वामी कोंडय्या के मुख से सुनना चाहता था । उसने उसे थोड़ा और उकसाया !

बोला - तू जो चाहता है वह गलत नहीं है । दरअसल उसे जो मिला है वह तेरा था....

तुझको मिलना चाहिए था.....

दोस्त होने के बावजूद उसने तुझे अंधेरे में रखा .....

जिसकी वजह से तू एक गलत औरत के चक्कर में पड़ गया.....

वरना आज तेरे पास भी उसके जैसा पैसा होता.....

चिन्नास्वामी का मायाजाल

चिन्नास्वामी ने कोंडय्या की दुखती रग पर हाथ रख दिया था .....

यह सुनकर कोंडय्या के आंसू निकल पड़े और वह रोने लगा.....

बोला - बाबा तुम सही बोल रहे हो । हम दोनों तब से साथ हैं जब नंगे घूमते थे । नंगे समुद्र की लहरों पर उछाल मारा करते थे । छोटी नाव पर बैठकर मछलियां पकड़ने जाया करते थे और फिर उसके बाद अचानक यह अंबर ग्रीस हमारे बीच आया और फिर सब कुछ बदल गया.....

धीरे-धीरे वह आगे बढ़ता गया और मैं पीछे छूट गया । अब तो एंबरग्रीस भी नहीं मिलता.....

कई बार मैंने नाव लेकर कोशिश की लेकिन नहीं मिला ....

मेरी किस्मत फूट गई है !

और उसकी किस्मत चमक गई है .....

बाबा बोला - तेरी किस्मत चमक सकती है !

तू भी उसके जैसा रईस हो सकता है !!

लेकिन इसके लिए तुझे एक काम करना पड़ेगा.....
जो मैं समय आने पर तुझे बताऊंगा ।
अभी मैं तेरे लिए पूजा करता हूं.....

इतना कहकर उसने कोंडय्या से कुछ पूजन करवाया ,
चमत्कार दिखाये और उसे जाने का निर्देश दिया ।
इस प्रकार से कोंडय्या का वहां आना जाना प्रारंभ हो गया ।
एक दिन कोंडय्या ने अपनी संतान न होने की बात बताई .....
जिसे सुनकर चिन्नास्वामी ने उसे घर में आकर कुछ पूजन कराने की बात कही !
कोंडय्या ने इस बात को स्वीकार कर लिया ।
एक दिन चिन्नास्वामी अपने चेलों के साथ कोंडय्या के घर पहुंचा । वहां उसने रत्ना को तथा कोंडय्या को बैठाकर कुछ पूजन आदि संपन्न कराया ।
बोला - समस्या बड़ी है ! किसी ने गर्भ बांध दिया है ..... रात में पूजन संपन्न करना पड़ेगा !

गर्भ बांधने की बात सुनते ही रत्ना भी कोंडय्या से प्रभावित हुई । उसने रात्रि पूजन की बात स्वीकार कर

ली । इससे पहले ही कोंडय्या उसे चिन्नास्वामी के चमत्कारों के बारे में बता चुका था यानी भूमिका तो पहले ही तैयार थी इसलिए इंकार करने का तो प्रश्न ही नहीं था !

चिन्नास्वामी अपने चेलों के साथ वहीं रुक गया । रात हुई .....
चिन्नास्वामी ने उसी प्रकार से चमत्कारिक अग्नि प्रकट की.....
जिसे देखकर रत्ना भी बुरी तरह प्रभावित हो गई.....
उसे भी लगने लगा कि चिन्नास्वामी उसकी गोद भर सकता है !

पूजा संपन्न होने के बाद चिन्नास्वामी ने हवा में हाथ उठाया और उसके हाथ में मिठाई के दो टुकड़े आ गए !
कोंडय्या तथा उसकी पत्नी पहले ही प्रभावित थे ....
इस चमत्कारिक मिठाई को देखकर वे और प्रभावित हो गए ....
दोनों ने अत्यंत श्रद्धा भाव से मिठाई ली ।

चिन्नास्वामी ने उन्हें कहा - यह प्रसाद है जो तुम्हें संतान देगा । इसे तुम्हें सोते समय पूरे कपड़े उतार कर खानी है और इसे खाकर प्रेम कर लेना .....

आराम से बिस्तर पर लेट जाना । मैं यहाँ तुम्हारे लिए पूजा कर रहा हूँ .....

पूजा पूरी होगी तो मैं आवाज दूंगा ....

तब तुमको इस मिठाई का दूसरा टुकड़ा दूंगा .....

फिर वही प्रक्रिया करनी है ।

दोनों टुकडे खा लेने के बाद तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी ।

दोनों खुशी-खुशी मिठाई का टुकड़ा लेकर अपने कमरे की ओर चले गए .....

निर्वस्त्र होकर उन्होंने मिठाई खाई और प्रसंग प्रारम्भ किया .....

थोड़ी देर में उन पर बेहोशी छाने लगी और 5 मिनट के बाद दोनों बेहोश हो गए ।

यह एक अकाट्य सत्य है कि संतान की प्राप्ति के लिए सहवास जरूरी है । स्त्री और पुरुष के मिलन से पुरुष के शरीर में स्थित वीर्य स्त्री के शरीर में प्रवेश करता है

और उसमें स्थित शुक्राणु शरीर में स्थित अंडाणु के साथ जुड़ जाता है और फिर गर्भ स्थापित होता है ।
निसंतानता एक बड़ी समस्या बनती जा रही है अध्ययन बताते हैं कि इस समस्या में बढ़ोतरी हो रही है और इसका एक कारण पुरुषों के अंदर शुक्राणुओं की संख्या में कमी आना है ।
इसमें सबसे दिलचस्प बात यह है कि गर्भ की स्थापना के लिए केवल एक शुक्राणु की आवश्यकता है ।
प्रकृति ने किसी भी संभावना को समाप्त करने के लिए बहुत जबरदस्त व्यवस्था करके रखी हुई है । एक पुरुष के वीर्य में सामान्य तौर पर शुक्राणु की संख्या डेढ़ करोड़ शुक्राणु से बीस करोड़ शुक्राणु प्रति मिलीलीटर तक होती है।

यदि किसी पुरुष के एक मिलीलीटर सीमेन में डेढ़ करोड़ से कम शुक्राणु की मात्रा हैं तो उसको कम शुक्राणुओं की समस्या मानी जाती है।ऐसी स्थिति में गर्भ धारण करने में समस्या आ सकती है और संतानहीनता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है । भारत में अधिकांश पुरुष अपनी जांच करवाने से हिचकते हैं जबकि अगर आप

जांच करवा लें और कुछ इलाज करें तो ऐसे अधिकांश मामलों में सुधार हो सकता है ।
इसके अलावा भी बहुत सारी ऐसी चीजें हैं जिनका ध्यान अगर आप रखें तो आपके शरीर में शुक्राणु की संख्या पर्याप्त रहेगी और आप आसानी से पिता बन पाएंगे यह चीजें बड़ी सरल है लेकिन काफी कार्य करती हैं ।

सबसे पहली बात तो यह जान लें कि आपके शरीर के तापमान से कम तापमान पर ही शुक्राणु जिंदा रह सकते हैं .....
इसलिए उनके रहने के लिए एक ऐसी थैली की व्यवस्था की गई है जो आपके शरीर के बाहर लटकती रहती है ।
यदि आप उसका तापमान बढ़ा देंगे तो शुक्राणुओं की संख्या कम हो जाएगी क्योंकि वह अधिक तापमान की वजह से मर जाएंगे ।
इसमें सबसे बड़ी दिक्कत वाली चीज है गर्म पानी से नहाना । अगर आप लगातार गर्म पानी से नहाते हैं तो

ऐसी परिस्थिति में कुछ भी हो सकता है जैसा कि रत्ना के साथ होने वाला था .....

दस मिनट बाद चिन्नास्वामी ने कमरे में प्रवेश किया । तब तक दोनों बेहोशी की अवस्था में पूरी तरह जा चुके थे ।

चिन्नास्वामी ने रत्ना के साथ सहवास किया !
उसके बाद उसके दोनों चेलों ने भी वही किया इतना करने के बाद वापस उनको चादर ओढ़ाकर तीनों कमरे से बाहर हो गए !
लगभग दो-तीन घंटे के बाद उनको होश आया ....
होश आने के बाद उन्होंने अपने आप को निर्वस्त्र पाया तो लगा कि जैसा चिन्नास्वामी ने कहा था वैसा उन्होंने आपसी संसर्ग किया होगा ।
सुबह लगभग तीन बजे का समय रहा होगा.....
तभी बाहर से चिन्नास्वामी की आवाज आई -
कोंडय्या ! बाहर आ जाओ !
दोनों कपड़े पहन कर बाहर निकले.....
चिन्नास्वामी के दोनों चेले बाहर वाले कमरे में सो रहे थे और चिन्नास्वामी पूजा वाली जगह पर बैठा हुआ था ।

उसने फिर से दोनों को अपने सामने बैठाया कुछ-कुछ प्रक्रियाएं की और फिर से हवा में उसी प्रकार से मिठाई प्रकट की और दोनों को एक-एक टुकड़ा दे दिया.....

दोनों अंदर चले गए !

फिर पहले वाली प्रक्रिया हुई .....

उसके बाद चेले वापस अपनी जगह पर जाकर सो गए और चिन्नास्वामी जहां उनको पूजन कराने बैठा था वही पर सो गया ।

सुबह लगभग सात बजे के आसपास रत्ना की नींद खुली !

उसने फिर अपने आप को निर्वस्त्र पाया .....

बाजू में देखा तो कोंडय्या भी उसी प्रकार निर्वस्त्र पड़ा हुआ था ।

उसे आभास हुआ कि उसके साथ कुछ हुआ है .....

लेकिन कोंडाया को भी निर्वस्त्र देखकर उसे विश्वास हुआ कि इसी ने किया होगा .....

वह कपड़े पहन कर उसे उठाने लगी !

दोनों उठे नित्य कर्म आदि संपन्न किया और नाश्ता बनाने के बाद उन्होंने चिन्नास्वामी और चेलों को आवाज लगाई .....

उसने फिर से दोनों को अपने सामने बैठाया कुछ-कुछ प्रक्रियाएं की और फिर से हवा में उसी प्रकार से मिठाई प्रकट की और दोनों को एक-एक टुकड़ा दे दिया.....

दोनों अंदर चले गए !

फिर पहले वाली प्रक्रिया हुई .....

उसके बाद चेले वापस अपनी जगह पर जाकर सो गए और चिन्नास्वामी जहां उनको पूजन कराने बैठा था वही पर सो गया ।

सुबह लगभग सात बजे के आसपास रत्ना की नींद खुली !

उसने फिर अपने आप को निर्वस्त्र पाया .....

बाजू में देखा तो कोंडय्या भी उसी प्रकार निर्वस्त्र पड़ा हुआ था ।

उसे आभास हुआ कि उसके साथ कुछ हुआ है .....

लेकिन कोंडाया को भी निर्वस्त्र देखकर उसे विश्वास हुआ कि इसी ने किया होगा .....

वह कपड़े पहन कर उसे उठाने लगी !

दोनों उठे नित्य कर्म आदि संपन्न किया और नाश्ता बनाने के बाद उन्होंने चिन्नास्वामी और चेलों को आवाज लगाई .....

वे सभी उठ बैठे !

उसके बाद वह भी स्नानादि करके वापस लौटे .....

बिल्कुल आराम से जैसे कुछ भी घटित नहीं हुआ हो उस प्रकार से नाश्ता आदि संपन्न किया । जाने से पहले चिन्नास्वामी ने रत्ना से पूछा - तुम्हारी माहवारी कब आई थी ?

रत्ना ने बताया - लगभग दस दिन हो चुके हैं ....

चिन्नास्वामी ने कहा - ठीक है एक बार और पूजन करना पड़ेगा ।

इसके लिए उसने तीन दिन बाद का समय निर्धारित किया । तीन दिन के बाद फिर से इसी प्रक्रिया की पुनरावृति हुई और उसके बाद तीनों वापस चले गए.....

स्त्रियों की मासिक की अवधि 28 से 32 दिनों के बीच की होती है । इसके लगभग मध्य के दिन में स्त्री गर्भधारण करने के योग्य स्थिति में आती है अर्थात उसका अंडाणु विकसित होकर शिशु बनने के लायक हो जाता है। इसे अगर एक जनरल तरीके से देखें तो बारहवें दिन से लेकर अठारहवें दिन तक का समय ऐसा होता है जिसके बीच में सहवास अगर संपन्न हो

मुझे उस पर कोई विशेष ध्यान देने की जरूरत महसूस नहीं हुई .....

स्वप्न मे संकेत

कुछ दिन के बाद रात को मुझे स्वप्न में वही मत्स्यकन्या स्वरूपिणी देवी दिखाई दी !

वह चिंतित दिखाई दे रही थी और उसने कहा - अक्षय पात्र का ध्यान रखना !

इतना कहकर वह लोप हो गई । इससे पहले कभी भी देवी ने ऐसा नहीं कहा था । उनकी बात सुनकर मुझे अक्षय पात्र की चिंता होने लगी .....

अभी तक मैंने उसकी सुरक्षा के विषय में कभी नहीं सोचा था, क्योंकि मुझे लगता था कि वह मेरे अलावा किसी की जानकारी में नहीं है ।

पूजन कक्ष में भी मैं अकेले ही जाता था यहां तक कि पद्मलक्ष्मी को भी मैंने इसके बारे में नहीं बताया था .... उसे सिर्फ इतना कहा था कि देवी की मूर्ति को हाथ नहीं लगाना है .....

वह इस बात का पूरा पालन करती थी ।

अगले दिन सुबह स्नानादि करने के बाद उठकर पात्र को देखा !

वह सुरक्षित रूप से वही रखा हुआ था !!

यह देखकर मुझे थोड़ी सी निश्चिंतता हुई....

पर फिर भी मन में कहीं न कहीं यह कचोट रही कि जब देवी ने ऐसा कहा है तो कुछ ना कुछ दिक्कत जरूर होगी ।

इसलिए मैंने पूजा कक्ष का ताला बदल दिया और एक नया और बड़ा ताला लाकर लगा दिया ....

पद्मलक्ष्मी ने मुझसे इसकी जरूरत के विषय में पूछा ....

लेकिन मैंने उसे टाल दिया और कहा कि ऐसा बदलना जरूरी होता है ।

फिर उसने मुझसे बहस नहीं की ।

ताला लगाने के बाद मैं थोड़ा सा निश्चिंत हो गया । आमतौर पर उस पूजा कक्ष मे पूजन मैं अकेले ही करता था । मेरे अलावा किसी और को वहाँ घुसने की इजाजत नहीं थी ।

पद्मलक्ष्मी का छोटा सा मंदिर उसके किचन में ही था ....

जहां पर वह अपने हिसाब से देवी-देवताओं की स्थापना भी कर लेती थी और उनका पूजन भी करती थी ।

एक तरह से समझ लीजिए कि हम दोनों का पूजन कक्ष अलग अलग था .....

न उसके स्थान पर मैं हस्तक्षेप करता था और ना मेरे स्थान पर वह हस्तक्षेप करती थी ।

ताला लगा लेने के बाद मैं थोड़ा सा निश्चिंत हो गया । कुछ दिन और बीते और किसी प्रकार की कोई घटना नहीं घटी तो मुझे लगा कि संभवत नया ताला लगवाने के लिए उन्होंने निर्देश दिया होगा .....

मैंने नया ताला लगा दिया है इसलिए सब कुछ ठीक है !

लेकिन वास्तव में वैसा नहीं था.....

और कुछ ऐसा घटित होने वाला था.....

जो मेरे जीवन में उथल-पुथल मचाने वाला था ।

दरअसल चिन्नास्वामी को मेरे पास अक्षय पात्र होने की बात पता चल गई थी !

और वह उसे हासिल करना चाहता था । कोंडय्या को उसने अपना माध्यम बनाया था । दो-तीन बार उसने मेरे घर में प्रवेश करने की कोशिश की , लेकिन वह तामसिक शक्तियों का साधक था ..... अर्थात भूत प्रेत उसे सिद्ध थे और वह हमेशा उसके साथ चलते थे ।

जो इस प्रकार के साधक होते हैं वह किसी मंदिर में प्रवेश नहीं करते, क्योंकि ऐसा करने से उनके द्वारा सिद्ध

की गई शक्तियों को तकलीफ होती है और कई बार वे उसे छोड़कर भाग भी सकती हैं । इसलिए तामसी शक्तियों के साधक सात्विक देवताओं के मंदिर में प्रवेश नहीं करते .....

अगर किसी वजह से वहां जाना भी पड़ गया तो मंदिर के बाहर ही बैठे रहते हैं .....

उसके गर्भ ग्रह में भूलकर भी प्रवेश नहीं करते।

चिन्नास्वामी के साथ भी यही हो रहा था वह घर के अंदर अपनी तामसिक ऊर्जा के कारण प्रवेश नहीं कर पाता था

कई लोग घर में भूत बाधा आदि होने की बात कहते हैं और उसके लिए कई प्रकार के इलाज करवाते रहते हैं .....

आप अपने घर में नित्य पूजन करेंगे तो बहुत कम संभावना है कि आपके घर में तामसिक शक्तियां प्रवेश कर पाए । यदि ऐसा कुछ हो जाए तो सबसे बढ़िया उपाय है कि आप रोज हनुमानजी को अपनी समस्या समाधान की प्रार्थना करके घर में सुंदरकांड का पाठ प्रारंभ कर दें और शाम के समय लोबान की दो अगर

बत्तियां जला दें ..... पंद्रह दिन से महीने भर के भीतर आपको बहुत ही अनुकूलता प्राप्त होगी .....

यह एक सरल उपाय है ! इसमें बहुत ज्यादा पैसा खर्च नहीं होना है, इसलिए आपको इसके ऊपर विश्वास थोड़ा कम होगा ..... क्योंकि जब हम पैसा खर्च करते हैं तभी हमें विश्वास होता है कि हम कुछ कर रहे हैं ।

लेकिन..... कई चीजें ऐसी हैं जो सस्ती हैं लेकिन रामबाण की तरह काम करती है !

खैर..... यह एक अलग विषय हुआ ।

अक्षय पात्र की चोरी

मुथू स्वामी के घर के पास पहुंचते ही अक्षय पात्र की शक्तियां चिन्नास्वामी को अंदर प्रवेश करने नहीं देती थी .....

या यूं समझ लीजिए कि देवी चेपम्मा की रक्षक शक्तियां उसे अंदर आने नहीं देती थी .....

जिसकी वजह से वह अंदर आकर उस अक्षय पात्र को चोरी नहीं कर पाया था ।

जब उसे यह विश्वास हो गया कि वह मेरे घर के अंदर नहीं प्रवेश कर सकता और ना ही उसके चेले प्रवेश कर सकते हैं तो उसने किसी ऐसे व्यक्ति को खोजने की कोई कोशिश की जो मेरे घर के अंदर प्रवेश कर सकता है .....

वह व्यक्ति था कोंडय्या !

मेरे अलावा वही एक ऐसा व्यक्ति था जो चेप्पम्मा के मंदिर में प्रवेश कर सकता था .....

मेरी अनुपस्थिति में चेपम्मा के सामने दीपक लगाने की जिम्मेदारी भी उसी की होती थी ।

वह यह कार्य बिल्कुल श्रद्धा और इमानदारी के साथ करता था । इसलिए उसका मंदिर में प्रवेश हो जाता था उसकी इसी विशेषता का लाभ उठाने के लिए कोंडय्या को उसने अपने चेलों के माध्यम से धीरे-धीरे करके अपने जाल में फंसाया था ।
उसके चमत्कार देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया था । वही अपने फर्जीवाड़े से उसने रत्ना को गर्भवती कर दिया था, जिसके चलते रत्ना भी अब आंख मूंदकर उसके ऊपर विश्वास करने लगी थी .....

लेकिन चिन्नास्वामी का लक्ष्य घर में रखा हुआ अक्षय पात्र था !
मैं पत्नी और बच्चों के साथ तिरुपति बालाजी के दर्शन करने के लिए गया हुआ था । घर की देखभाल की जिम्मेदारी कोंडय्या के ऊपर थी । यानी एक चोर के ऊपर घर की देखभाल की जिम्मेदारी छोडकर मैं चला गया था ।

देवी के सामने नित्य दीपक लगाने का मेरा नियम था , इसलिए मैंने कोंडय्या को इसकी जिम्मेदारी भी सौंपी

वह यह कार्य बिल्कुल श्रद्धा और इमानदारी के साथ करता था । इसलिए उसका मंदिर में प्रवेश हो जाता था उसकी इसी विशेषता का लाभ उठाने के लिए कोंडय्या को उसने अपने चेलों के माध्यम से धीरे-धीरे करके अपने जाल में फंसाया था ।
उसके चमत्कार देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया था । वही अपने फर्जीवाड़े से उसने रत्ना को गर्भवती कर दिया था, जिसके चलते रत्ना भी अब आंख मूंदकर उसके ऊपर विश्वास करने लगी थी .....

लेकिन चिन्नास्वामी का लक्ष्य घर में रखा हुआ अक्षय पात्र था !
मैं पत्नी और बच्चों के साथ तिरुपति बालाजी के दर्शन करने के लिए गया हुआ था । घर की देखभाल की जिम्मेदारी कोंडय्या के ऊपर थी । यानी एक चोर के ऊपर घर की देखभाल की जिम्मेदारी छोडकर मैं चला गया था ।

देवी के सामने नित्य दीपक लगाने का मेरा नियम था , इसलिए मैंने कोंडय्या को इसकी जिम्मेदारी भी सौंपी

थी । इस वजह से पूजन कक्ष के ताले की चाबी भी उसके पास थी .....

यानी हर तरह से अवसर उसके फेवर में था ।

वही हुआ जो होना था !

चिन्नास्वामी ने मौके का फायदा उठाया !!

कोंडय्या को उसने अक्षय पात्र लेकर आने का निर्देश दिया .....

साथ ही उसे आश्वासन भी दिया कि वह पात्र मेरे नाम से सिद्ध है इसलिए मैं अपनी तरक्की कर पा रहा हूं .....

अगर वह पात्र लाकर उसे देगा तो तीन दिन के पूजन के बाद वह पात्र को कोंडय्या के नाम से सिद्ध कर देगा जिससे उसे भी मेरे समान ऐश्वर्य की प्राप्ति हो जाएगी ।

वह लालच में आ गया .....

उसने पूजा स्थान में जाकर उस अक्षय पात्र को खोज निकाला और उसे लाकर चिन्नास्वामी को दे दिया ।

चिन्नास्वामी उसे सिद्ध करने की बात कह कर चला गया .....

अगले दिन मैं तिरुपति से लौट आया ।

वापस लौटने के बाद मैं अपने कार्य में व्यस्त हो गया और लगभग हफ्ते भर तक मैं अपने कामों में लगा रहा ।

फिर एक दिन मुझे ध्यान आया कि अक्षय पात्र के दर्शन किए हुए काफी दिन हो गए.....

उसे देख लेता हूं !

जब मैं उसे देखने के लिए मूर्ति के पीछे पहुंचा तो वह गुप्त आला टूटा हुआ था.....

वहां से अक्षय पात्र गायब था !

इसे देखकर मैं भयभीत हो गया ।

मुझे देवी की चेतावनी याद आने लगी !

लेकिन !

अब तो कुछ नहीं हो सकता था .....

क्योंकि .....

अक्षय पात्र अपने स्थान से गायब हो चुका था ।

उसके अलावा देवी के ऊपर चढ़े हुए सोने के आभूषणों से लेकर सब कुछ जैसा का तैसा था ।

मुझे पूरा विश्वास था कि यह काम कोंडय्या ने ही किया होगा ।

कोंडय्या भी जान गया था कि चिन्नास्वामी उसे धोखा देकर अक्षय पात्र लेकर भाग गया है ।

क्योंकि.....

तीन दिन के बाद जब वह नहीं आया तो उसने चिन्नास्वामी के ठिकाने पर जाकर देखा तो वहां से सब कुछ गायब था .....

चिन्नास्वामी तीन दिन पहले ही अपने शिष्यों के साथ वहां से नौ दो ग्यारह हो चुका था ।

आसपास के लोगों से जानकारी लेने पर पता चला कि वह अपने गुरु से मिलने बनारस गया हुआ है । उसने यह बात आकर अपनी पत्नी रत्ना को भी बताई .....

उसने उसे सुझाव दिया कि वह इस मामले पर बिल्कुल चुप्पी साध ले !

वरना.....

सब उसे ही दोषी ठहराएंगे ।

वह उसकी बात मानकर बिल्कुल मौन हो गया था ।

लेकिन.....

उसके चेहरे के लक्षण देखकर मुझे पता चल गया था कि कुछ ना कुछ मामला गड़बड़ है .....

और उसमें इस “महामानव” की कुछ न कुछ भागीदारी जरूर है और उसे पता लगाना जरूरी था....

कोंडय्या मेरा लँगोटिया यार था तो मुझे उसकी कमजोरी पता थी !

मैंने उसे ठेके पर ले जाकर खूब शराब पिलाई !

शराब पीने के बाद वह शेर हो जाता था !!

उसके अंदर जो भी रहता था वह सारा का सारा उगल देता था । यह बात मैं अपने अनुभव से जानता था .....

जैसे जैसे उसे शराब चढ़ती गई .....

सारी कहानी बाहर आती गई.....

उसने चिन्नास्वामी और अक्षय पात्र वाली बात भी मुझे बता दी । अगले दिन मैं उसे लेकर चिन्नास्वामी के ठिकाने तक गया .....

लेकिन वहां कुछ भी नहीं था.....

सारी चीजों को झाड़ू लगाकर वह रफा-दफा हो चुका था ।

मैंने काफी खोजबीन करने की कोशिश की लेकिन उसका पता नहीं चला !!

इतना बताकर मुथू रुका !

पानी का गिलास एक बार मे खाली किया फिर बोला - पद्मा की बुआ जी से बातचीत होती रहती है और इसी

बातचीत के दौरान उन्होंने आप के विषय में बताया था
।
यह एक ऐसा मुद्दा है जिसे मैं हर किसी को नहीं बता सकता । आपके बारे मे सुनने पर मुझे ऐसा लगा कि मैं इस विषय पर आपसे चर्चा कर सकता हूं । इसलिए मैं सीधा जीप लेकर यहां आ गया अब आप ही इस समस्या का कोई समाधान निकालिए ताकि किसी भी प्रकार से वह अक्षय पात्र मुझे वापस प्राप्त हो जाए ।

यह बड़ी कठिन परिस्थिति थी !
अक्षय पात्र जैसी अद्भुत वस्तु आज भी विद्यमान है और लोगों के पास है यह जानना वास्तव में एक सुखद अनुभव था...
इन सारी परिस्थितियों को देखते हुए मुझे ऐसा लगा कि मुझे मुथू के गांव तक जाना पड़ेगा ....
तो मैंने उससे उसके गांव चलने के लिए कहा ।

मुथुस्वामी के घर की ओर

अब बॉस का मामला था तो छुट्टी का कोई दिक्कत भी नहीं था !

तो हम दोनों उसकी जीप में बैठकर चल निकले !
लगभग 10-12 घंटे के आसपास का सफर तय करके हम रात लगभग बारह बजे मुथुस्वामी के घर पहुंच गए !
उसका घर काफी अच्छा बना हुआ था !
जिसे देखने से ही वैभवशाली होने की अनुभूति होती थी !
मुथु की पत्नी पद्मा लक्ष्मी भी राव साहब की पत्नी के जैसे दिखती थी और काफी सुलझी हुई महिला लग रही थी ।
उसने हमारा स्वागत किया । हम खाना खा चुके थे ।
लंबा सफर था !
इसलिए वहां पहुंचने के बाद कुछ करने लायक स्थिति नहीं थी....
तो हम दोनों सो गए ।
अगले दिन सुबह बाकी कार्यक्रम की शुरुआत करनी थी ।

मुथू स्वामी ने भी अपनी देवी के मत्स्यकन्या जैसे स्वरूप की बात की थी .....

यही सब सोचता हुआ, मैं बड़े आराम से फिर से सो गया ।

सुबह लगभग सात बजे मेरी नींद खुली ।

नित्य कर्म करने के बाद मैंने मुथुस्वामी के मंदिर को देखने की इच्छा व्यक्त की !

मुथुस्वामी मुझे लेकर अपने मंदिर वाले कमरे की ओर गया । जैसे ही मैं उस कमरे के अंदर गया तो मैं भौचक्का रह गया ...

क्योंकि यह आकृति बिल्कुल वैसी ही थी.....

जैसी मैंने रात में स्वप्न में देखी थी .....

वही मत्स्य कन्या वाला स्वरूप !

अर्थात देवी स्वयं कोई संकेत कर रही थी ।

मुझे शंका हुई कि, इनके द्वारा जो संकेत दिया गया, वह उस जगह का तो नहीं है जहां पर चिन्नास्वामी रहा करता था .....

मुथू स्वामी ने भी अपनी देवी के मत्स्यकन्या जैसे स्वरूप की बात की थी .....

यही सब सोचता हुआ, मैं बड़े आराम से फिर से सो गया ।

सुबह लगभग सात बजे मेरी नींद खुली ।

नित्य कर्म करने के बाद मैंने मुथुस्वामी के मंदिर को देखने की इच्छा व्यक्त की !

मुथुस्वामी मुझे लेकर अपने मंदिर वाले कमरे की ओर गया । जैसे ही मैं उस कमरे के अंदर गया तो मैं भौचक्का रह गया ...

क्योंकि यह आकृति बिल्कुल वैसी ही थी.....

जैसी मैंने रात में स्वप्न में देखी थी .....

वही मत्स्य कन्या वाला स्वरूप !

अर्थात देवी स्वयं कोई संकेत कर रही थी ।

मुझे शंका हुई कि, इनके द्वारा जो संकेत दिया गया, वह उस जगह का तो नहीं है जहां पर चिन्नास्वामी रहा करता था .....

यह विचार मन में आते ही, मैंने मुथुस्वामी को उस स्थान पर ले जाने के लिए कहा, जहां पर चिन्नास्वामी रहता था ।

उसने मुझे मूर्ति के आधार मे पीछे की तरफ बना वह गुप्त आला दिखाया जहां पात्र रहता था ...

वह लगभग चार इंच के लगभग चौड़ा और तीन इंच के आसपास का एक पत्थर का टुकड़ा था जो उस आधार मे इतनी सफाई से बैठ जाता था कि उसके वहाँ होने का पता ही नहीं चलता था !

जब उसने उसे बाहर की तरफ खींचा तो वह दो टुकड़ों मे अलग हो गया ।

मुथू ने बताया कि वह उसी घटना के समय कोंडय्या ने तोड़ा होगा ।

जिस शिल्पकार ने भी उसे बनाया होगा वह वाकई काबिले तारीफ था .....

दक्षिण भारत मे शिल्पकला काफी विकसित हुई है ... प्राचीन काल के मंदिरों का सौन्दर्य भी देखते ही बनता है ।

खैर .....

चिन्नास्वामी का खंडहर

नाश्ता संपन्न करने के बाद हम लोग उस खंडहर की ओर बढ़ चले, जहां पर चिन्नास्वामी का ठिकाना था । वह मुथु के घर से कुछ किलोमीटर दूर था । जब हम वहां पहुंचे तो वहां कुछ लोग खड़े हुए थे । मुथु ने उनसे बात की तो उन्होंने बताया कि वह चिन्नास्वामी से मिलने आए हैं ।

जब मुथु ने उन्हें बताया कि चिन्नास्वामी तो यहां से चला गया है तो वह आश्चर्यचकित रह गए । उन्होंने कहा कि लेकिन परसों उन्होंने तो हमें यही आने के लिए कहा था ।

यह बात सुनकर हम भी आश्चर्यचकित रह गए । इसका मतलब चिन्नास्वामी वहां से गया नहीं था, बल्कि वहीं कहीं आस-पास मौजूद था ।

हम दोनों खंडहर के अंदर घुसे वहां पर मुझे वही गोल पत्थर दिखाई दिया जो स्वप्न में देवी के द्वारा संकेत किया गया था ।

वह एक अजीब सा गोल पत्थर था ।

वह एक पत्थर के खंबे के ऊपर रखा हुआ था । उसकी आकृति कुछ-कुछ खोपड़ी के जैसी थी ..... फर्क सिर्फ इतना था कि .....

उसमें आंख मुंह आदि बने हुए नहीं थे !

लेकिन खोपड़ी के समान ही उसमें कटाव दिखाई दे रहे थे ।

मैं उसे स्पर्श करने वाला था ....

तभी मुझे कपालिनी की आवाज मेरे कानों में सुनाई दी ।

वह बोली - वह तांत्रिक मुंड है !

उसे स्पर्श मत करो !

सावधान !!!

खतरा है !!!

बचो.....

यह बात सुनकर मैंने अपना हाथ वापस ले लिया ।

कपालिनी के इस प्रकार से दखल देने का मतलब यह निश्चित था कि वह खतरनाक हो सकता था ।

सारी बातें इस चीज की ओर इशारा कर रही थी कि चिन्नास्वामी उसी स्थान या उसके आसपास कहीं मौजूद है .....

वह यह जगह छोड़कर नहीं गया है ।

अब पता यह लगाना था कि चिन्नास्वामी आखिर है कहां ?

और वह उस व्यवस्था को तब तक संचालित करती रहती है.....
जब तक कि उस व्यवस्था को बनाने वाला उसे उससे मुक्त न कर दे .....
या किसी दूसरे तांत्रिक के द्वारा उस तिलस्म को तोड़ न दिया जाए .....

इन सारी बातों को जानने के बाद मुझे पता चल गया कि अब कुछ अजीबोगरीब होने वाला है.....
जिसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता । वह किसी भी हद तक खतरनाक हो सकता है और साथ ही जानलेवा भी हो सकता है ।
ऐसी स्थिति में मुथुस्वामी को अपने साथ रखना रिस्क लेने जैसा था.....
क्योंकि अगर किसी वजह से हम दोनों अलग हो जाते..... जिस की पूरी पूरी संभावना थी तो मुथुस्वामी का जीवन खतरे में पड़ सकता था । जो मैं नहीं चाहता था ।
मेरा आगे पीछे कोई नहीं था लेकिन मुथुस्वामी विवाहित था और दो बच्चों का पिता भी । ऐसी स्थिति

में उसे खतरे में डालना ठीक नहीं था । तो मैंने उसे वापस जाने के लिए कहा लेकिन वह मेरी बात मानने को तैयार नहीं हुआ ।

फिर मैंने उसे विस्तार से तिलस्म और उसके खतरों के विषय में बताया और साथ ही यह भी कहा कि तुम्हारा परिवार है अगर तुम किसी खतरे में पड़ गए तो वह अनाथ हो जाएंगे.....

मेरा तो आगे पीछे कोई नहीं है इसलिए मैं यह रिस्क ले सकता हूं ।

मेरी बात सुनकर वह दुखी हो गया ।

उसने कहा - मगर यह तो मेरी समस्या थी । अक्षय पात्र तो मेरा था, जिसकी चोरी हुई है । इसके लिए आप अपनी जान जोखिम में क्यों डालेंगे ?

अगर आपको कुछ हो गया तो मैं बुआ को क्या जवाब दूंगा ?

आप भी रहने दीजिए । चिन्नास्वामी कहीं दिखेगा तो उसे पकड़कर उस अक्षय पात्र को वापस लेने की कोशिश करेंगे । पात्र की कृपा से अभी मेरे पास पर्याप्त धन ऐश्वर्य मौजूद है जो कम से कम दो पीढ़ी तक तो

चल ही जाएगा । ऐसा करते हैं कि हम इस बात को यहीं पर समाप्त करते हैं और वापस चलते हैं ।

उसकी बात भी सही थी .....

अब मैं उसे कैसे समझाता कि एक अघोरी के मन में अगर एक बार कोई बात आ गई तो फिर वह योगहठ वाली कैटेगरी में चली जाती है । जहां उस कार्य को करने का संकल्प उठ गया तो फिर पीछे हटने का सवाल नहीं है ...
उसे समझाने का टाइम भी नहीं था ।
मैंने उसे कहा - तुम को चिंता करने की जरूरत नहीं है । मैं ऐसी स्थितियां संभाल सकता हूं । लेकिन तुम अगर यहां रहोगे तो तुम्हें सुरक्षित रखने के चक्कर में मुझे खतरा हो सकता है । इसलिए तुम्हें यहां से जाने के लिए बोल रहा हूं । कल दोपहर तक मैं घर पहुंच जाऊंगा .... तुम चिंता मत करो ।

यह सारी बात मैंने उसे वहां से भेजने के लिए कही थी, क्योंकि मुझे भी नहीं पता था कि तिलस्म कैसा है ? कितना बड़ा है ?

और उसे तोड़ने में कितना समय लगेगा ?
काफी हील हुज्जत के बाद मुथुस्वामी मान गया और अपनी जीप लेकर वापस चला गया.....

मैं वहां खड़े लोगों के साथ मिल गया । मुथुस्वामी को वापस भेजने के पीछे मेरा एक उद्देश्य यह भी था कि चिन्नास्वामी उसको पहचानता था, ऐसी स्थिति में उसे देखकर सचेत हो सकता था, जोकि अक्षय पात्र वापस मिलने की दिशा में एक रुकावट बन जाता ।
मुथुस्वामी के जाने के बाद मैं मंदिर से थोड़ा आड़ लेकर खड़ा हो गया । मेरा तांत्रिक झोला मेरे पास मौजूद था । उसके अंदर पड़े हुए बजरबट्टू को मैंने निकाल लिया और उसे अपने हाथ में रख लिया । यह किसी भी प्रकार के संभावित प्रयोग से निपटने की तैयारी थी । अभीष्ट मंत्रों का प्रयोग करने के बाद उसको मैंने अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया और उन लोगों के साथ जाकर खड़ा हो गया ।
वे लोग काफी देर से खड़े खड़े अब कुछ कुछ निराश होने लगे थे..... लेकिन उनको पूरा विश्वास था कि चिन्नास्वामी वहां पर जरूर आएगा ।

संभवतः उनको भी उसने चमत्कार दिखाकर प्रभावित किया हुआ होगा .....

जब मुझे बोरियत महसूस होने लगी तो मैं मंदिर यानी उस खंडहर के अंदर बाहर की चीजों को गौर से देखने लगा ।

उस मंदिर को देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह काफी पुराना है । वह पूरा का पूरा बादामी पत्थरों से बना हुआ था । उसमें चार कमरे थे । एक बड़ा कमरा पीछे की तरफ था जो और लगभग 20 फुट बाय 40 फुट का रहा होगा । उसके बीच में से होता हुआ एक त्रिकोण आकार का कमरा निकला हुआ था । बगल में दो कमरे और थे ।

बड़े हॉल की दीवार एक तरफ से आधी गिरी हुई थी.... लेकिन छत का हिस्सा लगभग सही सलामत था ।

समय और मौसम की वजह से पत्थरों पर सीलन और काई जमी हुई थी ...

काले हरे रंग की काई !

बाहरी हिस्सों पर छोटे-छोटे फफूंद जैसे हरे हरे पौधे थे ।

दीवारों पर नमी मौजूद थी !

कुछ ऐसे पत्थर होते हैं जो वातावरण की नमी को खींच लेते हैं । यह कुछ-कुछ वैसा ही पत्थर महसूस हो रहा था जो नमी को खींचता था ।

मंदिर के सारे पत्थर उसी प्रकार के थे !

जिसकी वजह से वहां ठंडक महसूस हो रही थी । मंदिर में सामान्यतः चौकोन या गोलाकार मध्य कक्ष या गर्भ ग्रह होता है .....

तिकोना गर्भ ग्रह मैं पहली बार देख रहा था ।

तंत्र क्षेत्र में त्रिकोण का बहुत ज्यादा महत्व है । इसका महत्व आप इसी बात से समझ सकते हैं कि अधिकांश यंत्रों में त्रिकोण का प्रयोग किया जाता है ।

यंत्रराज कहे जाने वाले श्री यंत्र की पूरी रचना ही खड़े और आड़े त्रिकोण से की गई है । इस बात से आप समझ सकते हैं कि त्रिकोण का तंत्र के क्षेत्र में क्या महत्व है .....

वास्तव में जो त्रिकोण होते हैं वह शक्ति अर्थात देवी और उसके भैरव का प्रतीक होते हैं ।

त्रिकोण आकार के गर्भ ग्रह का मतलब वह संभवत: अपने समय के किसी उच्च कोटि के तांत्रिक मंदिर या सिद्ध पीठ का रहा होगा ।

कुछ ऐसे पत्थर होते हैं जो वातावरण की नमी को खींच लेते हैं । यह कुछ-कुछ वैसा ही पत्थर महसूस हो रहा था जो नमी को खींचता था ।

मंदिर के सारे पत्थर उसी प्रकार के थे !

जिसकी वजह से वहां ठंडक महसूस हो रही थी । मंदिर में सामान्यतः चौकोन या गोलाकार मध्य कक्ष या गर्भ ग्रह होता है .....

तिकोना गर्भ ग्रह मैं पहली बार देख रहा था ।

तंत्र क्षेत्र में त्रिकोण का बहुत ज्यादा महत्व है । इसका महत्व आप इसी बात से समझ सकते हैं कि अधिकांश यंत्रों में त्रिकोण का प्रयोग किया जाता है ।

यंत्रराज कहे जाने वाले श्री यंत्र की पूरी रचना ही खड़े और आड़े त्रिकोण से की गई है । इस बात से आप समझ सकते हैं कि त्रिकोण का तंत्र के क्षेत्र में क्या महत्व है .....

वास्तव में जो त्रिकोण होते हैं वह शक्ति अर्थात देवी और उसके भैरव का प्रतीक होते हैं ।

त्रिकोण आकार के गर्भ ग्रह का मतलब वह संभवत: अपने समय के किसी उच्च कोटि के तांत्रिक मंदिर या सिद्ध पीठ का रहा होगा ।

जब हवन किया जाता है तब भी त्रिकोण आकार यज्ञ कुंड का निर्माण तभी होता है जब कोई विशेष तांत्रिक हवन हो रहा हो ।

इसलिए मुझे लगा कि वह अवश्य कोई तांत्रिक शक्तिपीठ रहा होगा । जो काल के आघात में आकर खंडहर की शक्ल में तब्दील हो गया था । उसमें स्थिति शक्तियों और तिलस्म के बारे में चिन्नास्वामी को पता चल गया होगा । जिसका वह उपयोग कर रहा था .....

तिकोने आकार का बीच वाला कक्ष लगभग खाली था । उसमें किनारे किनारे पर तीन खंबे उसी प्रकार के लगे हुए थे जैसा मैंने आपको पहले बताया था....

पत्थर का खंबा और उसके ऊपर खोपड़ी के आकार का एक गोल पत्थर !

उस त्रिकोण आकार कमरे के ठीक बीच में एक लगभग 3 फुट व्यास की जलहरी बनी हुई थी और उसके बीच में रखा हुआ था ....

लगभग एक फुट व्यास का लगभग साढ़े तीन या चार फीट ऊंचा काले पत्थर से बना हुआ शिवलिंग !!!

बना हुआ एक खंभा जैसा लटका हुआ था और उसमें से बूंद बूंद करके पानी शिवलिंग के ऊपर टपक रहा था ! जो बहता हुआ उसी गड्ढे में जा रहा था !
अद्भुत और विलक्षण दृश्य था !
हमारे प्राचीन मंदिरों में इस प्रकार की अद्भुत संरचनाएं आपको दिखाई देंगी जिनको देखकर आपको हमारे प्राचीन शिल्पीयों की कला और उनकी प्रतिभा पर गर्व होगा ।
दक्षिण भारत के कुछ मंदिर ऐसे हैं जो एक ही चट्टान को काटकर बनाए गए हैं । यह एक ऐसा काम है जिसे आज के आधुनिक समय में भी करना लगभग असंभव जैसी बात है, लेकिन आज से कई सौ साल पहले या संभवत हजारों साल पहले हमारे शिल्पीयों ने उसे अंजाम दे दिया था । इसके विषय में आप गूगल में सर्च करके जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।
कुछ मंदिर ऐसे हैं जिसमें सूर्य की किरणों को मंदिर के अंदर प्रवेश करने के लिए विशेष छेद बनाए गए हैं .... ये छेद ऐसे विशेष कोण में स्थापित हैं कि सूर्य के ऊपर चढ़ने के साथ साथ उनकी वजह से सूर्य की किरणें ठीक गर्भ ग्रह में स्थित विग्रह पर पड़ती है । सूर्य की स्थिति

साल भर बदलती रहती है और ऐसी स्थिति में उसे सही गणना के आधार पर ही बनाया जा सकता है ताकि सूर्य की किरणें हर परिस्थिति में श्री विग्रह पर ही पड़े ।
कोणार्क के सूर्य मंदिर के फोटो को भी आपने देखा होगा जिसमें सूर्य उगते समय मंदिर के खंभों के बीच से निकलता हुआ दिखाई देता है ।
यह सब बातें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि हमारे पूर्वज ज्ञान और विज्ञान में भी बहुत आगे थे । यह और बात है कि बीच का एक कालखंड ऐसा गुजरा जब हमने उन चीजों पर आगे कार्य करना छोड़ दिया या हमसे उन चीजों को छीन लिया गया ।
बाद मे अंग्रेजो और उनके द्वारा प्रशिक्षित लोगों के द्वारा एक ऐसा इतिहास हमारे ऊपर थोप दिया गया जो हमारे नकारा होने का प्रतीक था !
जो हमारे अज्ञानी होने का प्रतीक था !!

कालांतर में उसी शिक्षा पद्धति को हमारे तथाकथित स्वतंत्र नेताओं ने भी स्वीकार किया ..... भारत की अस्मिता और उसके इतिहास के विषय में बताने की

बजाय हमें यह बताया गया कि हमारे यहां आक्रमण करने वाले लोग हमसे ज्यादा सक्षम...

ज्ञानी.....

महान.....

आदि आदि थे ।

हमें यह सिखाया गया कि हमारे पूर्वज महाराणा प्रताप थे जो घास की रोटी खाते थे !

यह नहीं बताया गया कि वह बलशाली योद्धा थे जो विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अपने से कई गुना शक्तिशाली मुगलों के साथ लड़ने में सक्षम थे ।

कुछ कुछ ऐसा ही शिवाजी महाराज के प्रक्रम में भी हमें देखने को मिलता है । शायद ही इतिहास की किसी किताब में शिवाजी महाराज के बारे में या सनातन धर्म के बारे मे बहुत ज्यादा लिखा गया हो लेकिन बादशाह अकबर और दीन-ए-इलाही के विषय में आपको हर किताब में लिखा हुआ मिल जाएगा ....

यही सब पढ़कर हम बड़े हुए और इसी आधार पर हम अपने आप को कमजोर और गया गुजरा मानते रहे हैं ....

जबकि वास्तविकता इससे थोड़ी सी भिन्न है या यूं कह लीजिए बिल्कुल उल्टी है ।

भारत में हर विषय पर बहुत ज्यादा अनुसंधान और विचार विमर्श प्राचीन काल से होता रहा है ।

अगर ऐसा नहीं होता तो वैदिक गणित नाम की चीज आज लोगों के बीच आश्चर्य का विषय नहीं होती !

यदि यह वेद से जुडा है तो यह अपने आप साबित कर देता है कि यह सबसे पुराना वैज्ञानिक अनुसंधान है क्योंकि विश्व में वेदों को सबसे पुराना ग्रंथ माना जाता है .....

इन सारी चीजों को अगर आप छोड़ दें तो भी हमारी जो ज्योतिषीय गणना की पद्धति है वह आज से कई वर्ष पहले .....

जब कि आज के तथाकथित वैज्ञानिक पाश्चात्य देशों में सूर्य को पृथ्वी के चक्कर लगाने वाला ग्रह माना जाता था .....

तब भी हम अमावस्या पूर्णिमा और तिथियों की गणना स्पष्ट रूप में कर लेते थे ..... सूर्यास्त और सूर्योदय का समय भी निकाल लेते थे ।

और इसी आधार पर कई नगरों में सूर्य घड़ी या जंतर-मंतर भी बनाए गए हैं । जो सूर्य की छाया के हिसाब से समय का आभास कराते हैं । यह सब कुछ तभी संभव है जब आपके पास वैज्ञानिक गणना का आधार हो ।

उस मामले में हम सर्वश्रेष्ठ रहे हैं, लेकिन हमने अपनी उस परंपरा को छोड़ दिया है । उसे विकसित करने की दिशा में कोई विशेष कार्य नहीं किया है ....

जिसकी वजह से हम पिछड़ रहे हैं ।

जब तक हम अपनी चीजों को विकसित करने के विषय में विचार नहीं करेंगे तब तक इसी प्रकार अविकसित गरीब देश के रूप में ही मौजूद रहेंगे ।

इस विषय पर हम सभी को सोचने और कार्य करने की जरूरत है ताकि हम अपने गौरवशाली परंपरा को फिर से उसका वास्तविक सम्मान दिला सके !

खैर.....

लगभग आधे घंटे का समय बीता होगा .....

अचानक .....

एक नरमुंड अपने स्थान पर घूमने लगा और लगभग एक पूरा चक्कर लगाने के बाद वापस फिर रुक गया....

मैं इस अजीब से नजारे को देख रहा था तभी बाहर से मुझे जयकारे की आवाज आई ।

चिन्ना स्वामी का प्राकट्य

मैं तेजी से बाहर निकला तो देखा .....

एक सफेद वस्त्र धारी लगभग 50 वर्ष आसपास की आयु वाला बाबा और उसके 30-35 साल के तीन मुस्टन्डे शिष्य वहां गर्व भरी मुस्कान के साथ खड़े थे ..... और वहां खड़े सारे लोग उनके चरणों में दंडवत लेटे हुए थे ।

मैं समझ गया कि यही चिन्नास्वामी होगा ।

दंडवत प्रणाम वाला प्रकरण चल रहा था तभी चिन्नास्वामी बोला - उठो !

यह सुनते ही वे लोग उठकर खड़े हो गए ।

बाबा ने हवा में हाथ लहराया ।

पास में खड़े हुए आदमी ने अपना हाथ उसके सामने फैला दिया ।

बाबा ने हाथ में से भभूति प्रकट की और उसके हाथ में डाल दी । चमत्कार देखकर बाकी लोगों ने भी अपना अपना हाथ आगे बढ़ाया और सभी के हाथ में वह चमत्कारी भभूत बाबा ने डाल दिया । यह चमत्कार देखते ही फिर से एक बार जयकारों से मंदिर गूंज उठा ....

चिन्नास्वामी के चेहरे का गर्व देखते ही बनता था !
उसके शिष्य जयकारा लगाने में अपनी भरपूर भूमिका निभा रहे थे !
वे माहौल को जबरदस्त बनाने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रख रहे थे ।
उनके साथ एक महिला भी थी । जिसकी गोद में एक बच्चा था । वे लोग उस बच्चे के होने की खुशी में बाबा के पास आए थे । महिला ने उस बच्चे को बाबा के सम्मुख प्रस्तुत किया । बाबा ने उसके माथे पर अपना हाथ फेरा और अचानक उसके हाथ में एक गेंदे का फूल प्रकट हो गया जो उसने उस बच्चे के ऊपर रखकर बच्चे को वापस उसकी मां को सौंप दिया ।
यह सब देख कर भक्तगण प्रसन्नता से भर गए और उन्होंने फिर से मंदिर को जयकारों से गुंजायमान कर दिया ....

जिस प्रकार से बाबा और उसके शिष्य अचानक प्रकट हुए थे, उससे मुझे यकीन हो गया कि इस खंडहर में कोई न कोई ऐसा दरवाजा जरूर है । जहां से वे लोग बाहर निकले थे । अब मुझे उस दरवाजे को खोजना

था । मैं एक खंबे की आड़ में खड़ा हुआ था । जिसकी वजह से अभी तक उनमें से किसी की नजर मुझ पर नहीं पड़ी थी ।

तभी.....

एक जीप आकर वहां रुकी !

उसमें एक पुलिस का अधिकारी मौजूद था । वह उतरकर आया और उसने चिन्नास्वामी के चरण स्पर्श किए और उसे गाड़ी में बिठा कर लेकर चला गया ।

बाबा के जाने के बाद वे सारे लोग भी अपने अपने स्थान की ओर चले गए मैं उसी प्रकार से छुपा रहा ।

सभी लोगों का चला जाना मेरे लिए एक अच्छा संकेत था क्योंकि मुझे अपना कार्य करने अर्थात तिलस्म को खोजने के लिए समय और अवसर दोनों मिलने वाला था ।

पुलिस की जो गाड़ी वहां आई थी वह एक एंबेसडर कार थी । जिसके ऊपर लाल बत्ती लगी हुई थी ।

उसे देखकर मैंने अंदाजा लगा दिया कि वह किसी बड़े अधिकारी की गाड़ी होगी और वह जिला मुख्यालय में रहता होगा । इस हिसाब से कम से कम आने जाने में घंटे भर से ज्यादा का समय लगना ही था और यदि आधे

घंटे की भी उनकी मुलाकात होती तब भी मेरे पास डेढ़ घंटे का समय था जो मुझे पर्याप्त लग रहा था ।

उनके जाने के बाद मैंने थोड़ी देर और प्रतीक्षा की ! यह देखने के लिए कि कहीं कोई और वहां पर सुरक्षा के लिए मौजूद तो नहीं है, लेकिन वहां पर कोई भी मौजूद नहीं था ।

उस समय तक शाम ढलने लगी थी । मंदिर के परिसर में रोशनी की कोई विशेष व्यवस्था दिखाई नहीं दे रही थी । अंधेरी की काली चादर धीरे-धीरे आसपास की सारी चीजों को अपने अंदर समेटने के लिए आतुर होती नजर आ रही थी.....

सब कुछ उस अंधेरे में समा रहा था .....

घंटे की भी उनकी मुलाकात होती तब भी मेरे पास डेढ़ घंटे का समय था जो मुझे पर्याप्त लग रहा था ।

उनके जाने के बाद मैंने थोड़ी देर और प्रतीक्षा की ! यह देखने के लिए कि कहीं कोई और वहां पर सुरक्षा के लिए मौजूद तो नहीं है, लेकिन वहां पर कोई भी मौजूद नहीं था ।

उस समय तक शाम ढलने लगी थी । मंदिर के परिसर में रोशनी की कोई विशेष व्यवस्था दिखाई नहीं दे रही थी । अंधेरी की काली चादर धीरे-धीरे आसपास की सारी चीजों को अपने अंदर समेटने के लिए आतुर होती नजर आ रही थी.....

सब कुछ उस अंधेरे में समा रहा था .....

रहस्यमय महिला

तभी अचानक न जाने कहां से एक महिला हाथ में दीपक लिए हुए प्रकट हुई !

उसे देख कर मैं फिर से खंबे की ओट में हो गया ।

वह थोड़ा ठिठकी उसने चारों तरफ संदेह भरी नजरों से देखा....

लेकिन खंभा इतना बड़ा था कि मैं पूरा का पूरा उसके पीछे छुप सकता था ।

कुछ देर वह उसी प्रकार खड़ी रही फ़िर जब निश्चिंत हो गई कि कोई नहीं है.....

तो वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी और उस दीपक को शिवलिंग के पास में रख दिया और उसके मुख से शिव स्तोत्र का उच्चारण होने लगा ....

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं,
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जाती-चम्पक-बिल्व-पत्र-रचितं पुष्पं च धूपं तथा,
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥

सौवर्णे नवरत्न-खण्ड-रचिते पात्रे घृतं पायसं,
भक्ष्यं पञ्च-विधं पयो-दधि-युतं रम्भाफलं पानकम्।

शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूर-खण्डोज्ज्वलं,
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलम्,
वीणा-भेरि-मृदङ्ग-काहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया,
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोग-रचना निद्रा समाधि-स्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥
कर-चरण-कृतं वाक् कायजं कर्मजं वा,
श्रवण-नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्-क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥

बिल्कुल स्पष्ट दक्षिणात्य संस्कृत का उच्चारण....

जो इस बात का प्रतीक था कि वह भी एक कर्मकांडी महिला थी .....

मैं खंबे के पीछे अपने आप को छुपा कर खड़ा था ।
जब उसके मुख से शिव मानस पूजा स्तोत्र का उच्चारण होने लगा तो मैं समझ गया कि यह भगवान शिव की ओर मुख करके बैठी होगी .....
तो ....
मैंने खंबे की ओट से उसे देखने का प्रयास किया । वह लगभग 25-30 वर्ष की एक महिला थी । जो गहरे काले रंग की थी । ऐसा लग रहा था जैसे काले ग्रेनाइट के पत्थर से बनी हुई कोई मूर्ति हो । उसने एक सुर्ख लाल रंग की रेशमी जरी लगी हुई साड़ी पहनी हुई थी और वज्रासन की मुद्रा में बैठकर शिव स्तुति का पाठ कर रही थी ...
उसके गले में काले पत्थरों से बनी हुई एक माला लटक रही थी जिसके मनके दीपक की रोशनी में चमक रहे थे ।

वज्र चंडेश्वरी का सिद्ध पीठ और मंगला भैरवी

मैंने कपालिनी को फिर से याद किया और उस स्त्री के विषय में जानकारी देने के लिए कहा ।

उसने बताया- यह चिन्नास्वामी की भैरवी है । इसका नाम मंगला है । यह भी एक उच्च कोटि की साधिका है । इसकी सहायता से तुम इस तिलस्म में घुस सकते हो । तिलिस्म के अंदर मैं तुम्हारी किसी प्रकार की सहायता नहीं कर पाऊंगी..... यह ध्यान रखना .....वहां तुमको अपनी क्षमता और शक्तियों के आधार पर ही अपनी रक्षा करनी होगी ।

मैंने उससे पूछा - यह खंडहर देखने में कोई तांत्रिक शक्ति पीठ जैसा लगता है क्या तुम इसके बारे में कुछ बता सकती हो ?

कपालिनी बोली - यह वज्र चंडेश्वरी का सिद्ध पीठ है । यह एक नया नाम था.....

जो मैंने पहले नहीं सुना था । इसलिए मैं और उत्सुकता से कपालिनी की बात को सुनने लगा । उसने बताया कि यह शक्ति का एक अति प्रचंड स्वरूप है । जिसकी आराधना तामसिक शक्तियों के साधक करते हैं । यह उन्हीं का शक्तिपीठ है । आज से लगभग साढे चार सौ

साल पहले राजा हरिवर्धन ने इसे बनवाया था । वह स्वयं एक अत्यंत उच्च कोटि का तांत्रिक था । इस मंदिर के नीचे एक तिलस्म का निर्माण भी उसी के जीवन काल में हुआ था । वह मंदिर के गर्भ गृह के नीचे स्थित इस तिलस्म में बने हुए एक विशाल मूर्ति के सामने विभिन्न प्रकार की तांत्रिक क्रियाएं संपन्न करता था । इन तांत्रिक प्रक्रियाओं और अपनी साधना के बल पर उसने देवी वज्र चंडेश्वरी को सिद्ध कर लिया था । उन्हीं के आशीर्वाद से इस तिलस्म का निर्माण हुआ था । हरिवर्धन को उत्तराधिकारी नहीं मिल पाया इसलिए उसके जाने के पश्चात यह तिलस्म उसी प्रकार से लुप्त पडा रहा । इस तिलस्म का उल्लेख हरिवर्धन ने अपने द्वारा लिखे गए एक गोपनीय ग्रंथ में किया था । वह ग्रंथ सर्प के चमड़े पर लिखा हुआ था । उसे उसने एक गुप्त स्थान पर छुपा दिया था ।

चिन्नास्वामी का गुरु मणि स्वामी किसी प्रकार से इस किताब के बारे में जान गया था और उसने लगभग 15 वर्षों की मेहनत के बाद उस किताब को ढूंढ निकाला था । उस समय उनकी आयु लगभग 65 वर्ष की हो

चुकी थी । चिन्नास्वामी लगभग 40 वर्ष का था और उनका प्रिय शिष्य था । उस किताब को ढूंढने के बाद मणि स्वामी ने उसके अंदर के गोपनीय सूत्रों को जानने का प्रयास किया लेकिन वह सिर्फ यही जान पाया कि उस किताब का रहस्य जानने के लिए वज्र चंडेश्वरी की साधना करना अनिवार्य है और इस साधना में लगभग 6 महीने का समय लगना था ।

मणि स्वामी ने अपनी गुफा में इस साधना को प्रारंभ कर दिया । उसकी सुरक्षा के लिए चिन्नास्वामी गुफा के द्वार पर तैनात रहता था । मणि स्वामी को उस गुफा से बाहर नहीं निकलना था और 6 महीने तक कठोर तपस्या के बाद मणि स्वामी वज्र चंडेश्वरी की कृपा प्राप्त करने में कामयाब हो गया । उसे उस किताब का रहस्य पता चल गया ।

उस किताब के रहस्य को समझने के बाद वह चिन्नास्वामी को लेकर इस मंदिर के पास आया और यहां आने के बाद उस तिलस्म का दरवाजा दोनों ने मिलकर ढूंढ निकाला ।

उस समय यह मंदिर पूरी तरह खंडहर अवस्था में पड़ा हुआ था । उसकी स्थिति बिल्कुल ऐसी ही थी जैसी आज है । हां ! गंदगी और झाड झंखाड़ उगे हुए थे, जिसको उन दोनों ने मिलकर साफ किया । इसके बाद शुरू हुआ आगे की प्रक्रियाओं को जानने और समझने का प्रक्रम .....

मणि स्वामी चिन्नास्वामी को वज्र चंडेश्वरी की साधना के विषय में सारी जानकारी दे चुका था । एक प्रकार से वह चिन्नास्वामी को अपना उत्तराधिकारी मान चुका था ।

उस ग्रंथ को पढ़ लेने के बाद मणि स्वामी को पता चला कि तिलस्म का द्वार खोलने से पहले कुछ विशेष तांत्रिक क्रियाएं करना अनिवार्य था । जिनको किए बिना उस तिलस्म मे प्रवेश करना असंभव था ।

यह क्रियाएं जटिल थी और इसे करना मणि स्वामी के लिए उस उम्र में संभव नहीं था.....

यह देखते हुए मणि स्वामी ने चिन्नास्वामी को सारी प्रक्रियाएं समझाई ।

इसी तांत्रिक शिवलिंग के सानिध्य में बैठकर चिन्नास्वामी ने 24 दिनों तक विशेष साधना संपन्न की जिसके बाद तिलिस्म का दरवाजा खुल सकता था । साधना नित्य रात को बारह बजे से प्रारंभ होती थी और सुबह चार बजे तक चलती थी । यह पूरी साधना वीरासन में बैठकर करनी होती थी । जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे कि भगवान शिव को श्मशान में स्थित माना जाता है । ऐसा कहा जाता है कि उनका श्रंगार श्मशान की भस्म है.....

यहां से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर गांव का शमशान है । नित्य रात्रि स्नान करने के बाद निर्वस्त्र अवस्था में मसान की भस्म को लेप कर, चिता के निकट बैठ वज्र चंडेश्वरी के मंत्र की 108 आहुतियां चमेली के पुष्पों और स्वरक्त से चिता पर देनी होती थी । उसके बाद वहां से मंदिर तक आने के बाद इस शिवलिंग के पास बैठकर साधना करनी होती थी । ऐसा चिन्नास्वामी को नित्य करना था । 11 दिन तक लगातार उसने इसी प्रकार साधना को संपन्न किया। किसी प्रकार की समस्या नहीं आई। जिसके बाद चिन्नास्वामी और मणि स्वामी दोनों का मनोबल तथा उत्साह बढ़ गया उन्हें

लगने लगा कि वह अब इस पूरी प्रक्रिया को आसानी से संपन्न कर लेंगे लेकिन वह दोनों आगे आने वाले खतरे से अनजान थे !

उन्हें पता नहीं था कि भविष्य के गर्भ में क्या है ।

बारहवें दिन जब चिन्नास्वामी श्मशान में पहुंचा तो वहां का माहौल बिल्कुल बदला हुआ था ।

वहां पर दो जिताए चल रही थी या यूं कहिए कि हल्की-हल्की सुलग रही थी । आप लोग भी जानते होंगे कि शमशान में दाह संस्कार का कार्यक्रम दिन के समय किया जाता है और आमतौर पर चार पांच बजे से पहले जलाने की प्रक्रिया लगभग पूरी हो जाती है ।

रात के ग्यारह बजते बजते कुछ सुलगते हुए अंगारों और लकड़ी के चंद टुकड़ों के अलावा चिता में ऐसा कुछ भी बाकी नहीं बचता जिसे देख कर आपको लगे कि उसमें कभी एक मनुष्य की देह भी मौजूद रही होगी ।

एक पूरे मानव की देह जो एक दिन पहले तक चलती फिरती थी .....

अलग-अलग प्रकार के कार्यों में लगा हुआ एक मानव जो गरीबी के दुख से सताया हुआ भी हो सकता है और अमीरी के गर्व से नहाया हुआ अभी ।

फॉरेंसिक साइंस को छोड़ दे तो आप मनुष्य की उन हड्डियों के माध्यम से यह भी नहीं जान सकेंगे कि वह

कौन था ?

पुरुष था ?

स्त्री था ?

जवान था ?

बूढ़ा था ?

अमीर था ?

या गरीब था ?

सब जल जाने के बाद एक जैसे ही दिखाई देते हैं ।

ठीक वैसे ही.....

जैसे..... जन्म लेने के समय सभी शिशु नग्न अवस्था में गर्भ से बाहर आते हैं.....बिना कुछ लिए !

ठीक वैसे ही देह त्याग करने के बाद जब उसका अंतिम संस्कार हो जाता है तब वह भी उसी प्रकार पंचतत्व में विलीन हो जाता है .....

अपने अस्तित्व को मिटाता हुआ.....

समभाव में !

संभवत: अघोरियों के श्मशान में निवास करने के पीछे मन के अंदर के सभी प्रकारों को विकारों को इसी प्रकार

भस्म में भस्मीभूत करके समाप्त कर देने की भावना भी एक कारण अवश्य होगी ।

दोनों चिताएँ लगभग अपने अंतिम चरण पर जल रही थी .....
जहां पर कुछ गिनती के सुलगते हुए अंगारों के निशान दिखाई देते हैं बाकी सब कुछ राख में ढका होता है ।
ऐसे ही चिता के पास पहुंचकर वह अपना नित्य का कार्यक्रम करता था इसलिए वह प्रसन्न हुआ कि आज के लिए भी व्यवस्था है .....।
लेकिन उनमें से एक चिता के पास उसे एक मानव आकृति दिखाई दे रही थी .....
यह चिंता का विषय था ।
साधना में विशेष रूप से मसान साधना मे एकांत होना काफी लाभदायक होता है । ऐसी स्थिति में शक्तियां ज्यादा सहजता से प्रस्तुत होती है ।
कई सिद्ध श्मशानों में..... जैसे मणिकर्णिका घाट है ..... वहां एकाधिक साधक बैठते हैं..... लेकिन गांव के श्मशान में आमतौर पर डर के मारे कोई नहीं जाता । इसलिए चिन्नास्वामी को वहां एकांत

मिलता था । आज इस प्रकार से एक दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति से वह थोड़ा विचलित हुआ ।

उसे समझ में नहीं आया कि यह कौन आ गया ?

अंधेरे की वजह से केवल आकृति दिखाई दे रही थी .....

स्पष्ट कुछ भी नहीं था.....

बाल लंबे लंबे थे.....

जो कि सामान्यता अघोरियों के और श्मशान साधकों के साथ रहती है .....

यही सोचता हुआ वह आगे बढ़ रहा था .....

क्योंकि दूसरी चिता भी उसी चिता के बगल में थी ।

जब वह थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसे स्पष्ट हुआ कि यह कोई पुरुष नहीं .....

बल्कि यह तो कोई महिला है ।

इस बात ने उसके भीतर की उत्सुकता को और जगा दिया !

वह आगे बढ़ता रहा और जब चिता के ठीक सामने पहुंचा तो उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा.....

मिलता था । आज इस प्रकार से एक दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति से वह थोड़ा विचलित हुआ ।

उसे समझ में नहीं आया कि यह कौन आ गया ?

अंधेरे की वजह से केवल आकृति दिखाई दे रही थी .....

स्पष्ट कुछ भी नहीं था.....

बाल लंबे लंबे थे.....

जो कि सामान्यता अघोरियों के और श्मशान साधकों के साथ रहती है .....

यही सोचता हुआ वह आगे बढ़ रहा था .....

क्योंकि दूसरी चिता भी उसी चिता के बगल में थी ।

जब वह थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसे स्पष्ट हुआ कि यह कोई पुरुष नहीं .....

बल्कि यह तो कोई महिला है ।

इस बात ने उसके भीतर की उत्सुकता को और जगा दिया !

वह आगे बढ़ता रहा और जब चिता के ठीक सामने पहुंचा तो उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा.....

वह लगभग 20-25 वर्ष की आयु की एक युवा महिला थी । जो उस चिता के समक्ष आंखें बंद करके ध्यानस्थ मुद्रा में बैठी हुई थी !

कुछ क्षणों तक चिन्नास्वामी संकोच में खड़ा रहा .....

फिर उसने अपना नित्य का प्रक्रम पूरा किया और चिता की भस्म को अपने शरीर पर मलने लगा .....

चिता भस्म को शरीर पर मलने के बाद वह वापस मंदिर की ओर आने के लिए रवाना हुआ.....

उसके रवाना होने के पहले तक वह महिला उसी प्रकार ध्यान की अवस्था में बैठी हुई थी ।

जब वह श्मशान की परिधि से बाहर निकल रहा था तभी एक भयंकर अट्टहास गूंज उठा ....

ऐसा लगा जैसे हड्डियां आपस में टकरा रही हो.....

एक भयानक अट्टहास .....

जिसे सुनकर उसकी आत्मा भी कांप गई !

मन के अंदर प्रबल इच्छा हुई कि पलट कर देखें कि वह कौन है ?

जो इतना जोरदार अट्टहास कर रही है !

उसे लगा कि वह सुकोमल युवती जो चिता के बगल में साधनारत थी वह तो नहीं हो सकती.....

क्योंकि अट्टहास का स्वरूप प्रबल और राक्षसी था .....
ऐसा अट्टहास जो किसी विशालकाय स्त्री के मुख से निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था .....
पलटकर देखने की उसकी बड़ी इच्छा हो रही थी । बड़ी मुश्किल से उसने अपने मन को समझाया .....
क्योंकि पलट कर देखने का मतलब था....
साधना में किसी प्रकार की बाधा.....
जिसके लिए उसके गुरु मणिस्वामी ने साफ मना किया हुआ था .....
कि.....
चिता भस्म लगाने के बाद मंदिर तक पहुंचने के प्रक्रम में कुछ भी हो जाए.....
पलट कर देखना भी नहीं है.....
और वापस जाना भी नहीं है । ऐसी स्थिति में साधना खंडित हो सकती है ।
इस बात का ध्यान रखने के लिए उसके गुरु मणि स्वामी ने विशेष रूप से कहा था ।
इस बात को ध्यान रखते हुए वह मन को कड़ा करके धीरे-धीरे मंदिर तक पहुंच गया । उस दिन का पूजन

करते समय उसके मन में एक अजीब सा भय और जिज्ञासा दोनों व्याप्त रही !

पूजन संपन्न करने के बाद वह साधना स्थल पर ही सो गया .....

जैसा कि उसका नित्य का क्रम था ।

उस रात उसने एक अजीब सा सपना देखा....

जिसमें वह चिता के समीप उसी साधिका के साथ बैठा हुआ था.....

और कुछ विशेष क्रियाएँ सम्पन्न कर रहा था !

यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ ....

साथ ही मन में यह भाव भी आया कि.....

संभव है कि वह आने वाले समय में उसके साधना में सहयोगी बनेगी !

यही सब सोचता हुआ वह वापस सो गया !

अगले दिन सुबह उसने अपने गुरु को उसके विषय में बताया ।

मणि स्वामी ने अपने तांत्रिक झोले में से ग्रंथ को बाहर निकाला.....

जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया था कि वह एक विचित्र तांत्रिक ग्रंथ था। जो सर्प की चमड़ी पर लिखा हुआ था .....

सर्प की चमड़ी.....

अर्थात मुश्किल से 2 या 3 इंच की चौड़ाई और लगभग 10 इंच लंबा वह ग्रंथ था.....

उसमें कुल मिलाकर चार पत्ते थे !

जिसमें से शुरू के दो पत्तों में गोपनीय विधि लिखी हुई थी और पीछे के दो पत्ते खाली थे ।

जब मणि स्वामी ने विधि को पढ़ा था तब उसे इस बात पर थोड़ा आश्चर्य अवश्य हुआ था कि खाली पन्ने क्यों रखे गए हैं ?

लेकिन फिर उसे लगा कि हो सकता है कि किताब ज्यादा बड़ी बनाई गई होगी .....

उसमें लिखने के लिए सामग्री कम रही होगी इसलिए पीछे के दो पत्ते खाली थे.....

मणि स्वामी ने उस ग्रंथ को निकाला और पन्नों को पलटा .....

पहला पन्ना जिसे वह पहले भी पढ़ चुका था.... उसमें लिखी हुई विधि का अनुसरण करते हुए वह साधना संपन्न कर चुका था उसने उसे दोबारा पढ़ा !

लेकिन उसमें ऐसी कोई भी चीज ऐसी उसे दिखाई नहीं दी जो उससे छूट गई हो .....

जैसा जैसा उसमें लिखा था वह सब कुछ उसने किया था .....

पन्ना पलटने के बाद दूसरे पत्ते पर जो विधि लिखी हुई थी .....

वह भी वह कर चुका था ।

दोबारा पढने पर भी उसे उसमें ऐसा कुछ नहीं लगा जो उससे छूट गया हो । कुल मिलाकर दो ही पत्ते थे जिसमें कुछ लिखा हुआ था । आगे के पत्ते खाली थे ....

इसलिए उसने उस ग्रंथ को वापस रखने का मन बना लिया !

तभी.....

किसी आंतरिक भावना के वशीभूत होकर उसने दूसरे पत्ते को पलटा और तीसरे खाली पत्ते की ओर देखा.....

और आश्चर्यचकित रह गया !

क्योंकि.....
तीसरे पत्ते में स्पष्ट अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था ।
उसने अपनी आंखों को मसलकर दोबारा से देखा.....
क्योंकि यह वही पत्ता था जो बिल्कुल खाली था ,
लेकिन अब उसमें स्पष्ट अक्षर उभरे हुए थे ।

उसने उनको ध्यान से पढा । उसमें एक रहस्यमय
बात लिखी हुई थी जो कि साधना के अंतिम चरण
से संबंधित थी उसे पढ़कर वह थोड़ा विचलित हुआ
लेकिन फिर कुछ सोच कर वह तटस्थ हो गया ।

तीसरे पन्ने के इस प्रकार स्पष्ट होने से उसे यह समझ में
आ गया कि यह क्योंकि तांत्रिक ग्रंथ है ..... इसलिए
पहली प्रक्रिया को संपन्न कर लेने वाले व्यक्ति के लिए
ही तीसरा पत्ता खुल सकता है ।
उसे पढ़ लेने के बाद उसने चौथे पन्ने को खोल कर
देखा.....
वह पहले की तरह ही खाली था !
यानि शुरु में जो देखा था वह सही था ।
आखिरी के 2 पत्ते खाली थे और अब उसमें से एक पत्ते
पर विधि उभर कर सामने आ गई थी ।

मणि स्वामी को लगा कि चौथे पन्ने पर भी कुछ लिखा होगा .....

वह भी दिखना चाहिए.....

मणि स्वामी फिर से ध्यान की अवस्था में चला गया और उसने अपने इष्ट और गुरु को याद करके मार्गदर्शन की प्रार्थना की .....

उसे संकेत मिला कि जिसने साधना की है वही आगे की बात समझ पाएगा !

पहले साधना प्रक्रम को मणि स्वामी ने संपन्न किया था , इसलिए आगे की प्रक्रिया का तीसरा पन्ना उसके सामने स्पष्ट हो चुका था ।

लेकिन वह प्रक्रिया मणि स्वामी ने स्वयं संपन्न न करके चिन्नास्वामी से संपन्न करवाया था । यह बात ध्यान में आते ही मणि स्वामी को लगा कि इसी वजह से चौथा पन्ना उसके सामने स्पष्ट नहीं हो पा रहा है ....

उसने प्रणाम करके चिन्नास्वामी को आवाज लगाई !

चिन्नास्वामी अंदर आ गया .....

मणि स्वामी ने उसे अपने पास आकर बैठने के लिए कहा और उसे तीसरा पन्ना दिखाया !

उसमें साधना की जो विधि लिखी हुई थी उसी के अनुसार चिन्नास्वामी साधना कर रहा था .....
लेकिन वह तीसरा पन्ना देखकर चिन्नास्वामी ने मणि स्वामी की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा....

मणि स्वामी ने चिन्नास्वामी को उस पन्ने पर लिखा हुआ पढ़ने के लिए कहा ।
यह सुनकर चिन्नास्वामी आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि उसे वह पन्ना बिल्कुल खाली दिखाई दे रहा था .....
उस पन्ने पर लिखे हुए अक्षर केवल मणि स्वामी को दिख रहे थे .....
क्योंकि पहले के दो पन्नों पर लिखी हुई साधना वह पूर्ण कर चुका था इसलिए तीसरा पन्ना केवल उसे ही दिख रहा था ।
चिन्नास्वामी ने कहा - गुरुजी, यह पन्ना तो खाली है , इसमें से मैं क्या पढ़ूँ ?
यह सुनकर मणि स्वामी ने मन ही मन विचार किया कि हो सकता है कि तीसरी पन्ने पर लिखी हुई विधि को कर लेने की वजह से इसे चौथा पन्ना अवश्य दिखाई देगा ...

उसने पन्ने को पलटा !
चौथे पन्ने को देखते ही चिन्नास्वामी के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई !
उसने मणि स्वामी से कहा - हां ! इसमें लिखी हुई चीजें मुझे दिख रही है ।
मणि स्वामी को पढ़कर बताया ! वे गोपनीय सूत्रों के रूप में लिखी हुई थी जिसे मणि स्वामी जैसा विद्वान गुरु ही समझ सकता था .....

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे हमारे पूर्वजों में से कई सिद्ध पुरुषों ने गोपनीय चीजों को लिखने के लिए ऐसे सूत्रों का सहारा दिया जिन को समझना थोड़ा सा जटिल है ।
उदाहरण के लिए एक पंक्ति है .....

अजा सहेली तासु रिपु, जा सुत को भरतार !
ताके सुत के मित्र को भजिए बारंबार !!

इसका अर्थ आपको निकालने में थोड़ा समय लगेगा और दिमाग भी लडाना पड़ेगा.... तब जाकर आप

लिखने वाले के मर्म को समझ पाएंगे कि वह आखिर किस को भजने के लिए बोल रहा है ।

अजा का मतलब होता है बकरी !
बकरी की सहेली मतलब भेड़ !
रिपु अर्थात शत्रु ! भेड़ का शत्रु होता है बबूल का कांटा क्योंकि वह उसके बालों में उलझ जाता है तो निकलता भी नहीं है और उसे बार-बार चुभता रहता है ।
बबूल का पेड़ पृथ्वी के गर्भ से निकलता है इसलिए वह पृथ्वी का सुत या पुत्र हुआ । पृथ्वी का भरतार यानी पति इंद्र को माना जाता है । इंद्र का पुत्र है अर्जुन और अर्जुन का मित्र है कृष्ण ।
यानी लिखने वाला कहना चाहता है कि भगवान कृष्ण को बार-बार भजना चाहिए....
यही बात बताने के लिए उसने इस प्रकार की पहेली बनाई है ।

चौथे पन्ने पर लिखी हुई पहेली भी कुछ इसी प्रकार की जटिलता से युक्त थी, जिसे सुनने के बाद मणि स्वामी को साधना के लिए बचे हुए बाकी सारे तत्व और आवश्यकताएं स्पष्ट हो गई ।

उसे यह भी समझ में आ गया कि इस साधना के लिए एक स्त्री शक्ति का होना जरूरी है ....

संभवतः इसीलिए मसान में वह स्त्री शक्ति उपस्थित हुई है .....

जो साधना के आखिरी चरण में चिन्नास्वामी के साथ साधना की पूर्णता में उसका सहयोग करेगी ..... अर्थात भविष्य में वह चिन्नास्वामी की भैरवी बनेगी । यह सारी जानकारी उसे समझ में आ गई और उसने चिन्नास्वामी को विस्तार से यह बात समझा दी ।

चिन्ना स्वामी इस बात से प्रसन्न हुआ कि देवी की कृपा से अब तिलस्म का दरवाजा जल्द ही खुल जाएगा .....

किसी भी गोपनीय साधना के लिए आवश्यक भैरवी की जानकारी प्राप्त करना सबसे कठिन कार्य होता है और स्वयं उसकी प्राप्ति सबसे कठिन लक्ष्य !

यहां देवी की कृपा से वह स्वयं उसी श्मशान में उपस्थित हो चुकी थी , जहां पर चिन्नास्वामी नित्य जा रहा था !

यह सारे संकेत सफलता की ओर इंगित कर रहे थे ।

यह सोचकर मणि स्वामी मन ही मन अपने शिष्य की साधना पर गर्व महसूस कर रहा था । जब शिष्य गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलता हुआ सफलता की ओर

अग्रसर होता है तो गुरु मन ही मन प्रसन्न होता है .... जो कि स्वाभाविक ही है....
ठीक ऐसा ही मणि स्वामी के साथ हो रहा था !
चिन्ना की साधना चलती रही !

अगले एक सप्ताह तक चिन्नास्वामी को श्मशान में उस साधिका की उपस्थिति नहीं दिखाई दी । वह नित्य इस उम्मीद के साथ जाता कि हो सकता है आज मुलाकात हो जाए .....
लेकिन वह दिखाई नहीं दी !
इससे चिन्नास्वामी थोड़ा सा चिंतित अवश्य हुआ, लेकिन उसे विश्वास था कि देवी की कृपा से समय आने पर वह स्वयं उपस्थित हो जाएगी । वह नित्य अपना कार्य करता रहा इस प्रकार से 18 दिन व्यतीत हो चुके थे । उन्नीसवीं रात्रि जब चिन्नास्वामी श्मशान में पहुंचा तो वह रहस्यमय स्त्री वहां पर मौजूद थी और उसकी बगल में बंधा हुआ था एक काला बकरा । चिन्नास्वामी के वहां पहुंचते ही उस स्त्री ने उसे अपने पास आने का इशारा किया चिन्नास्वामी वहां पहुंचा । साधिका ने उसे निर्वस्त्र होकर बैठने का निर्देश दिया !

चिता के एक तरफ वो बैठी थी और दूसरी तरफ चिन्नास्वामी बैठा हुआ था । उसके बगल में एक तलवार पहले से रखी हुई थी जो संभवतः बली के लिए लाई गई होगी । इससे पहले चिन्नास्वामी मुर्गे की बलि दे चुका था लेकिन बकरे की बलि उसने आज तक नहीं दी थी....

इसलिए वह भी थोड़ा संकोच और थोड़े उत्साह के साथ बैठा हुआ था ।

उस साधिका ने चिन्नास्वामी को अपना नित्य का पूजन संपन्न करने का निर्देश दिया । चिन्नास्वामी ने अपनी सामग्री निकाल कर सामने रख दी और स्वरक्त को मिलाकर चमेली के पुष्पों की आहुतियां देना प्रारंभ कर दिया ।

उसकी नजर अब भी उस साधिका पर थी !

वह आंख बंद करके ध्यान मुद्रा में दिखाई दे रही थी !

जब चिन्नास्वामी की सौ आहुतियाँ पूर्ण हो चुकी थी तभी उसने चिन्नास्वामी को रुकने का निर्देश दिया !

वह ठिठक गया और उसने उस स्त्री की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा !

उस रहस्यमय स्त्री ने उसे रुकने का इशारा किया और कुछ विचित्र से मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ कर दिया ।
जैसे जैसे उसका मंत्र का उच्चारण आगे बढ़ता जा रहा था.....
चिता की लपटों की तीव्रता भी धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी .....
जो चिता अंगारों की शक्ल में परिवर्तित हो चुकी थी वह चिता धीरे से भभकने लगी ....
उसके ठीक बीच से एक अग्निशिखा ऊपर की ओर लप-लप करती हुई आ रही थी .....
जो लगभग 1 फुट तक ऊपर आ चुकी थी !
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई गैस का बर्नर अचानक से वहां जला दिया गया हो !
आग की लपट धीरे धीरे बढ़ते हुए 6 फुट की ऊंचाई तक पहुंच गयी !
अब उस लपट में एक स्त्री आकृति स्पष्ट दिखाई दे रही थी ।
उस आकृति के प्रकट होते ही वह अपने स्थान पर उठ खड़ी हुई और उसने पास खड़े हुए बकरे को किसी छोटे बच्चे की तरह उठा लिया ।

वह बकरा काफी मोटा तगड़ा था जिसे शायद चिन्नास्वामी भी आसानी से नहीं उठा पाता .....

उस साधिका ने उसे किसी गुड्डे की तरह उठा लिया और उसे लेकर चिन्नास्वामी के पास आकर खड़ी हो गई और उसे इशारा किया । चिन्नास्वामी इशारा समझ गया और तलवार लेकर उसने बकरे की गर्दन को एक झटके में काट दिया ....

बकरे की गर्दन कटते ही एक जोर का अट्टहास गूंज उठा .....

यह उसी आकृति के मुख से आ रहा था जो अग्निशिखा में से प्रकट हो रही थी ।

उस साधिका ने आगे बढ़कर उस बकरे के धड़ को उस आकृति की ओर बढ़ा दिया !

उसमें से दो मजबूत हाथ जो बिल्कुल काले रंग के थे .....

आगे की तरफ बढ़े !

उन्होंने उस बकरे को अपने हाथों में समेट लिया और वह बकरा शून्य मे गायब हो गया !

वह लपट और भभकने लगी और लगभग 10 फूट तक उठ गयी ....

वह बकरा काफी मोटा तगड़ा था जिसे शायद चिन्नास्वामी भी आसानी से नहीं उठा पाता .....

उस साधिका ने उसे किसी गुड्डे की तरह उठा लिया और उसे लेकर चिन्नास्वामी के पास आकर खड़ी हो गई और उसे इशारा किया । चिन्नास्वामी इशारा समझ गया और तलवार लेकर उसने बकरे की गर्दन को एक झटके में काट दिया ....

बकरे की गर्दन कटते ही एक जोर का अट्टहास गूंज उठा .....

यह उसी आकृति के मुख से आ रहा था जो अग्निशिखा में से प्रकट हो रही थी ।

उस साधिका ने आगे बढ़कर उस बकरे के धड़ को उस आकृति की ओर बढ़ा दिया !

उसमें से दो मजबूत हाथ जो बिल्कुल काले रंग के थे .....

आगे की तरफ बढ़े !

उन्होंने उस बकरे को अपने हाथों में समेट लिया और वह बकरा शून्य मे गायब हो गया !

वह लपट और भभकने लगी और लगभग 10 फूट तक उठ गयी ....

उसने चिन्नास्वामी को बचे हुए 8 आहुतियों को प्रदान करने का निर्देश दिया .....

चिन्नास्वामी ने बची हुई 8 आहुतियां संपन्न की और उसके बाद पुनः साधिका की ओर देखा.....

आंख बंद कर आकाश की ओर अपने दोनों हाथ उठाकर खड़ी थी .....

जैसे शून्य में से किसी को आमंत्रित कर रही हो !

या किसी को अपना पूजन समर्पित कर रही हो !!

उसने अपनी आंखें खोली बहुत उस कटे हुए बकरे के मुंड को समर्पित करने का निर्देश दिया ।

चिन्नास्वामी आगे बढ़ा और उस मुंड को लेकर उस आकृति की ओर बढ़ा दिया .....

उस आकृति में से एक लगभग चार फुट लंबी और लगभग आधा फुट चौड़ी जीभ बाहर निकली और उसने मुंड को ठीक वैसे ही लपक लिया जैसे कोई गिरगिट कीड़े मकोड़े को अपनी जीभ से लपक लेता है .....

वह मुंड भी उसी प्रकार से गायब हुआ जैसे बकरे का शरीर का हुआ था .....

मुंड के गायब होते ही फिर से एक अट्टहास गूँजा !

श्मशान में स्थित पेड़ पौधे अचानक हिलने लगे और हवा तेजी से चलने लगी .....

श्मशान में स्थित कुत्ते अचानक तेज सुर में भोंकने लगे ! ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उन्होंने किसी को देख लिया हो !

फिर अचानक उनके भोकने की आवाज रोने की आवाज में बदलती चली गई.....

सारे कुत्ते एक ही सुर में तेज आवाज में रोने लगे !

कुछ पल मे सब कुछ शांत हो गया !

वहाँ सन्नाटा सा छा गया .....

सारी आवाजें गायब हो गई ।

हवा सांय सांय करने लगी !

वातावरण भारी हो गया ..... और उसके साथ ही वह अग्नि की लपट अचानक जमीन पर सिमटती हुई गायब हो गई !

अचानक उस चिता में से काला गहरा धुंआ निकलने लगा । वह धुआं इतना गहरा था कि कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था ।

चिन्नास्वामी अपनी आंखें मलने लगा ! उसकी आँखों मे तीव्र जलन उठने लगी .....

कुछ देर में वह धुआ छटने लगा .....

जब वह छट गया तो चिन्नास्वामी ने पलट कर देखा तो वह साधिका भी अपने स्थान से गायब हो गई थी । उसने आसपास घूम कर देखा लेकिन उसका कोई पता नहीं था .....

वह चिता भी अपने सामान्य रूप में आ चुकी थी !

चिन्नास्वामी कुछ देर तक इस घटना के विषय में सोचता हुआ खड़ा रहा !

कुछ देर पहले जो हुआ.....

वह सच था या उसकी कल्पना !

ना तो वहां पर वह साधिका मौजूद थी !

ना उस बकरे के निशान मौजूद थे !

और ना ही चिता के ऊपर उठी हुई विचित्र आकृति ।

कुछ देर उसी प्रकार ऊहापोह में खड़े रहने के बाद चिन्नास्वामी को ध्यान आया कि पूजन का समय हो रहा है भागता हुआ मंदिर की ओर बढ़ने लगा । इस बार जब वह शमशान की परिधि से बाहर निकला तो उसे फिर से एक अट्टहास की आवाज सुनाई दी .....

जो बिल्कुल वैसी ही थी जैसी उस आकृति के स्पष्ट होने पर सुनाई दे रही थी ।

वह तेजी से दौड़ता हुआ मंदिर पहुंच गया , 19वीं रात्रि का साधना क्रम उसने पूरा कर लिया । जप पूरा होते ही मंदिर में घंटे की ध्वनिया आने लगी और उसके साथ ही जलहरी पर बनी हुई जानवरों की आकृतियां अपने स्थान पर आगे पीछे हिलने लगी । चिन्नास्वामी आश्चर्य से इन सारी गतिविधियों को देख रहा था .....

उसके देखते देखते अचानक खंभों के ऊपर लगे हुए मुंड अपने स्थान पर घूमने लगे.....

ऐसा लग रहा था जैसे वे चकरिया हो जो किसी डंडे के ऊपर घूम रही हैं ।

लगभग दो तीन मिनट तक वही नजारा रहा और उसके बाद शांति छा गई ।

इसके लगभग आधा घंटे तक चिन्नास्वामी किसी और घटना की अपेक्षा करता हुआ वहां बैठा रहा लेकिन कुछ भी नहीं हुआ सब कुछ शांत हो चुका था उसके बाद उसे भी नींद आ गई और वह सो गया ।

अगले दिन सुबह उसने अपने गुरु को रात में घटी हुई घटनाओं के विषय में बताया । उसे सुनकर मणि स्वामी

को समझ में आ गया कि साधना क्रम सही ढंग से आगे की ओर बढ़ रहा है और तिलस्म खोलने की प्रक्रिया प्रारंभ हो रही है ....

यह शुभ संकेत था !

उसने चिन्नास्वामी को सावधानी से अपनी साधना को आगे बढ़ाने का निर्देश दिया और कहा कि जो हो रहा है .....

वह अच्छा है और तिलस्म के खुलने का मार्ग जल्द ही सामने आ जाएगा .....

यह सुनकर चिन्नास्वामी प्रसन्न हुआ ।

शिवलिंग का रहस्य

बीसवीं रात को चिन्नास्वामी शमशान पहुंचा । उसे उम्मीद थी कि वहां पर फिर उस साधिका से मुलाकात होगी । लेकिन वहां कोई नहीं था ।

चिता भस्म शरीर पर मल कर वह वापस जाने लगा ।

तभी.....

एक काली धुंधली आकृति उसके सामने आकर खड़ी हो गई ।

उसने आगे बढ़ने के लिए कदम बढ़ाया....

लेकिन....

ऐसा लगा.....

जैसे किसी चीज ने उसे रोक दिया हो । उसके पांव जमीन से नहीं उठ पा रहे थे । जैसे पैर वहीं पर चिपक गया गए हो । उसने बहुत जोर लगाया लेकिन जमीन पर वह काली आकृति उसके ठीक सामने खड़ी हुई थी । उसके पैर धीरे-धीरे भारी हो रहे थे नीचे से ऊपर की तरफ शरीर सुन्न होते जा रहा था ।

चिन्नास्वामी समझ गया कि यह किसी प्रकार का परीक्षण या स्तंभन है । यदि वापस पहुंचना है तो जितना जल्दी हो सके उसका निवारण करना पड़ेगा

अन्यथा पूरा शरीर स्तंभित हो कर किसी कार्य के योग्य नहीं बचेगा । इसका निवारण करने के लिए उसे भी मंत्र प्रयोग करना पड़ेगा । मन ही मन उसने अपने गुरु और देवी वज्र चंडेश्वरी को याद किया तथा रक्षा मंत्र का उच्चारण करते हुए उस आकृति की तरफ तीन बार फूँक मारी ।

वह आकृति चीखते हुए वहां से गायब हो गई । अब उसके पांव फ्री हो चुके थे और वह चलता हुआ वापस मंदिर पहुंच गया ।

मंदिर में एक अजीब सा भारीपन बिखरा हुआ था ऐसा लग रहा था जैसे कोई शक्ति वहां पर विराजमान हो । पृथ्वी पूजन आदि संपन्न करने के बाद जैसे ही वह अपनी क्रियाओं में आगे बढ़ा जलहरि के ऊपर बनी हुई आकृतियां फिर से उसी प्रकार हिलने लगी जैसे पिछली रात्रि को हिल रही थी ।

कुछ समय के बाद शिवलिंग का आधार अपने स्थान से ऊपर उठ गया । वह एक स्तंभ की तरह ऊपर उठता चला गया और लगभग 6 फुट की ऊंचाई पर जाकर

स्थिर हो गया । यह ऊंचाई लगभग उतनी ही थी जितनी ऊंचाई पर वे तीन मुंड रखे हुए थे ।

चिन्ना का मंत्र जाप जारी था और वह शिवलिंग उसी उठी हुई अवस्था में अपने स्थान पर धीरे-धीरे घूमने लगा.....

ऐसा लग रहा था जैसे उसके नीचे कोई मोटर लगी हुई हो और उसे धीरे-धीरे घुमा रही हो .....

लगभग 10:15 मिनट तक ऐसी ही हलचल होती रही और फिर अचानक वह शिवलिंग एक रहस्यमय आभा से भर उठा !

काले रंग के शिवलिंग के चारों तरफ हल्के पीले रंग का आभामंडल ऊभरने लगा !

यह बड़ी विचित्र सी बात थी क्योंकि उस अंधेरे स्थान पर उस शिवलिंग को प्रकाशित करने लायक कोई भी चीज मौजूद नहीं थी !

सिवाय चिन्नास्वामी के सामने रखे हुए एक छोटे से दीपक के .....

मणि स्वामी के कथनानुसार उसे पूरा पूजन उसी प्रकार केवल उस दीपक के सानिध्य में ही करना था ।

बाकि पूरा खंडहर सुनसान और अंधेरे से भरा हुआ था ।

ऐसी स्थिति में उस शिवलिंग के उस प्रकार प्रकाशित होने के पीछे एक ही कारण हो सकता था और वह था उसके अंदर से निकलता हुआ प्रकाश ..... स्वप्रकाश .....

शुरू में वह आभामंडल शिवलिंग से लगभग 3 इंच की दूरी तक दिखाई देता रहा । इनको देखकर आश्चर्यचकित होता हुआ चिन्नास्वामी अपने पूजन में लगा हुआ था । धीरे-धीरे शिवलिंग के बने हुए आभामंडल का आकार बढ़ने लगा और वह लगभग 1 फुट के आकार का हो गया ।

जल हरि के ऊपर बनी हुई आकृतियां अचानक जैसे जीवित हो गई और कुछ शिवलिंग के चारों तरफ घूमने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे जानवर जंगल में घूम रहे हों ।

बढ़ते बढ़ते शिवलिंग का आभामंडल इतना बड़ा हो गया कि अब चिन्नास्वामी भी उसके घेरे में आ गया था । घेरा अंदाजन लगभग 4 या 5 फुट के घेरे का रहा होगा .....

उधर शिवलिंग का आभामंडल धीरे-धीरे बढ़ रहा था और अब वह उस आभामंडल के पूरे घेरे में आ चुका था । उसके शरीर के पीछे 1 फुट तक वह आभामंडल फैल चुका था ।

उसका बुरी तरह हिलता हुआ शरीर अब स्थिर हो चुका था ।

लगभग 5-10 मिनट तक वह उसी अवस्था में बैठा रहा और उसके बाद उसकी आंखें अपने आप बंद होने लगी । उसे अपने मस्तक के बीच वाले भाग में तीव्र पीडा का आभास होने लगा और वह अपने स्थान पर गिरकर बेहोश हो गया ।

अपने चेहरे पर पानी के छींटे पड़ने से उसकी बेहोशी टूटी ....

उसने देखा कि वह अपने आसन पर गिरा हुआ है और मणि स्वामी अपने हाथ में लिए हुए बर्तन से उसके ऊपर पानी छिड़क रहे हैं । कुछ देर के बाद चिन्ना सामान्य हुआ और उसने मणि स्वामी को रात में हुई घटनाओं के विषय में बताया ।

लेकिन जैसा विवरण उसने दिया था.....

वैसा कुछ भी वहां दिखाई नहीं दे रहा था !
शिवलिंग पूर्ववत अपने स्थान पर सामान्य रूप से रखा हुआ था और बाकी सब कुछ भी सामान्य दिखाई दे रहा था .....
जल हरि पर बनी हुई आकृतियां भी स्थिर थीं । यह सब देखकर चिन्नास्वामी थोड़ा भयभीत भी हो रहा था ।

जिस प्रकार की घटनाएं घट रही थी ....
वह विचित्र थी और चिन्नास्वामी के लिए खतरनाक हो सकती थी । इसलिए मणिस्वामी ने डरे हुए चिन्नास्वामी को ढांढस बंधाया और कहा कि अगले दिन से वह चिन्नास्वामी के साथ साथ शमशान जाएगा और वहां से आने तक उसके साथ रहेगा । साधना के दौरान कक्ष के बाहर बने हुए दालान में बैठा रहेगा ।
ऐसा कह कर वह चिन्नास्वामी का धैर्य और साहस बढ़ा रहा था ताकि वह अपनी साधना को पूर्ण कर सके....
क्योंकि इस प्रकार की विचित्र घटनाओं से चिन्नास्वामी थोड़ा भयभीत हो चुका था ।

दो रात्रिया और बिना किसी व्यवधान के बीत गई ।
आखरी रात्रि यानी चौबीसवीं रात्रि थी । अंतिम रात्रि

वैसा कुछ भी वहां दिखाई नहीं दे रहा था !
शिवलिंग पूर्ववत अपने स्थान पर सामान्य रूप से रखा हुआ था और बाकी सब कुछ भी सामान्य दिखाई दे रहा था .....
जल हरि पर बनी हुई आकृतियां भी स्थिर थीं । यह सब देखकर चिन्नास्वामी थोड़ा भयभीत भी हो रहा था ।

जिस प्रकार की घटनाएं घट रही थी ....
वह विचित्र थी और चिन्नास्वामी के लिए खतरनाक हो सकती थी । इसलिए मणिस्वामी ने डरे हुए चिन्नास्वामी को ढांढस बंधाया और कहा कि अगले दिन से वह चिन्नास्वामी के साथ साथ शमशान जाएगा और वहां से आने तक उसके साथ रहेगा । साधना के दौरान कक्ष के बाहर बने हुए दालान में बैठा रहेगा ।
ऐसा कह कर वह चिन्नास्वामी का धैर्य और साहस बढ़ा रहा था ताकि वह अपनी साधना को पूर्ण कर सके....
क्योंकि इस प्रकार की विचित्र घटनाओं से चिन्नास्वामी थोड़ा भयभीत हो चुका था ।

दो रात्रिया और बिना किसी व्यवधान के बीत गई ।
आखरी रात्रि यानी चौबीसवीं रात्रि थी । अंतिम रात्रि

उस आकृति के दोनों सिरों पर गोल वृत्त बने हुए थे जिसमें से एक के ऊपर मंगला खड़ी थी । उसने दूसरे के ऊपर उसे खड़े हो जाने का इशारा किया ।

उस आकृति के दोनों सिरों पर गोल वृत्त बने हुए थे जिसमें से एक के ऊपर मंगला खड़ी थी । उसने दूसरे के ऊपर उसे खड़े हो जाने का इशारा किया ।

भैरवी शक्ति और साधना का आखिरी चरण

मणि स्वामी उसे बता चुका था कि इस साधना के क्रम में उसके लिए एक भैरवी की आवश्यकता पड़ेगी ..... जो संभवत वही है जो श्मशान में उसे दिखाई दे रही है.....

वह देवी की इच्छा से उस स्थान पर उपलब्ध हुई है..... अर्थात उसके द्वारा कहा गया हर वाक्य देवी के द्वारा बताया गया वाक्य है और उसका अनुपालन उसी प्रकार से करना है ।

इस बात की भी संभावना है कि आगे की प्रक्रियाओं में क्या करना है इसका निर्देश देवी वज्र चंडेश्वरी उसी के माध्यम से उसे प्रदान करें । उसे देवी के समान ही सम्मान देना है और उसकी आज्ञा का पालन करना है ..... यह सारी बात मणि स्वामी चिन्नास्वामी को समझा चुका था ।

साधनाओं के दौरान देवी शक्तियां स्वयं प्रस्तुत नहीं होती क्योंकि उनकी प्रचंडता के सामने साधक का टिक पाना थोड़ा मुश्किल होता है ....

इसलिए वे सामान्यतः किसी माध्यम के द्वारा अपनी उपस्थिति का आभास कराती है ....

भैरवी शक्ति उनमें से सबसे प्रमुख माध्यम है ।

यह भैरवी शक्ति जितनी साधनात्मक रुप से प्रचंड होगी .....

उतनी ही प्रचंड शक्ति स्वरूप को अपने अंदर समाहित भी कर सकती है और अपने साधक को प्रदान भी कर सकती है ....

सामान्य भाषा मे कहूँ तो ..... ऐसी स्थिति मे भैरवी एक प्रकार से किसी मोबाइल टावर की तरह काम करती है । जो सेटेलाइट से प्राप्त होने वाले सिग्नल को रिसीव करके मोबाइल तक पहुंचाता है । टावर की क्षमता के अनुसार सिग्नल 2G, 3G या 4G जैसा उपलब्ध होगा वैसा हो सकता है । ज्यादा अच्छा टावर हो तो 5G का सिग्नल भी दे सकता है .....

अब यह मोबाइल की क्षमता है कि वह किस श्रेणी का सिग्नल प्राप्त कर सकता है ....

अगर वह 2G मोबाइल होगा तो वह उतना ही सिग्नल प्राप्त कर पाएगा .....

यदि वह 5G मोबाइल होगा तो वह सबसे बेहतरीन किस्म का सिग्नल या शक्ति प्राप्त कर सकता है ।

इसी प्रकार से जितनी प्रचंड भैरवी होगी उतनी ही पूर्णता के साथ शक्तियां उस के माध्यम से साधक के सम्मुख उपस्थित होकर उसे शक्तिमान या ऊर्जावान बनाती हुई सिद्धियां प्रदान करती है ।
इसलिए श्मशान साधनाओं के क्षेत्र में स्त्री शक्ति या भैरवी को इतना ज्यादा महत्व दिया गया है .....

मणि स्वामी अपनी साधनात्मक शक्तियों के माध्यम से जान चुका था कि मंगला चिन्नास्वामी के लिए भेजी गई भैरवी है । वही उसे इस साधना को पूर्णता तक पहुंचाने में सहयोगिनी बनेगी । इसलिए उसने मनीष चिन्नास्वामी को मंगला की बात मानने के लिए स्पष्ट निर्देश दिए हुए थे ।

जैसे ही उसने चिन्नास्वामी को उसके गोल घेरे में खड़े होने के लिए कहा तो वह उस घेरे मे जाकर खड़ा हो गया ।

कभी ऐसा लगता जैसे किसी को पीट रहा हो जिसके दर्द के मारे वह रो रहा हो !!!
इस प्रकार की भयानक आवाजें आनी प्रारंभ हो गई ।
अब तक चिन्नास्वामी थोड़ा सा सहज हो चुका था , इसलिए उन बातों पर आवाजों पर ध्यान ना देते हुए अपने कार्य में लगा हुआ था ।
कभी-कभी वह तिरछी नजर से मंगला की ओर भी देख लेता था जो दूसरे गोल घेरे में खड़ी हुई थी और साक्षात् देवी के जैसे दिखाई दे रही थी ।

अंधेरी काली रात में वह दृश्य बिल्कुल वैसा दिखाई दे रहा था जैसे महा काली की फोटो में दिखाई देता है ।

मंगला के बालखुले हुए थे और उसकी कमर तक आ रहे थे .....
मांसल देह व्यष्टि की स्वामिनी मंगला अंधेरे श्मशान में पूरे आत्मविश्वास के साथ खड़ी हुई थी !
चिता की जलती हुई रोशनी में उसका काला रंग और चमकीला काला रंग दिखाई दे रहा था । उसके माथे पर लाल रंग की गोल बिंदी बनी हुई थी और गले में काले रंग के मनको की माला पड़ी हुई थी .....

उसके बाएं पैर में चांदी का एक मोटा कड़ा भी पड़ा हुआ था !

वह स्थिर दृष्टि से पूजन कर्म संपन्न करते हुए
चिन्नास्वामी की ओर देख रही थी.....
ठीक वैसे ही जैसे होमवर्क करने वाले बच्चे को उसकी मां आंखों ही आंखों में नियंत्रित करती रहती है .....
ताकि वह सही ढंग से अपनी पढ़ाई को पूरा करें ।

उस समय चिन्नास्वामी के मन में यही भावना आ रही थी और वह पूरी एकाग्रता के साथ अपने कार्य को पूरा करने की कोशिश कर रहा था ताकि किसी प्रकार की कोई गलती ना हो पाए ।
चिता की अग्नि उस समय हल्की हल्की जल रही थी
जब चिन्नास्वामी ने आहुतियां देने प्रारंभ की .....
लेकिन जैसे-जैसे उसकी आहुतियां बढ़ती गई चिता की आग भी धीरे-धीरे भड़कने लगी.....
बढ़ती हुई आग के साथ शमशान के अंदर से आ रही आवाजों की तीव्रता भी बढ़ती जा रही थी .....

आवाजें कई प्रकार की थी !

उसके बाएं पैर में चांदी का एक मोटा कड़ा भी पड़ा हुआ था !

वह स्थिर दृष्टि से पूजन कर्म संपन्न करते हुए
चिन्नास्वामी की ओर देख रही थी.....
ठीक वैसे ही जैसे होमवर्क करने वाले बच्चे को उसकी मां आंखों ही आंखों में नियंत्रित करती रहती है .....
ताकि वह सही ढंग से अपनी पढ़ाई को पूरा करें ।

उस समय चिन्नास्वामी के मन में यही भावना आ रही थी और वह पूरी एकाग्रता के साथ अपने कार्य को पूरा करने की कोशिश कर रहा था ताकि किसी प्रकार की कोई गलती ना हो पाए ।
चिता की अग्नि उस समय हल्की हल्की जल रही थी
जब चिन्नास्वामी ने आहुतियां देने प्रारंभ की .....
लेकिन जैसे-जैसे उसकी आहुतियां बढ़ती गई चिता की आग भी धीरे-धीरे भड़कने लगी.....
बढ़ती हुई आग के साथ शमशान के अंदर से आ रही आवाजों की तीव्रता भी बढ़ती जा रही थी .....

आवाजें कई प्रकार की थी !

उसे मंगला की हूँकार सुनाई दी ।

वह अपने स्थान पर खड़ी थी और उसके हाथ में एक मानव खोपड़ी दिखाई दे रही थी !

खोपड़ी उसके बाएं हाथ में थी और दाहिने हाथ में कुछ रखा हुआ था और उसकी मुट्ठी बंद थी । जिसे चिता की ओर दिखाते हुए वह मंत्र जाप कर रही थी ।

चिन्नास्वामी ने उसे तिरछी निगाहों से देखा और फिर अपने काम में लग गया वह जल्दी-जल्दी अपने नित्य के आहुति वाले कर्म को निपटा कर वहां से भाग जाना चाहता था .....

क्योंकि मंगला का स्वरूप देखकर उसके मन में भय का संचार हो रहा था ।

उधर मंगला इन सब से अनभिज्ञ अपने काम में लगी हुई थी । मंत्र जाप करते करते उसने अचानक एक और हुंकार भरी । वह आवाज इतनी तेज थी कि चिन्नास्वामी अपने स्थान पर हिल गया ....

अब आप कल्पना कर सकते हैं कि एक महिला की आवाज से अगर हिलना हो तो कितने जोर की आवाज रही होगी ।

उसे मंगला की हूँकार सुनाई दी ।
वह अपने स्थान पर खड़ी थी और उसके हाथ में एक मानव खोपड़ी दिखाई दे रही थी !
खोपड़ी उसके बाएं हाथ में थी और दाहिने हाथ में कुछ रखा हुआ था और उसकी मुट्ठी बंद थी । जिसे चिता की ओर दिखाते हुए वह मंत्र जाप कर रही थी ।
चिन्नास्वामी ने उसे तिरछी निगाहों से देखा और फिर अपने काम में लग गया वह जल्दी-जल्दी अपने नित्य के आहुति वाले कर्म को निपटा कर वहां से भाग जाना चाहता था .....
क्योंकि मंगला का स्वरूप देखकर उसके मन में भय का संचार हो रहा था ।
उधर मंगला इन सब से अनभिज्ञ अपने काम में लगी हुई थी । मंत्र जाप करते करते उसने अचानक एक और हुंकार भरी । वह आवाज इतनी तेज थी कि चिन्नास्वामी अपने स्थान पर हिल गया ....
अब आप कल्पना कर सकते हैं कि एक महिला की आवाज से अगर हिलना हो तो कितने जोर की आवाज रही होगी ।

उसे मंगला की हूँकार सुनाई दी ।
वह अपने स्थान पर खड़ी थी और उसके हाथ में एक मानव खोपड़ी दिखाई दे रही थी !
खोपड़ी उसके बाएं हाथ में थी और दाहिने हाथ में कुछ रखा हुआ था और उसकी मुट्ठी बंद थी । जिसे चिता की ओर दिखाते हुए वह मंत्र जाप कर रही थी ।
चिन्नास्वामी ने उसे तिरछी निगाहों से देखा और फिर अपने काम में लग गया वह जल्दी-जल्दी अपने नित्य के आहुति वाले कर्म को निपटा कर वहां से भाग जाना चाहता था .....
क्योंकि मंगला का स्वरूप देखकर उसके मन में भय का संचार हो रहा था ।
उधर मंगला इन सब से अनभिज्ञ अपने काम में लगी हुई थी । मंत्र जाप करते करते उसने अचानक एक और हुंकार भरी । वह आवाज इतनी तेज थी कि चिन्नास्वामी अपने स्थान पर हिल गया ....
अब आप कल्पना कर सकते हैं कि एक महिला की आवाज से अगर हिलना हो तो कितने जोर की आवाज रही होगी ।

थोड़ी देर तक रुक कर उसने अपनी सांसो को नियंत्रित करने का प्रयास किया । तब तक वह आकृति उसकी आंखों के ठीक सामने आ चुकी थी !

जैसे ही चिन्नास्वामी ने आंखें खोली उसके मुंह से चीख निकल गई .....

क्योंकि उस आकृति का छोटा सा चेहरा उसकी नाक के सामने मौजूद था !!!

वह छोटा सा चेहरा !

छोटी छोटी लाल लाल आंखें और लगभग तीन इंच लंबे दांत जो बाहर की तरफ निकले हुए थे ....

उन्हें देखकर चिन्नास्वामी के मुंह से चीख निकल गई ।

जैसे ही उसके मुंह से चीख निकली, मंगला के मुंह से खिलखिलाहट की आवाज निकल पड़ी और

उस आवाज में उस बांस जैसी पतली आकृति की खिलखिलाहट भी मौजूद थी ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे दोनों चिन्नास्वामी की स्थिति को देखकर मजा ले रही हो । हंसने के बाद वह आकृति धीरे से घूम कर उस विचित्र यंत्र के एक किनारे पर जाकर खड़ी हो गई । वह भी एक छोटा सा गोल घेरा था । ऐसा लग रहा था जैसे वह उसके लिए

निर्धारित स्थान रहा हो ..... जहां पर वह जाकर स्थापित हो गई थी ।

इसके बाद चिन्नास्वामी ने अपनी सांसो को नियंत्रित किया और फिर से आहुतियाँ देना प्रारंभ किया लेकिन अगली आहुती देते ही फिर से एक वैसी ही विचित्र आकृति चिता के अंदर से प्रकट हो गई जो किसी विशाल भैंसे के बराबर मोटी थी !

उसके नितंबों का आकार कम से कम 5 फुट चौड़ा अवश्य रहा होगा .....

उसके लंबे लंबे स्तन जो कम से कम चार चार फुट के रहे होंगे उसके वक्ष स्थल पर झूल रहे थे और कमर तक आ रहे थे .....

उसकी ऊंचाई कम से कम 15 फीट ही रही होगी !

किसी भयानक राक्षसी की तरह .....

उसके चेहरे पर सिर्फ एक आंख थी जो माथे के बीचो बीच लगी हुई थी ।

उसने अपना विशाल हाथ बढ़ाया और चिन्नास्वामी के द्वारा दी जा रही आहुती को ग्रहण करके अपने मुंह में डाल लिया .....

उसके साथ ही एक भयानक अट्टहास श्मशान में गूंज उठा । जिससे प्रतीत होता था जैसे ढेर सारी हड्डियां आपस में टकरा रहे हो .....

या बहुत सारे लकड़ी के लट्ठे आपस में एक दूसरे से टकराते हुए ऊंचाई से नीचे की तरफ गिर रहे हों .....

वह भयानक अट्टहास पूरे शमशान के सुनसान वातावरण में गूंजने लगा.....

चिन्नास्वामी स्तब्ध और हतप्रभ होकर थोड़ी देर के लिए बैठा रह गया ।

वह आकृति भी उसी प्रकार चिता में से निकलती हुई उस यंत्र के दूसरे भाग में जाकर स्थापित हो गई !

यह क्रम चलता रहा ..... और एक-एक करके विचित्र विचित्र प्रकार की आकृतियां चिता के भीतर से निकलती रही और उस यंत्र के ऊपर जाकर स्थापित होती रहीं ।

मंगला दूसरे छोर पर किसी रिंग मास्टर की तरह खड़ी हुई थी .....

जिसको देखकर प्रणाम करके वे आकृतियां पूरी मर्यादा के साथ उस यंत्र के अलग अलग भाग में जाकर स्थापित हो जाती थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे वह उन शक्तियों को नियंत्रित कर रही हो .....

चिन्नास्वामी की आहुतियां का काम पूरा हो चुका था और उसके साथ ही उस विचित्र यंत्र में जितने गोले बने हुए थे .... उन गोलों में एक एक शक्ति का स्वरुप स्थापित हो चुका था ....

वे सारी शक्तियां एक से बढ़कर एक भयानक स्वरूप वाली थी । जिनमें से किसी एक को भी देख ले तो आदमी बेहोश हो जाए । चिन्नास्वामी बड़ी मुश्किल से अपने आप को नियंत्रित करके उस परिस्थिति में बैठा हुआ था ।

वज्र चंडेश्वरी के मंत्रों की 108 आहुतियां पूर्ण होने के साथ ही उसने चिता को प्रणाम किया और मंगला की ओर देखा .....

उधर देख कर उसके होश फाख्ता हो गए क्योंकि वह सारी भयानक आकृतियां ठीक उसकी बगल से लेकर मंगला तक के बीच बने हुए अपने अपने स्थान पर खड़ी होकर उसे घूर रही थी ।

मंगला ने उसे बकरे को उठाने का इशारा किया ।
चिन्नास्वामी बकरे को लेकर खड़ा हो गया और उसके बाद मंगला के मुंह से विचित्र प्रकार के मंत्रों की ध्वनियां निकलने लगी और उन ध्वनियों के साथ वे आकृतियां भी अजीब अजीब आवाज में चिल्लाने लगी .....
ठीक वैसी ही आवाज ..... जैसे छोटे बच्चे उनके पसंद का भोजन मिलने के समय अपनी मां के सामने निकालते हैं !
मंत्र की समाप्ति में फट की आवाज के साथ मंगला ने उस बकरे को उस यंत्र की ओर बढ़ाने का इशारा किया !
चिन्नास्वामी ने उस बकरे को यंत्र की ओर धकेल दिया और उसके बाद वे सारी आकृतियां एक साथ उस पर टूट पड़ी !
कुछ ही क्षणों में ना तो वहां पर बकरा था .....
और ना ही वे सारी आकृतियां !
वे सारी की सारी वहां से गायब हो चुकी थी ।

इसके पश्चात मंगला ने कुछ और मंत्रों का उच्चारण किया और चिता की लपटें धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठने लगी .....

जो उठकर लगभग तीन साढे तीन फुट तक ऊपर आ गई । अब उसमें एक गोल चक्र दिखाई देने लगा जो किसी बर्तन के जैसा दिखता था ।

मंगला ने चिन्नास्वामी को उसमें भोग द्रव्य समर्पित करने का निर्देश दिया । चिन्नास्वामी ने वैसा ही किया और उसके साथ ही वह चक्र अपने स्थान पर घूमता हुआ उसी अग्नि में वापस समाहित हो गया । अब मंगला ने अपना हाथ बढ़ाया । चिन्नास्वामी ने दूसरी बोतल उसकी ओर बढ़ा दी । मंगला एक ही बार में आधी बोतल पी गई ।

उसने जोर का चटकारा लिया जैसे मजा आ गया हो !

उसके बाद उसने जमीन पर तीन लात मारी .....

वह उस वृत्त से बाहर निकली !

उसने चिन्नास्वामी का दाया हाथ अपने बाया हाथ से पकड़ा और लगभग खींचते हुए उसे श्मशान से बाहर की ओर ले जाने लगी ।

चिन्नास्वामी उसके पीछे गिरता पड़ता आगे बढ़ता जा रहा था । वह शमशान की परिधि पर जाकर रुकी और उसने अपने हाथ में रखी हुई बोतल में से थोड़ी सी

शराब वहां गाड़े हुए पत्थर के एक खंबे के ऊपर डाल दी .....

चिन्नास्वामी उसे देख रहा था .....

वह शराब बोतल से गिरती हुई दिखती थी .....

लेकिन उस खंबे पर नहीं गिरती थी .....

वह बीच में ही कहीं हवा में गायब हो जाती थी !

इस बात से वह समझ गया कि वहां संभवत कोई शक्ति मौजूद है जिसे मंगला ने भोग प्रदान किया था ।

मंगला का हाथ अभी भी चिन्नास्वामी के हाथ पर कसा हुआ था । चिन्नास्वामी को ऐसा लग रहा था जैसे उसके हाथ को किसी संडासी ने पकड़ रखा हो । इतनी मजबूत पकड़ थी । मंगला जैसी सुकोमल महिला से इस प्रकार की पकड़ की उम्मीद उसे नहीं थी लेकिन वह उसे किसी संडासी की जकड जैसा एहसास दिला रही थी । किसी प्रकार से वह अपने आप को नियंत्रित रखता हुआ वहां खड़ा था । कुछ सेकंड के बाद फिर मंगला ने उसे आगे की ओर खींच लिया और बचे हुए द्रव को अपने मुंह में डालकर बोतल को हवा में उछाल दिया और तेजी से शिव मंदिर की ओर दौड़ पड़ी ।

चिन्नास्वामी उसके पीछे गिरता पड़ता हुआ जा रहा था

। लगभग दस पंद्रह सेकंड में वे मंदिर पहुंच चुके थे । मणि स्वामी भी धीरे धीरे उनके पीछे पीछे वहां तक पहुंच गया ।

वहां पहुंचने पर उसने देखा कि दोनों शिवलिंग वाले कक्ष में पहुँच चुके थे ।

वह बाहर ही रुक गया ।

वहां पहुंचने के बाद मंगला ने चिन्नास्वामी को अपनी प्रक्रिया प्रारंभ करने का आदेश दिया । चिन्नास्वामी शिवलिंग के समक्ष बैठ कर अपना नित्य का पूजन प्रारंभ करने लगा । मंगला खंबे के पास जाकर खड़ी हुई , जिसके ऊपर वह नरमुंड रखा हुआ था ।

चिन्नास्वामी का पूजन चल रहा था और वह उस नरमुंड के ऊपर अपना दाहिना हाथ रखकर कुछ बुदबुदा रही थी ।

कुछ समय के बाद वह नरमुंड अपने स्थान पर घूमने लगा पहले नरमुंड के घूमते ही वह दूसरे मुंड की ओर बढ़ गयी .....

वहां भी उसने उसी प्रकार से कुछ प्रक्रियाएं संपन्न की और कुछ देर बाद वह नरमुंड भी अपने स्थान पर घूमने लगा ऐसा ही उसने तीसरे के साथ भी किया । अब तीनों

खंबे के ऊपर लगे हुए नरमुंड अपने अपने स्थान पर घूम रहे थे । उनकी घूमने की आवाज किसी चकरी के घूमने की तरह आ रही थी ।

चिन्नास्वामी का पूजन क्रम जारी था .....

मंगला उसके चारों तरफ उन खंभों के बाहर से होते हुए चक्कर लगा रही थी । धीरे धीरे वह शिवलिंग स्व प्रकाश से प्रकाशित होने लगा ..... फिर से उसके ऊपर हल्का पीला पीला आभामंडल दिखाई देने लगा । लगभग दो घंटे का समय व्यतीत हो चुका था जब फिर से जलहरी के ऊपर रखे हुए जानवरों के विग्रह में हलचल चालू हो गई .....

कुछ समय तक वैसा ही चलता रहा .....

फिर शिवलिंग अपने आधार से उठने लगा और उठते उठते वह उस मुंड के ऊंचाई तक पहुंच गया .....

धीरे धीरे समय आगे बढ़ता जा रहा था लगभग तीन घंटे का समय व्यतीत हो चुका था । शिवलिंग का आभामंडल इतना बड़ा हो चुका था कि अब नरमुंड लगे हुए खंभे भी उसकी परिधि के अंदर आ गए थे । वे भी उस पीले प्रकाश से चमकते हुए घूम रहे थे ।

कुछ समय के बाद शिवलिंग भी अपने स्थान पर घूमने लगा । उसकी गति नर मुंडो के घूमने की गति से उल्टी थी .....

जैसे ही शिवलिंग घूमने लगा थोड़ी देर में नर मुंडो की गति धीमी पड़ने लगी .....

धीमी होते होते वे कुछ समय के बाद स्थिर हो गए ।

जलहरी में जो आकृतियां बनी हुई थी उसमें से तीसरी आकृति एक मृग की थी ....

उसको छोड़ कर बाकी सारी आकृतियां हिल रही थी और शिवलिंग अपने स्थान पर चक्कर लगा रहा था ।

जो खंबा आधार से निकलकर शिवलिंग को ऊपर उठा रहा था उसमें एक वैसा ही छिद्र बना हुआ था जिस प्रकार की आकृति जलहरी में स्थित खड़े हुए मृग की थी ।

चिन्नास्वामी का पूजन पूर्ण हो चुका था ।

मंगला ने उस मृग को जल हरि से उठा लिया और खंबे के उस छिद्र के अंदर डाल दिया .....

वह उसमें बिल्कुल बराबर फिट हो गया ।

जैसे ही वह पत्थर का मृग उस खंभे के अंदर फिट हुआ ....

शिवलिंग का घूमना रुक गया.....

और वह धीरे-धीरे वापस जमीन की ओर बैठने लगा !

कुछ ही क्षणों में वह वापस अपनी सामान्य स्थिति में आ गया और उसका पीला आभामंडल भी लुप्त हो गया ।

जैसे ही वह जमीन पर बैठा तो उसी स्थान पर जहां वह मृग जल हरि पर लगा हुआ था एक कील जैसी संरचना उभर आई । मंगला ने उसे निकाल लिया ।

वह लगभग 4 इंच लंबी थी । उसका ऊपर का हिस्सा कील की तरह गोल था और नीचे का हिस्सा कटा हुआ था और उसमें खांचे बने हुए थे जो किसी त्रिशूल की तरह दिखाई देते थे ।

मंगला ने चिन्नास्वामी को उठने का इशारा किया और उस कीलनुमा चाबी को चिन्नास्वामी को दे दिया ।

चिन्नास्वामी का पूजन समाप्त हो चुका था । मंगला जलहरी की नोक की तरफ बने हुए मुंड वाले खंबे की ओर बढ़ी । उस खंभे में रखे नरमुंड के आधार के पास एक छेद बना हुआ था । उस छेद में मंगला ने उस चाबी को डालकर घूमाने का निर्देश दिया ।

चिन्नास्वामी ने उस चाबी को डाल कर घुमाया और उसके साथ ही वह खंबा अपने स्थान पर धीरे-धीरे नीचे की ओर जाने लगा । जैसे जैसे वह नीचे जा रहा था..... मंदिर में शिवलिंग के सामने वाली दीवार में लगभग 4 फुट बाई 3 फुट के आकार का एक आला उभरकर दिखाई देने लगा ।

जब वह खंभा लगभग जमीन के बराबर पहुंच गया तो यह आला बिल्कुल स्पष्ट हो गया । मंगला चिन्नास्वामी को लेकर उस आले की ओर बढ़ गई । ऐसा लग रहा था जैसे मंगला के अंदर स्वयं वज्र चंडेश्वरी का आगमन हो गया हो और वह अपने हाथों से चिन्नास्वामी को उस तिलस्म की चाबी सौंपना चाह रही हो.....
यहां यह जानना भी जरूरी है कि किसी शक्ति के द्वारा बनाए गए तिलस्म में तब तक प्रवेश नहीं करना चाहिए जब तक स्वयं उसकी आज्ञा या अनुमति प्राप्त ना हो जाए । अन्यथा किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति निर्मित हो सकती है और साधक की मृत्यु भी हो सकती है । ऐसे स्थानों पर विशेष प्रकार की साधनाएं करके

शक्ति का सानिध्य प्राप्त करके उनकी प्रेरणा से ही जाना चाहिए .....

चिन्नास्वामी का यह सौभाग्य था कि मंगला के रूप में देवी स्वयं उसका मार्गदर्शन कर रही थी । आला जैसे ही खुला उसके अंदर तीन चीजें रखी हुई दिखाई दे रही थी ।

एक छोटा सा ग्रंथ !

एक बड़ी सी तलवार !!

और एक वैसी कील नुमा चाबी जैसी जलहरी में से निकली थी ।

मंगला ने तलवार और ग्रंथ चिन्ना को सौंपा और उस चाबी को लेकर जलहरी की ओर बढ़ गई । जलहरी में चाबी निकालने से जो छिद्र बना था, उसके भीतर उसने उस चाबी को लगा दिया । ऐसा करते ही शिवलिंग के बाजू में 4 फुट बाई 4 फुट के आकार का एक पत्थर सरक कर दरवाजा दिखाई देने लगा । जिसमें से सीढ़ियां नीचे की ओर जा रही थी ।

मंगला की आवाज गूंजी - मणि स्वामी ! अंदर आ जा !

आवाज सुनते ही मणि स्वामी दौड़ता हुआ अंदर आया ।

मंगला ने उसकी ओर देखकर पूछा - निश्चय कर लिया है ?

उसने हाथ जोड़कर सहमति में सिर हिलाया ।

चिन्नास्वामी की समझ में नहीं आया कि इन दोनों के बीच में क्या बात हो रही है ?

मंगला आगे बढ़कर उन सीढ़ियों से नीचे उतरने लगी !

सीढ़ियों मे खूब अंधेरा था !

लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे मंगला उन सीढ़ियों से भलीभांति वाकिफ हो ।

मणि स्वामी आगे बढ़ा और उसने मंदिर में जल रहे दीपक को अपने हाथ में लिया और उसके पीछे पीछे सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया .... चिन्नास्वामी भी उसके पीछे पीछे सीढ़ियाँ उतरता गया.....

लगभग 15 सीढ़ियां उतरने के बाद मंगला ने बाई तरफ की दीवार पर टंगे हुए मशाल को निकाल लिया और मणि स्वामी के हाथ में रखे हुए दीपक की सहायता से उसे जला दिया ।

अब अंदर सब कुछ साफ दिखाई दे रहा था !

मंदिर के ठीक नीचे एक तहखाना बना हुआ था । जो लगभग उस मंदिर के गर्भ गृह के आकार का ही था और

तिकोने आकार में बना हुआ था । उसके ठीक बीच में अर्थात जहां पर शिवलिंग था .... उसके ठीक नीचे .... एक देवी विग्रह बना हुआ था ....
सफेद रंग के पत्थर से बना हुआ था ! संभवत: वह संगमरमर से बना था !
उसके ठीक सामने बलि यूथ बना हुआ था अर्थात वह जगह जहां पर बलि दी जाती है ।

देवी का स्वरूप अत्यंत ही उग्र था । वह वज्र चंडेश्वरी की प्रतिमा थी । मूर्ति लगभग चार या साढ़े चार फीट लंबी होगी । उस मूर्ति की 16 भुजाएं थी । जिनमें अलग-अलग प्रकार के आयुध तथा अन्य चीजें धारण किए हुए थे । उसकी आंखें सुर्ख लाल रंग की थी जो बिल्कुल जीवित दिखाई दे रही थी । मशाल की हल्की रोशनी में उन आंखों में देखने से भय की प्रतीति होती थी .....

मंगला ने आगे बढ़कर दीवाल पर लगी हुई एक और मशाल को जला दिया और अपने हाथ में पकड़ी हुई मशाल को दूसरी दीवार पर खोंस दिया जिससे वहां पर पर्याप्त रोशनी हो गई ।
अब देवी का विग्रह स्पष्ट दिखाई दे रहा था ।

अगर आप किसी तहखाने में गए हो तो आपको वहां हल्की नमी का एहसास होगा ।
ऐसा जमीन के नीचे की गुफाओं में भी होता है या नदी या किसी जलस्रोत के आसपास स्थित गुफाओं में भी आपको इसका एहसास होगा ... ठीक वैसे ही नमी का एहसास उस तहखाने की दीवारों में भी था ।
यह दीवारें पत्थर की बनी हुई थी । बादामी रंग के पत्थर ..... जो बिल्कुल वैसे ही थे जो मंदिर के बाहरी हिस्से में लगे हुए थे ।
मूर्ति के ठीक सामने एक चबूतरे जैसा बना हुआ था जिसमें एक विचित्र प्रकार का यंत्र गुदा हुआ था । उस यंत्र में से सबसे बाहरी हिस्से के एक सिरे से एक लाइन बलि यूथ तक बनी हुई थी । यंत्र की पूरी संरचना नाली नुमा थी अर्थात सतह से थोड़ी गहरी ।

उस छोटे से ग्रंथ में पूजन की विधि लिखी हुई थी मणि स्वामी ने उस में लिखी हुई विधि का अध्ययन किया वह लगभग 10 या 15 मिनट का पूजन विधान था । जिसके अंतिम चरण में एक गोपनीय प्रावधान था जिसके बारे मे पहले वाले ग्रंथ मे मनि स्वामी पढ़ चुका था ....

मणि स्वामी ने चिन्नास्वामी को उस यंत्र के अंदर बने हुए चौखाने में बैठने का निर्देश दिया और वह ग्रंथ भी उसे सौंप दिया ।

मशाल की रोशनी पर्याप्त थी जिसमें वह ग्रंथ के अंदर लिखे हुए पूजन को संपन्न कर सकता था । गुरु के निर्देशानुसार चिन्नास्वामी ने पूजन प्रारंभ कर दिया ।

मंगला मूर्ति की ओर देखती हुई खड़ी थी । उसके चेहरे के हाव-भाव विचित्र लग रहे थे । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे शून्य से किसी शक्ति का आह्वान कर रही हो ।

उसके दोनों हाथ ऊपर की ओर उठे हुए थे ।

बिखरे बाल नितंबों तक पहुँच रहे थे !

उसकी आंखों में लालिमा छाई हुई थी .....

जैसे आंखों में खून उतर आया हो ।

होंठ कुछ बुदबुदा रहे थे .....

जैसे कोई मंत्र जाप चल रहा हो .....

उसके हाथों में वह तलवार थी ....

जो मंदिर के आले के अंदर से प्राप्त हुई थी ।

उसे आसमान की ओर उठाए हुये, वह खड़ी हुई थी ।

मणि स्वामी को उसके गुरु ने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि एक बार आसन में बैठ जाने के बाद किसी भी परिस्थिति में आसन को नहीं छोड़ना है.....
अगर किसी वजह से आसन छूट गया तो उसी क्षण उसका सर फट जाएगा और उसकी मृत्यु हो जाएगी ।
अभी तक जिस प्रकार के चित्र विचित्र घटनाक्रम से होकर वह गुजरा था ....
उससे वह यह समझ चुका था कि उसे गुरु की आज्ञा और निर्देशों का पालन करना है तभी वह इस तिलिस्म को खोल पाएगा । जो कि उसके गुरु का भी लक्ष्य था । वह पूरी निष्ठा श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजन को पूर्ण करने की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहा था । पूजन के अंतिम चरण में बली विधान का मंत्र था .....
यह वही मंत्र था जिसका उच्चारण करके वह शमशान में देवी को आहुतियां प्रदान करता था । इस मंत्र को उसे पूजन समाप्त हो जाने के बाद पढ़ना था । जिसके विषय में उसके गुरु ने उसे कहा था कि वह मंत्र उसे आंखें बंद करके 108 बार पढ़ना है.....
और मंत्र समाप्ति के बाद ही आंखें खोलनी है ।

मणि स्वामी को उसके गुरु ने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि एक बार आसन में बैठ जाने के बाद किसी भी परिस्थिति में आसन को नहीं छोड़ना है.....
अगर किसी वजह से आसन छूट गया तो उसी क्षण उसका सर फट जाएगा और उसकी मृत्यु हो जाएगी ।
अभी तक जिस प्रकार के चित्र विचित्र घटनाक्रम से होकर वह गुजरा था ....
उससे वह यह समझ चुका था कि उसे गुरु की आज्ञा और निर्देशों का पालन करना है तभी वह इस तिलिस्म को खोल पाएगा । जो कि उसके गुरु का भी लक्ष्य था । वह पूरी निष्ठा श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजन को पूर्ण करने की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहा था । पूजन के अंतिम चरण में बली विधान का मंत्र था .....
यह वही मंत्र था जिसका उच्चारण करके वह शमशान में देवी को आहुतियां प्रदान करता था । इस मंत्र को उसे पूजन समाप्त हो जाने के बाद पढ़ना था । जिसके विषय में उसके गुरु ने उसे कहा था कि वह मंत्र उसे आंखें बंद करके 108 बार पढ़ना है.....
और मंत्र समाप्ति के बाद ही आंखें खोलनी है ।

फिर उनको धूप दीप दिखाया जाता !
कई बार वे काफी मात्रा में सिंदूर जीभ में लेकर खा जाती थी .....
संभवत: यह उन को भोग के रूप में दिया जाता था ।
इसके अलावा कई बार वे पूरा साबुत नींबू चबाकर खा जाती थी ।

यही नहीं कई आने वालों को वह थप्पड़ मुक्के और कभी कभी लात भी मार देती थी और आने वाले भक्तगण उसे देवी का आशीर्वाद मानकर स्वीकार करते थे । यह सब हो जाने के बाद वे अचानक से किसी कटे हुए पेड़ की तरह जमीन पर गिर जाती थी ।
सीमेंट के फर्श पर उस प्रकार से गिरने पर भी उनको चोट नहीं लगती थी ।
जबकि सामान्यत: अगर आप फिसलकर भी गिर जायें तो कई बार हड्डी भी टूट जाती है .....

उनकी एक बात मुझे सबसे विचित्र लगती थी ..... देवी के विसर्जन के समय जो शोभायात्रा निकलती है उसमें वह उसके सामने सामने उल्टा चलती थी .....

लगभग दो किलोमीटर की उस शोभायात्रा के सामने वह उल्टा चलती थी.....

अर्थात उनका मुख देवी की तरफ होता था और वे पीछे की तरफ चलती थी ।

विसर्जन स्थल तक अर्थात तालाब तक वे उसी प्रकार जाती थी ।

सामान्य परिस्थिति में उल्टा चलना इतना आसान नहीं होता .....

जब तक कि आपको उसकी प्रैक्टिस ना हो ।

अब वह ऐसा कैसे करती थी .....

यह महामाया ही जाने ।

खैर.....

मंगला के अंदर भी संभवतः वज्र चंडेश्वरी का आवेश आ रहा था और वह अपने स्थान पर खड़ी हुई थरथरा रही थी.....

जैसे-जैसे पूजन आगे बढ़ता जा रहा था उसके शरीर की थरथराहट भी बढ़ती जा रही थी !

कुछ समय के बाद वह तलवार लेकर उस चबूतरे के चारों तरफ उसे लहराते हुए घूमने लगी.....

यह देखकर चिन्नास्वामी भयभीत हो रहा था.....
लेकिन किसी प्रकार से अपने आप को नियंत्रित करके वह पूजन को आगे बढ़ा रहा था ।
उसकी इच्छा हो रही थी कि वह आंख बंद करके बैठ जाए !
लेकिन वैसा करना भी संभव नहीं था ।

पूजन अपने अंतिम चरण में था और मंगला उसी प्रकार नृत्य सा करती हुई चबूतरे के चारों तरफ घूम रही थी ....
फिर वह देवी के विग्रह के सामने जाकर खड़ी हो गई ।
अचानक गुफा के अंदर घुंघरू की आवाज आने लगी !
यह आवाज वैसे ही थी जैसे बड़े-बड़े पीतल के घुंघरू बांध कर घूमने पर आती है ।
वैसे घुंघरू जैसा नर्तकिया पहनती है.....

अंधेरे सुनसान कमरे में....
उस प्रकार की आवाज सुनना अपने आप में एक विचित्र और डरावना अनुभव है !
खासतौर से तब जब कि आप उसे नहीं देख पा रहे हो .....

जिसके पांव में वह घुंगरू बंधे हुए हैं !

लेकिन.....

आप महसूस कर सकते हो कि उस कमरे में ऐसा कोई शख्स मौजूद है.....

जिसके पांव में घुंघरू हैं !

और..... वह.....

उनको झंकार देता हुआ वह.....

आपके आसपास ही घूम रहा है ।

चिन्नास्वामी झंकार को सुनकर इधर-उधर देखने लगा ..... लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । केवल उसे मंगला ही दिखाई दे रही थी जो अब मूर्ति के सामने आकर स्थिर हो गई थी.....

लेकिन घुंघरू की झंकार अभी भी सुनाई दे रही थी !

वह भी उसे चारों तरफ से सुनाई दे रही थी !

ऐसा लग रहा था जैसे उस तहखाने के अंदर ढेर सारी स्त्रियां घुंघरू पहन कर नाच रही हो !

या इधर-उधर घूम रही हो !!

अलग-अलग दिशाओं से अलग-अलग प्रकार की घुंघरू की ध्वनियाँ आ रही थी.....

जिसे सुनकर चिन्नास्वामी के रोंगटे खड़े हो रहे थे ।

रहस्यमय नरबलि

कुछ समय मे चिन्नास्वामी का पूजन समाप्त हो गया और उसने बलि मंत्रों का उच्चारण करने के लिए अपनी आंखें बंद कर ली ।

जैसे ही उसने आंखें बंद की मंगला ने एक हुंकारा भरा जैसे किसी प्रकार का संकेत दिया हो ।

उस संकेत को सुनकर मणि स्वामी दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ा.....
और उस बली यूथ पर जाकर लेट गया !

अब वह विचित्र प्रावधान घटित होने जा रहा था जिसके विषय में उसने उस रहस्यमय ग्रंथ में पढ़ा था !

वह विचित्र प्रावधान.....
जो यह बताता था कि तिलिस्म को खोलने के आखिरी चरण में नरबलि प्रदान करने से ही तिलस्म का रहस्य ज्ञात हो सकता है ।
मणि स्वामी चिन्नास्वामी को अपना उत्तराधिकारी मान चुका था । वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर चुका था

रहस्यमय नरबलि

कुछ समय मे चिन्नास्वामी का पूजन समाप्त हो गया और उसने बलि मंत्रों का उच्चारण करने के लिए अपनी आंखें बंद कर ली ।

जैसे ही उसने आंखें बंद की मंगला ने एक हुंकारा भरा जैसे किसी प्रकार का संकेत दिया हो ।

उस संकेत को सुनकर मणि स्वामी दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ा.....
और उस बली यूथ पर जाकर लेट गया !

अब वह विचित्र प्रावधान घटित होने जा रहा था जिसके विषय में उसने उस रहस्यमय ग्रंथ में पढ़ा था !

वह विचित्र प्रावधान.....
जो यह बताता था कि तिलिस्म को खोलने के आखिरी चरण में नरबलि प्रदान करने से ही तिलस्म का रहस्य ज्ञात हो सकता है ।
मणि स्वामी चिन्नास्वामी को अपना उत्तराधिकारी मान चुका था । वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर चुका था

लेकिन उसके पास इतना समय नहीं था कि वह नरबलि के लिए किसी और व्यक्ति की व्यवस्था करें ।
अपने सपनों को पूरा करने के लिए उसने अपनी बलि देने का निश्चय कर लिया था .... जिसके विषय में मंगला ने या यूं कह लीजिए कि उसके अंदर आवेशित वज्र चंडेश्वरी ने उससे पूछा था ।

चिन्नास्वामी बलि मंत्रों का उच्चारण कर रहा था और तभी.....
मंगला का वह हाथ हवा में लहराया.....
जिसमें तलवार थी .....
और एक ही झटके में मणि स्वामी की गर्दन उसके शरीर से अलग होकर उछल गई और देवी के चरणों में जाकर गिर गई !
मंगला भी बेहोश होकर दूसरी तरफ गिर गई और उसके शरीर से एक विद्युत पुंज जैसा निकलकर उस मूर्ति में समा गया .....
मणिस्वामी के कटे गर्दन से खून का फुवारा छूट पड़ा ..... जो बली यूथ के ठीक नीचे एक गोल पात्र जैसे गड्ढे में एकत्र होने लगा .....

और उसमें से बहता हुआ.....
उस यंत्र की ओर बढ़ने लगा ..... जिस यंत्र के बीच में बने हुए चौखाने में मणि स्वामी बैठकर बली मंत्रों का उच्चारण कर रहा था ....
गर्दन में से बहता हुआ खून तेजी से उस यंत्र के नालियों में आगे बढ़ता जा रहा था और कुछ ही समय के बाद पूरे यंत्र की नालियों में वह रक्त भर चुका था और उसके साथ ही यंत्र एक रहस्यमय दिव्य आभा से चमक उठा .....
चिन्नास्वामी को लग रहा था कि कुछ घटित हुआ है, लेकिन घुंघरू की आवाज और उसका स्वयं का मंत्रोच्चार मिलकर एक ऐसी स्थिति पैदा कर रहा था जिसके बीच में वह अपनी बंद आंखों से बहुत ज्यादा परिस्थितियों का आकलन नहीं कर सकता था .....
लेकिन वहां पर ऐसा कुछ घटित हो चुका था जिसकी उसने स्वयं कल्पना भी नहीं की होगी.....
और वह वास्तविकता उसके सामने आने ही वाली थी ।
आखरी बली मंत्र के उच्चारण के साथ जब उसने आंखें खोली तो वह जिस यंत्र पर बैठा था वह एक विचित्र प्रकाश से जगमगा रहा था !

उसके सामने जो देवी का विग्रह बना हुआ था वह गुलाबी रंग के प्रकाश से नहा रहा था ! जो उनके मस्तक पर स्थित मुकुट के ऊपर लगे हुए रत्न से निकल रहा था ! ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह मूर्ति जागृत हो गई हो और साक्षात देवी उसके सामने प्रकट हो गई हो ! यह देखकर चिन्नास्वामी साष्टांग दंडवत मुद्रा में उस चबूतरे पर लेट गया और उसके लेटते ही उसे अपने सर पर एक स्पर्श महसूस हुआ ..... हुंकार की ध्वनि हुई..... और उसके साथ ही वह अपने होश खो बैठा ।

अगले दिन प्रातः काल उसे होश आया !
उसके सामने जो नजारा था उसे देखकर वह फूट-फूट कर रोने लगा ....
क्योंकि.....
उसके गुरु का सर कटा हुआ शव बली यूथ पर पड़ा हुआ था । जिसे देखते ही उसे समझ में आ गया कि उसे तिलस्म की गोपनीय सिद्धि प्रदान करने के लिए उसके गुरु ने अपनी बलि दे दी है ।
दाहिनी ओर मंगला बेहोश पड़ी हुई थी , उसके हाथ मे वह तलवार अब भी मौजूद थी .....

उसे लगा कि मंगला की भी मृत्यु हो चुकी है । थोड़ी देर रो लेने के बाद जब वह तटस्थ हुआ .....

तब वह अपने दोनों हाथ फैलाकर देवी के सामने बैठ गया और तभी उनके मुकुट से वह गुलाबी रंग का रत्न निकल कर उसकी हथेली में आ गिरा । जैसे ही वह रत्न उसके हाथ में आकर गिरा उसकी रोशनी कम होने लगी और चिन्नास्वामी के सारे शरीर में बिजली सी दौड़ गई उसके अंदर एक अद्भुत ऊर्जा का संचार होने लगा .....

लगभग दो चार सेकंड तक वह रत्न उसके हाथ पर पड़ा रहा .... उसके बाद वापस उछलकर देवी के मुकुट में लग गया और फिर से पूरा कमरा गुलाबी रंग के प्रकाश से जगमगाने लगा !

इतना तेज प्रकाश जैसे कमरे में सूरज निकल आया हो । चिन्नास्वामी की आंखें चौंधिया गई !

उसने अपनी आंखें बंद कर ली !

कुछ क्षणों के बाद उसे लगा कि वह रोशनी धीरे-धीरे समाप्त हो गई है और तब उसने अपनी आंखें खोली और आंखें खुलते ही उसने जो दृश्य देखा ..... उससे उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा.....

उसके गुरु मणिस्वामी जीवित उसके सामने खड़े थे .....

चिन्नास्वामी आश्चर्यचकित था क्योंकि उसने स्वयं अपनी आंखों से मणि स्वामी का कटा हुआ सिर देवी के चरणों में देखा था ....

उसके सर कटे धड़ को बली यूथ पर पड़े हुए भी देखा था .....

लेकिन वही मणि स्वामी अभी जीवित अवस्था में उसके सामने खड़ा हुआ था !

कुछ देर तक अपने आप को संभालने की कोशिश करने के बाद उसे ध्यान आया और वह अपने गुरु के चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम की मुद्रा में लेट गया !

लेकिन यह क्या ?

उसे अपने गुरु के चरणों का स्पर्श महसूस नहीं हुआ ....

ऐसा लगा जैसे उसने हवा को छू लिया हो !

वह मणि स्वामी का वायवीय शरीर था ।

गुरु गंभीर वाणी मे मणि स्वामी बोले - बेटा ! तू सफल हुआ !

देवी प्रसन्न हुई !

उसने तुझे तिलस्म सौंप दिया है ।
मेरा समय समाप्त हो गया !
अब आगे का रास्ता तुझे तेरी भैरवी मंगला और वज्र चंडेश्वरी स्वयं बताएगी ।

इतना कहकर उन्होंने एक ताम्रपत्र चिन्नास्वामी की ओर बढ़ाया .....
उस ताम्रपत्र पर तिलस्म को खोलने की सारी विधि लिखी हुई थी !
ताम्रपत्र को सौंपकर मणि स्वामी का वह सूक्ष्म शरीर गायब हो गया !

चिन्नास्वामी ने फिर देखा तो उसे मणि स्वामी का कटा हुआ सिर देवी के गले में पड़ी हुई मुंडमाला में लटका हुआ दिखाई दिया .....
बाकी शरीर बली यूथ पर मौजूद था .....

तभी.....
देवी के गुप्त भाग से निकले हुए सर्प में हलचल होने लगी .....
ऐसा लगा जैसे वह अचानक जीवित हो गया हो .....

उसका मुंह खुलने लगा .....

वह लगभग 2 फुट से ज्यादा चौड़ा खुल गया.....

उसके देखते देखते मणिस्वामी का सिरकटा हुआ शरीर हवा में उठने लगा .....

वह आँखें फाड़कर उस दृश्य को देख रहा था !

मणि स्वामी का सर कटा शरीर उसके मुंह में प्रवेश कर गया .....

उस सर्प ने उसे निगल लिया .....

निगलने के बाद फिर से वापस अपनी सामान्य अवस्था में आ गया .....

अब वहां पर बलि यूथ पर पड़े हुए रक्त और देवी के गले में पड़े हुए मणि स्वामी के कटे सिर के अलावा कोई ऐसा साक्ष्य नहीं था जिससे यह पता चले कि मणि स्वामी वास्तव में वहां पर कभी मौजूद था .....

मंगला का आवेश

उस ताम्र पत्र मे लिखी हुई विधि के अनुसार चिन्नास्वामी को आगे की क्रियाएं संपन्न करनी थी । चबूतरे पर बने हुए यंत्र में मणि स्वामी के रक्त से गहरे लाल रंग की रेखाएं स्पष्ट हो चुकी थी और उसमें अब विधि के अनुसार स्त्री रक्त प्रदान करने की आवश्यकता थी.....

जिसके बाद वही यंत्र उसे आगे का मार्ग दिखाने वाला था ।

वह सोच में पड़ गया !

क्योंकि मंगला भी जमीन पर पड़ी हुई थी और देखने से प्रतीत हो रहा था कि वह मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है ।

फिर उसे ध्यान आया कि गुरुदेव ने तो यह कहा था कि देवी और भैरवी मंगला आगे का मार्ग दिखाएगी ।

यह तो तभी संभव है जब मंगला जीवित हो !!!

अब तक घटी हुई घटनाओं के बाद उसका मस्तिष्क कुंद हो गया था .....

जो अब वह पुनः सामान्य हो चुका था और सोचने समझने की स्थिति में आ गया था ।

मणि स्वामी के शब्दों का ध्यान आते ही वह समझ गया कि मंगला अवश्य जीवित होगी । वह चबूतरे से उतरा और मंगला के पास पहुंचा । उसने मंगला की गर्दन पर हाथ रख कर देखा ।

स्पंदन मौजूद था अर्थात वह जीवित थी !

उसने उसे हिला कर देखा .....

उसकी आंखों में हलचल हुई .....

और थोड़ी देर में वह उठ कर बैठ गई .....

भैरवी के आवेश की स्थिति में जो घटनाएं होती हैं वह आवेश उतर जाने के बाद याद नहीं रहते । मंगला को भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह शमशान से यहां कैसे आ गई ।

तहखाने में मध्यम प्रकाश में जलते हुए मशाल की रोशनी में बहुत कुछ साफ नहीं दिखाई दे रहा था । जमीन के नीचे होने की वजह से प्रकाश की किरण भी वहां पर ज्यादा नहीं पहुंच पा रही थी, जिसकी वजह से लगभग रात्रि जैसी स्थिति दिखाई दे रही थी और अंधेरा छाया हुआ था । जिसे समाप्त करने की पुरजोर कोशिश वह मध्यम गति में जलता हुआ मशाल कर रहा था.....

उस चबूतरे के यंत्र में बने हुए दो चौखानों में एक एक त्रिकोण बना हुआ था । जिसमें एक उर्ध्वमुखी त्रिकोण था और एक अधोमुखी त्रिकोण था। जिसका तात्पर्य होता है कि वह भैरव और भैरवी का प्रतीक है । उसे देखकर चिन्नास्वामी अंदाज लगा रहा था कि संभवतः उसमें से एक चौखाने पर उसे और दूसरे पर मंगला को बैठना था ।

वह सोच रहा था कि इस बात को मंगला को कैसे समझाएं । मंगला को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अभी तक घटी हुई घटना की उसे जानकारी नहीं है । वह सब कुछ आवेश की स्थिति में हुआ था अर्थात उसे पता नहीं था कि उसके साथ क्या-क्या हुआ और उसने क्या-क्या किया ?

चिन्नास्वामी को लगा कि आगे के लिए निर्देश भी उसी आवेश की स्थिति में प्राप्त होना चाहिए । वह यह सोच रहा था कि मंगला को वापस उस प्रकार से आवेशित कैसे किया जाएगा जिससे आगे की प्रक्रिया संपन्न हो सके.....

मंगला विस्फारित नेत्रों के साथ इधर उधर देख रही थी.....

मंगला - मुझे क्या हो गया था ? यह कौन सी जगह है और मैं यहां कैसे आ गई ? मैं तो शमशान में थी और यह कौन सी जगह है ? क्या तुम मुझे यहां लेकर आए हो ?

चिन्नास्वामी आंखें फाड़ फाड़ कर उसकी ओर देख रहा था ।
वह सोच रहा था कि रात में यही मुझे खींचती हुई शमशान से यहां लेकर आई है और अब यह मुझसे पूछ रही है कि यहां पर उसे कौन लेकर आया है ?

फिर उसे लगा कि हो सकता है देवी की आवेशित स्थिति में जो भी हुआ वह इस को याद नहीं होगा तो उसने शुरू से लेकर अभी तक की सारी घटनाएं उसे सुना दी ।

सारी बात सुनकर मंगला सर पकड़ कर बैठ गई ,
क्योंकि उसे श्मशान में पहुंचने तक की बात तो याद थी .....
लेकिन उसके बाद क्या हुआ ?
उसके विषय में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी । सबसे ज्यादा आश्चर्य उसे इस बात पर हुआ कि उसने एक नरबलि प्रदान की .....
जिसके बारे में वह सोच भी नहीं सकती थी !
चिन्नास्वामी की बातों पर उसे विश्वास नहीं हो रहा था.....
क्योंकि वहां पर कोई शरीर दिखाई नहीं दे रहा था.....
लेकिन.....
रक्त से सनी हुई तलवार वहां पड़ी हुई थी जो इस बात की साक्षी थी कि बलि वहां पर जरूर संपन्न हुई है .....
मंगला यह सब सोचकर आश्चर्य के साथ बैठी हुई थी .....
तभी चिन्नास्वामी ने उसे वह ताम्रपत्र पकड़ा दिया जिसमें आगे की विधि लिखी हुई थी ।

लेकिन मणि स्वामी के बली प्रकरण के बाद उसके अंदर डर की मात्रा और बढ़ गई थी ।

उसे मंगला से भय लगने लगा था ....

खास तौर से आवेशित अवस्था में आई हुई मंगला से.....

वह उस यंत्र के अंदर बने हुए एक चौखाने में जाकर बैठ गई .....

उसे इस प्रकार से बैठा देखकर चिन्नास्वामी को पता चल गया कि वह उस ताम्रपत्र में लिखी हुई विधि को समझ गई है और अब आगे की क्रियाएं संपन्न करनी है .....

उसके सामने बने हुए चौखाने में जाकर चिन्नास्वामी बैठ गया और वज्र चंडेश्वरी के मंत्रों का जाप करने लगा.....

मशाल का प्रकाश मंद पड़ने लगा था .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हवा भी कम हो रही हो !

चिन्नास्वामी का मंत्र जाप जारी था और अब उसके साथ मंगला का मंत्र उच्चार भी शामिल हो गया था .....

दोनों एक ही लय में मंत्र जाप कर रहे थे । दोनों एक दूसरे के सामने पालथी मारकर बैठे हुए थे । लगभग 5 मिनट का मंत्र जाप हुआ होगा उसके बाद अचानक मंगला को रक्तस्राव प्रारंभ हो गया । उसका रक्त बहकर यंत्र के अंदर की लाइनों में मिश्रित होने लगा । यह सामान्य रक्तस्राव की तरह नहीं था बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे कोई नल खुल गया हो .....

और उसमें से रक्त का प्रवाह प्रारंभ हो गया हो .....

लगभग आधा लीटर के करीब रक्त निकला होगा और वह धीरे-धीरे यंत्र के भीतर बनी हुई सारी लाइनों को भरता हुआ वापस बली यूथ के पात्र तक पहुंच गया .....

और तब.....

उसका रक्तस्राव बंद हो गया !

ऐसा होते ही वह चबूतरा अचानक जोरो से हिलने लगा.....

ऐसा लग रहा था जैसे उसके अंदर कोई वाइब्रेटर लगा दिया गया हो .....

और फिर कमरे में गहरा सफेद धुआं भरने लगा जिसके बाहर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था ..... यह क्रम

लगभग पाँच मिनट तक चला और उसके बाद शांत हो गया .....

चारों तरफ फैला हुआ सफेद धुआँ भी गायब हो चुका था और चबूतरा अपने स्थान पर स्थिर हो चुका था .....

तिलस्म का स्वामित्व

उसके ऊपर बने हुए यंत्र के एक तरफ एक गड्ढा बन गया था। वहां एक हत्था था। जिसे उन्होंने खींच लिया तो चबूतरे के पीछे एक चार फुट बाय चार फुट का दरवाजा जमीन पर बन गया। मशाल लेकर दोनों उसमें से नीचे उतर गए। लगभग 20 सीढ़ियाँ नीचे उतरने के बाद एक गलियारा आया। गलियारे के आखिरी छोर में फिर ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी।

सीढ़ियां लगभग 50 की संख्या में रही होंगी। उन सीढ़ियों को चढ़कर ऊपर पहुंचने पर सूरज की रोशनी दिखाई देने लगी। सीढ़ियाँ एक गुफा में जाकर खत्म हुई।

गुफा लगभग 10 फुट में 15 फुट के आकार की थी ....

गुफा के मुहाने से रोशनी आ रही थी.....

वे दोनों वहां से बाहर निकले तो आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि वहाँ एक अलग ही संसार बसा हुआ था !

सामने एक छोटी सी नदी बह रही थी !

नदी के उस पार एक अद्भुत मंदिर बना हुआ था और उसके बगल में एक झोपड़ी बनी हुई थी।

तिलस्म का स्वामित्व

उसके ऊपर बने हुए यंत्र के एक तरफ एक गड्ढा बन गया था। वहां एक हत्था था। जिसे उन्होंने खींच लिया तो चबूतरे के पीछे एक चार फुट बाय चार फुट का दरवाजा जमीन पर बन गया। मशाल लेकर दोनों उसमें से नीचे उतर गए। लगभग 20 सीढ़ियाँ नीचे उतरने के बाद एक गलियारा आया। गलियारे के आखिरी छोर में फिर ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी।

सीढ़ियां लगभग 50 की संख्या में रही होंगी। उन सीढ़ियों को चढ़कर ऊपर पहुंचने पर सूरज की रोशनी दिखाई देने लगी। सीढ़ियाँ एक गुफा में जाकर खत्म हुई।

गुफा लगभग 10 फुट में 15 फुट के आकार की थी ....

गुफा के मुहाने से रोशनी आ रही थी.....

वे दोनों वहां से बाहर निकले तो आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि वहाँ एक अलग ही संसार बसा हुआ था !

सामने एक छोटी सी नदी बह रही थी !

नदी के उस पार एक अद्भुत मंदिर बना हुआ था और उसके बगल में एक झोपड़ी बनी हुई थी।

दोनों नदी में उतर गए !
उसमें घुटनों तक पानी था !
उसमें स्नान आदि संपन्न करके नदी के पार बने हुए मंदिर तक पहुंच गए !
वह मंदिर अपनी दिव्य शिल्प कला की वजह से अद्भुत और विलक्षण दिखाई दे रहा था । उसकी दीवारों पर शिव शक्ति की युगल मूर्तियां विभिन्न मुद्राओं में बनी हुई थी ।
जिन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे उन्हें किसी सांचे में डालकर निकाला गया हो और उन मुद्राओं में बैठा कर उन्हें स्थिर कर दिया गया हो ।
मंदिर के अंदर ठीक वैसे ही एक मूर्ति लगी हुई थी जैसी तहखाने में में थी ।
फर्क सिर्फ इतना था कि यह मूर्ति बिल्कुल काले रंग के ग्रेनाइट जैसे किसी पत्थर से बनी हुई थी ।
वह ठीक वैसे ही चमचमा रही थी जैसे पॉलिश कर देने के बाद ग्रेनाइट का पत्थर चमकता है ।
उस ताम्रपत्र पर लिखे गए निर्देशों के अनुसार उन्हें इस मंदिर में पहुंचना था और उस मंदिर में एक विशेष विधि संपन्न करके इस तिलिस्म का स्वामित्व स्वीकार

करना था । इस प्रक्रिया को पूर्ण करके चिन्नास्वामी ने तिलस्म का स्वामित्व स्वीकार कर लिया ।
तिलस्म को खोलने का मंत्र उसे मिल गया.....

वहां पर उसे बहुत सारे ग्रंथ मिले ।
इसमें कई प्रकार की साधनाओं के विषय में लिखा हुआ था .....
उनमें से कुछ ऐसी थी जो साधक को काफी उच्च स्तर तक पहुंचा सकती थी और कुछ साधना ऐसी थी जिसके माध्यम से कई प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति हो सकती थी ।

चिन्नास्वामी एक गरीब परिवार में पला बढा था । उसने अपने जीवन में बहुत सारी परेशानियां, अभाव और संकट देखे थे । बचपन में उसकी मां की मृत्यु हो गई थी जिसके बाद पिता ने दूसरी शादी कर ली । दूसरी पत्नी से उन्हें 3 बच्चे और हुए । जब वह 10 साल का था तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई । पैसे की तंगी के कारण उसकी मां ने उसे एक होटल वाले को बेच दिया था ।
होटल में सुबह से शाम तक जानवरों की तरह से काम लिया जाता था और ऐसे ही वह बड़ा होता गया ।

लगभग पैंतीस साल की अवस्था में सिद्धियों के चक्कर में वह मणि स्वामी के संपर्क में आया । तब से वह मणि स्वामी के साथ घूम रहा था ।

उसने मणि स्वामी की बहुत सेवा की , उसके लात घूंसे भी खाए और अपने मरने से साल भर पहले मणिस्वामी ने चिन्नास्वामी को अपना शिष्य बनाया था ।

उसके बाद अचानक यह तिलस्म वाली घटना हो गई और संयोगवश मणि स्वामी की जगह चिन्नास्वामी तिलस्म का मालिक बन गया ।

यह सब घटनाएं इतनी तेजी से हुई कि वह कुछ समझ नहीं पाया.....

लेकिन उसके अंदर का वह अभाव ग्रस्त व्यक्ति अभी भी मौजूद था ..... जो धन और भौतिक सुख की लालसा में था ।

मंगला के साथ उसने कुछ एक साधनाये संपन्न की, जिसके दौरान मंगला को पता चल गया था कि यह अति कामुक और देह लोलुप किस्म का है और उच्च स्तरीय साधना के योग्य साधक नहीं है .....

यह वास्तव में उस तिलस्म का और उसके अंदर स्थित शक्तियों का संधान नहीं कर पाएगा ।

चिन्ना स्वामी और अक्षयपात्र की तलाश

चिन्नास्वामी का भौतिक सुखों की तरफ रुझान हमेशा बना रहा और फिर उसको अपने ग्रंथ में लिखी हुई पिशाचिनी साधना को संपन्न किया । साधना को करने के बाद चिन्नास्वामी को बहुत सारी बातें अपने आप पता चलने लगी, जिसके माध्यम से वह धीरे धीरे ऊपर वाले खंडहर में अपना आश्रम चलाने में सफल हो गया । आसपास के इलाकों में उसकी ख्याति बढ़ गई और उसके पास धन तथा ऐश्वर्य बढ़ने लगा ।

उसे दो चेले मिल गए थे जो कि उसी के समान थे और उन्होंने कई प्रकार से महिलाओं और युवतियों को प्रभावित करके देह सुख की अनुभूतियां प्राप्त करना शुरू कर दिया और अधिकांश मामलों में वे सफल भी रहते थे जिसके चलते अब चिन्नास्वामी को मंगला की जरूरत नहीं पड़ती थी ।

वह मंगला को साधिका के रूप में कम और देह सुख के लिए ज्यादा याद करता था .....

अब उसे दूसरी स्त्रियों का सानिध्य प्राप्त होने लगा था इसलिए उसने मंगला को उसी तिलस्म में छोड़ दिया ।

मंगला को भी तिलस्म खोलने का अधिकार था इसलिए वह उसमें स्वतंत्र रूप से आना-जाना कर सकती थी । वह अपना अधिकांश समय अब उसी तिलस्म के अंदर गुजारती थी ।

नदी तट के दिव्य मंदिर में पूजा तथा अन्य प्रकरण भी अब मंगला की जिम्मेदारी हो गए थे । जिसे वह पूरी श्रद्धा से निभा रही थी ।

चिन्नास्वामी लोगों के चरण वंदन से मिलने वाले सुख का आनंद ले रहा था । लगभग साल भर से यही क्रम चल रहा था ।

मंगला उसे समझाने की कोशिश करती लेकिन वह उसकी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था और कई बार उस पर हाथ भी छोड़ देता था ।

यह स्थिति साधनात्मक रूप से उसके लिए प्रतिकूल होती जा रही थी,

लेकिन उसके साथ में जो दो चेले थे वह भी उसी की तरह थे और उसकी हर बात में हां में हां मिलाते थे और उल्टे पुल्टे काम करते रहते थे ।

इस प्रकार के कामों में उन्हें न सिर्फ धन मिल रहा था बल्कि अलग-अलग स्त्रियों का भोग करने का अवसर भी मिल रहा था और तीनों उसी में आनंदित हो रहे थे । चिन्ना स्वामी का साधना पक्ष कमजोर होता जा रहा था .....

जिसकी वजह से उसकी सात्विक सिद्धियां धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही थी और केवल पैशाचिक सिद्धियाँ प्रबल होती जा रही थी .....

समुद्र के किनारे बना हुआ वह मंदिर भी हरिवर्धन ने ही बनाया था जो कि समुद्र की देवी को समर्पित था । हरिवर्धन तिलस्म के अलावा उस मंदिर में बैठकर भी अपनी साधनाएं संपन्न करता था और उसी क्रम में उसे देवी चेपम्मा के द्वारा उस अक्षय पात्र की प्राप्ति हुई थी .....

जो वर्तमान में मुथुस्वामी को मिला था .....

हरिवर्धन ने उस अक्षय पात्र को तांत्रिक क्रियाओं के द्वारा उस पत्थर के अंदर डाल दिया था और उसके विषय में संकेत तिलस्म में रखे हुए ग्रंथ में डाल दिए थे ,

जिसके विषय मे चिन्नास्वामी ने भी पढ़ा था ..... जब वह वहां पर रखे हुए ग्रंथों का अध्ययन करने गया था । उस में लिखी हुई साधनाएं करने के विषय में चिन्नास्वामी की रुचि कम हो गई थी और वह भौतिक सुख सुविधाओं का उपयोग करने में ज्यादा लग गया था लेकिन इधर मंगला नित्य अपनी साधना में लगी हुई थी और उसे नए-नए रहस्य पता चलते जा रहे थे ।

एक दिन उसे इस अक्षय पात्र के रहस्य के विषय में भी पता चला और चिन्नास्वामी को उसने इसके बारे में बताया ।
चिन्नास्वामी की आंखें इस बात को सुनकर चमक उठी क्योंकि यह एक ऐसी चीज थी जिससे वह भौतिक सुख-सुविधाओं की ढेर सारी चीजें प्राप्त कर सकता था .....
सबसे खास बात यह थी कि इस अक्षय पात्र को रखने के बाद कोई भी कार्य चाहे वह व्यापार हो या खेती हो या दुकानदारी हो वह अपने आप प्रगति की ओर अग्रसर हो जाता था क्योंकि अक्षय पात्र स्वयं में ही इतना सक्षम था कि वह सब कुछ प्रदान कर सकता था

। केवल उसे माध्यम के रूप में किसी मार्ग की जरूरत होती थी और उस मार्ग से अथाह धन प्रवाह अक्षय पात्र धारण करने वाले व्यक्ति की ओर आने लगता था और वह उससे निमग्न हो जाता था ....
यानी उसके पास इतना पैसा हो जाता था कि दोनों हाथ से उलीचने के बाद भी खत्म ना हो !

अक्षय पात्र के विषय में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं लिखी थी केवल संकेत में यह लिखा हुआ था कि वह चेप्पम्मा देवी के मंदिर में कहीं छुपा हुआ है ।

यह बात मंगला ने चिन्नास्वामी को बता दी ।
चिन्नास्वामी ने उस मंदिर के कई चक्कर लगाए लेकिन संभवत: उसकी संदिग्ध गतिविधियों की वजह से चेप्पम्मा देवी ने अपने भक्त मुथुस्वामी को स्वप्न दे कर उस अक्षय पात्र को उसके हवाले कर दिया था ।
मणि स्वामी उसे प्राप्त नहीं कर पाया ।
काफी प्रयत्न करने के बाद भी जब उसे अक्षय पात्र उस मंदिर में नहीं मिला तो वह मंगला के ऊपर गुस्सा हो गया .....
मंगला उसकी भैरवी थी.....

उसका लगाव चिन्नास्वामी के साथ था ।
चिन्नास्वामी की लाख गलतियों के बावजूद वह कोशिश करती थी कि चिन्नास्वामी खुश रहे.....
तो उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि वह अक्षय पात्र कहां है ?
और उसे पता चल गया कि वह अक्षय पात्र मुथुस्वामी के पास है । जिसको प्राप्त करने के लिए चिन्नास्वामी सतत प्रयत्नशील था ।
इसके साथ साथ मंगला को यह भी पता चल गया था कि अक्षय पात्र को अपने पास रखने के बाद साधक को नित्य उसका पूजन आदि संपन्न करते रहना चाहिए .....
यदि ऐसा नहीं हुआ तब भी वह अनुकूलता प्रदान करता रहता है लेकिन 5 ऋतुओं के बाद यानि लगभग दस महीने तक ही उसका प्रभाव बना रहता है और उसके बाद वह साधन को अनुकूलता के स्थान पर प्रतिकूलता प्रदान कर सकता है ।
यह बात उसने चिन्नास्वामी को बताई ....
लेकिन चिन्नास्वामी ने उस बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया .....

साधनात्मक शक्ति के कम हो जाने की वजह से वह मुथुस्वामी के घर में प्रवेश नहीं कर पा रहा था और अंततः कोंडय्या के माध्यम से उसने उस पात्र को प्राप्त कर लिया था....

जो अब उसके कब्जे में था ।

जब से वह अक्षय पात्र उसके पास आया था, उसके पास आने वाले ग्राहकों की संख्या में भी काफी वृद्धि हो गई थी ।

पैसे उसकी तरफ बहते हुए आ रहे थे !

उसने तिलस्म से लगभग दो किलोमीटर की दूरी में अपना भव्य बंगला बना लिया था और वही उसका दरबार सजता था ।

लोगों की समस्याओं को सुनकर उसका समाधान भी वह वही करता था ।

जब कोई समस्या उससे हल नहीं होती थी तो विशेष परिस्थितियों में वह लोगों को मंदिर में भी मिलने के लिए बुलाता था । जहां मंगला के माध्यम से वह उस समस्या का समाधान प्राप्त करने की कोशिश करता था, जिसमें कई बार वह सफल भी हो जाता था ।

चिन्नास्वामी की हरकतों को देखकर मंगला परेशान रहती थी.....

लेकिन उसकी बातों का चिन्नास्वामी पर कोई असर नहीं पड़ता था और वह अपनी दुनिया में लीन था। यह एक अकाट्य सत्य है कि देह की अपनी प्रवृत्ति होती है और वह प्रवृत्ति मृत्यु तक विराजमान रहती है । कई उदाहरण आपने देखे होंगे जब कुछ गुरु जो कि राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त थे और लाखों शिष्यों का उनके ऊपर विश्वास था वह भी अपनी देहगत न्यूनताओं के चलते स्त्री प्रकरणों में फंसे और समय के साथ समाप्त होते चले गए .....

यह प्रकृति का एक विधान है !

चिन्नास्वामी ने भी अपने जीवन में आर्थिक न्यूनता देखी थी और जब उसके पास धन और वैभव आने लगा तो उसे बाकी सारी चीजें बेकार लगने लगी ।

इन्हें प्राप्त करने के लिए वह किसी भी स्तर तक जाने के लिए तैयार हो गया.....

इस प्रकार की प्रवृत्ति साधकों के लिए नुकसान देह होती है और आने वाले समय के साथ उसका

साधनात्मक बल कम होता जाता है और धीरे-धीरे उसका पतन प्रारंभ हो जाता है ।

चिन्नास्वामी धीरे-धीरे उसी ओर बढ़ रहा था ।

तिलस्म मे प्रवेश का रास्ता

पहला काम था तिलस्म के अंदर प्रवेश करना ताकि उसके विषय में और जाना जा सके ।

इसे करने के दो ही तरीके थे या तो तिलस्म खोलने की विधि प्राप्त हो जाए .....

या फिर किसी ऐसे व्यक्ति का सहयोग मिले जिसे उसे खोलना आता हो ।

तिलस्म खोलने की विधि जानने वाले दो ही व्यक्ति थे एक था स्वयं चिन्नास्वामी जो कि उसकी विधि बताने से रहा !

और दूसरी थी मंगला जिससे इसकी विधि जानी जा सकती थी .....

अब कैसे जानी जा सकती है ?

यह पता लगाना था जिसके लिए मुझे प्रयास करना था ।

इतनी जानकारी होने के बाद में वापस मुथु के पास लौट आया । मुझे सकुशल लौटा देखकर उसे बेहद खुशी हुई । रात भोजन के समय उसने फिर से कहा - भय्या ! अक्षय पात्र ने मुझे बहुत कुछ दिया है और मैं उससे खुश हूं । आप अपनी जान जोखिम में मत डालिए ।

मैंने सहमति में सिर हिला दिया और उससे कहा - मैं एक बार समुद्र वाले मंदिर में जाना चाहता हूं !

मुथु अगले दिन मुझे वहां ले जाने के लिए तैयार हो गया । अगले दिन सुबह मुथु के साथ में मंदिर की ओर निकल गया । लगभग सात साढ़े सात बजे हम लोग मंदिर पहुंच चुके थे । मंदिर जैसा कि मैंने आपको बताया था कि काफी पुराना था और उसकी बहुत सारी दीवारें गिर चुकी थी .....

वहाँ मुथू ने मुझे वह पत्थर दिखाया जिसके अंदर से अक्षय पात्र निकला था ।

उस पत्थर को स्पर्श करते ही मुझे कुछ अजीब सी अनुभूति हुई और मैंने मुथुस्वामी को थोड़ी दूर खड़े हो जाने के लिए कहा .....

मैंने उस पत्थर को स्पर्श करके अपनी आंखें बंद कर ली .....

कुछ क्षणों में मैं ध्यानस्थ अवस्था में चला गया और उसके बाद मुझे देवी चेपम्मा के दर्शन हुए .....

मैंने उनको प्रणाम किया और अक्षय पात्र वापस प्राप्त करने की विधि के विषय में निर्देश देने की प्रार्थना की ।

उन्होंने अक्षय पात्र को वापस पाने की दो विधि बताई उसके अनुसार पत्थर के उन दो टुकड़ों को आपस में जोड़ कर विशेष तांत्रिक मंत्र का जाप करना था , जिसके बाद वह अक्षय पात्र वापस उसी पत्थर के अंदर आ जाता । ऐसा होते ही वह पत्थर के दोनों टुकड़े आपस में जुड़ जाते । जो इस बात का प्रमाण होते कि वह अक्षय पात्र वापस अपने पूर्व स्थिति में आ गया है ।
लेकिन.....
उसके साथ दिक्कत यह थी कि वैसी स्थिति में वह अक्षय पात्र फिर से अगले 400 सालों के लिए उसी पत्थर में कैद हो जाता और वहां से गायब हो जाता ।

दूसरी विधि यह थी कि चिन्नास्वामी स्वयं उस अक्षय पात्र को मुथू को वापस कर देता तो वह उसके पास रह सकता था लेकिन ऐसा होना काफी कठिन स्थिति थी । इतना सब जान लेने के बाद मैं वापस लौट गया क्योंकि अक्षय पात्र को वापस लौटा देने से मुथुस्वामी के लिए जो काम करने के लिए मैं आया था वह पूरा नहीं होता और चिन्नास्वामी से अक्षय पात्र हासिल करना थोड़ा सा टेढ़ा काम था

लेकिन .....

जो होना है वह तो होता ही है .....

एस पी पंडा और वैभव

उधर खंडहर में जब मैं पहुंचा था तो एक पुलिस अधिकारी की गाड़ी में चिन्नास्वामी गया था, वह उस क्षेत्र के एसपी मोहन पंडा की गाड़ी थी ।

मोहन पंडा एक बेहद कमीना और भ्रष्ट पुलिस अधिकारी था । उसकी नेताओं और व्यापारियों के साथ काफी अच्छी जमती थी क्योंकि वह उनके कहे अनुसार सभी प्रकार के सही गलत कामों को अंजाम देने के लिए आतुर रहता था ।

उसी क्षेत्र का एक बड़ा व्यापारी था एम एम चेट्टियार । चेट्टियार एंड सन्स का मालिक । चेट्टियार उस क्षेत्र में एक केमिकल फैक्ट्री लगाना चाहता था जिसमें कुछ ऐसे केमिकल का उत्पादन होना था जो पर्यावरण की दृष्टि से काफी खतरनाक थे । उसकी फैक्ट्री को लगभग सभी जगह से एनओसी मिल चुकी थी । उसी समय एक स्थानीय एनजीओ चलाने वाले वैभव नाम के व्यक्ति ने इसके विरोध में एक जन अभियान चालू कर

दिया और लोगों को इसके बारे में जागरूक करना प्रारंभ किया ।

वैभव केमिकल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट था और उसी विषय पर उसने आगे पीएचडी की हुई थी । उसके कई आर्टिकल विश्व विख्यात पत्रिकाओं में छप चुके थे । वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत एक नाम था , इसलिए कुछ पत्रकारों ने भी उसका साथ दिया । उन सबने मिलकर प्रस्तावित केमिकल प्लांट के कारण होने वाले पर्यावरणीय नुकसान को हाईलाइट करना चालू कर दिया, एक जनहित याचिका भी लग गयी । जिसके चलते केमिकल प्लांट के मामले में रुकावट पैदा हो गई ।

चेट्टियार का काफी पैसा प्लांट के निर्माण में लग चुका था । वह लगभग आधे से ज्यादा तैयार हो चुका था । जिस प्रकार की परिस्थितियां बन रही थी वह चेट्टियार को यह समझाने के लिए पर्याप्त थी कि अगर वैभव का विरोध इसी प्रकार चलता रहा तो उसकी फैक्ट्री चालू होने से पहले ही बंद हो जाएगी ।

आधे से ज्यादा पत्रकारों को उसने पैसे के दम पर खामोश रखने में सफलता हासिल कर ली थी । उसने वैभव को खरीदने की बहुत कोशिश की लेकिन वैभव दुर्लभ प्रजाति के उन जीवो में से एक था जो अपने लक्ष्य को छोड़कर किसी चीज की परवाह नहीं करते । इस समस्या का समाधान निकालने के लिए चेट्टियार ने पांडा को संपर्क किया था । डी एस पी पांडा इस प्रकार के आड़े तिरछे कामों को संपन्न करने के लिए एक बहुत ही शातिर आदमी था ।
वह जानता था कि वैभव को किसी छोटे-मोटे केस में फंसाने से यह बात पता चल जाएगी कि उसे फंसाया गया है । बात उल्टी पड़ सकती है....

उसने दिमाग लगाया कि स्त्री प्रसंग वाली बात आम तौर पर लोग स्वीकार कर लेते हैं । इसलिए उसने वैभव के यहां काम करने वाली नौकरानी को पुलिसिया हथकंडे से डरा धमका कर इस बात के लिए तैयार किया कि वह वैभव के खिलाफ यौन शोषण की रिपोर्ट दर्ज करा दे ।

रिपोर्ट दाखिल हो गई और उसके आधार पर पंडा ने वैभव को गिरफ्तार कर लिया ।

नीचे से लेकर ऊपर तक सब कुछ पहले से सेट था, पंडा ने अपने गुर्गों के साथ मिलकर वैभव को बुरी तरह से प्रताड़ित किया । काफी दिनों तक उसे जेल में ही रहना पड़ा । केस लगभग ढाई साल तक चला और आखिर में वैभव बरी हो गया, लेकिन तब तक चेट्टियार का काम हो चुका था और उसकी कंपनी तैयार होकर चालू हो चुकी थी।

जेल से बाहर निकलने के बाद वैभव ने वापस विरोध करने का प्रयास किया.....

लेकिन किसी ने उसका साथ नहीं दिया ।

चेट्टियार को जब इस बात का पता चला तो उसे पुरानी घटनाएं याद आने लगी । किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थिति से बचने के लिए उसने पुनः पंडा को कांटेक्ट किया ।

मुहमाँगे पैसे देकर उसको वैभव को ठिकाने लगाने को कहा ।

पंडा ने वैभव को ड्रग्स का इंजेक्शन लगवाकर बेहोश करवा दिया और एक खाली माल गाड़ी मे डलवा दिया .....
ताकि बाद में अगर उसका मृत शरीर भी मिले तो नशेड़ी होने के संदेह में लावारिस लाश की तरह उसका निपटारा हो जाए और मामला खत्म हो ।

प्रकृति का अपना एक तरीका होता है !

हर कर्म के प्रतिकार का कोई न कोई तरीका चित्र विचित्र ढंग से सामने आ जाता है ।

इसे आप महामाया की लीला भी कह सकते हैं ।

अगर आपने कठपुतली का खेल देखा हो तो आपको पता होगा कि स्टेज पर बहुत सारी कठपुतलियां होती हैं.....

और उनके हाथ पैर और सिर धागों के सहारे से कलाकार के हाथों तक पहुंचती है ।
वह अपनी उंगलियों के इशारे से उनसे अलग अलग प्रकार के काम करवाता है !

अलग-अलग भाव भंगिमा प्रकट करवाता है !

उन्हे आपस में लड़वाता है !!

उनसे नृत्य करवाता है.....

ठीक वैसे ही महामाया के हाथ में हम सब की डोर है .....

और वह जैसा चाहती हैं वैसा हमसे करवाती रहती है .....

उज्जयिनी और झल्ली माई का प्रकोप

जिस डब्बे में वैभव को डाला गया था, मालगाड़ी का वह डब्बा संयोगवश उज्जैन पहुंच गया !

मेरे आराध्य !

देवधिदेव !!

महाकाल !!!

की नगरी उज्जैन.....

द्वादश ज्योतिर्लिंग को में इकलौता दक्षिण मुखी ज्योतिर्लिंग ।

वाममार्गी साधना का केंद्र !

पृथ्वी का नाभि स्थल माने जाने वाले उज्जैन में लगभग सैकड़ों या शायद हजारों वर्षों से स्थापित महाकाल की नगरी !

भगवान कृष्ण के गुरु की अवंतिका नगरी ।

भारत के यशस्वी चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य की साधना स्थली .....

देवी हरसिद्धि के शक्तिपीठ की उर्जा से आप्लावित उज्जयिनी.....

आज भी मदिरा के भोग पात्र को स्वीकार करने वाले काल भैरव की नगरी .....

किसी अज्ञात संयोग से वह डब्बा उज्जैन पहुंच गया । सफाई के दौरान कर्मचारियों ने डब्बे में बेहोश पड़े हुए वैभव को देख लिया और उसे मुर्दा जानकर पुलिस को बुला दिया जिन्होंने उसे जिंदा जान सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया गया ।
हफ्ते भर के इलाज के बाद वह ठीक हो गया और उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई ।
वैभव आश्चर्यचकित था कि वह उज्जैन कैसे पहुंच गया ?
उसे सिर्फ इतना याद था कि कुछ लोगों ने उसके साथ छीना झपटी और मारपीट की थी .....
उसके बाद क्या हुआ पता नहीं !

उसके पांव अपने आप बाबा महाकाल के दरबार की ओर बढ़ते चले गए .....
उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे !
वह अपनी दशा पर रो रहा था ....
या .....
अपनी विवशता पर.....

यह तय कर पाना मुश्किल था ।

उसकी आंखें उसकी व्यथा को आंसुओं के माध्यम से व्यक्त कर रही थी ।

वह आँसू जिनके ऊपर उसका नियंत्रण नहीं रह गया था ।

वे किसी टूटे हुए बांध की तरह पलकों को फांदते हुए बाहर की ओर बहते जा रहे थे और उसके गालों से नीचे की ओर गिर रहे थे .....

वह उसी अवस्था में बाबा महाकाल के दरबार में पहुँच गया ।

बाबा महाकाल जो काल अर्थात समय के अधिपति है ।

उनके दरबार में वैभव हाथ जोड़े खड़ा था उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह बाबा से क्या मांगे ?

क्या बोले ?

क्या शिकायत करे ?

जो उसके साथ घटित हो चुका था उसके बाद वह अवसाद की स्थिति में आ चुका था ।

उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें ?

जब ऐसी स्थिति में कोई भक्त महाकाल के सामने
झोली फैला कर खड़ा होता है.....
तो.....
महाकाल का डमरु बजता है !
और फिर.....
कोई ना कोई शिव गण !
भगवान शिव के संकेत पर अवश्य उपस्थित होता है ।
और उसे कोई न कोई रास्ता जरूर दिखाता है.....

वैभव आंसू भरी आंखों के साथ महाकाल बाबा को
ताकता हुआ खड़ा था .....
तभी....
नागा बाबाओं का एक दल महाकाल के दर्शन के लिए
आया ।
उस दल में 5 नागा बाबा थे ।
ऊपर से नीचे तक नंग धड़ंग !
भस्म लगाए हुए !
लाल लाल आँखें !!
और .....
माथे पर लाल रंग का बड़ा टीका ।

हाथों में बड़े-बड़े त्रिशूल ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था.....

जैसे भगवान शिव ही अलग-अलग रूपों में प्रकट हो गए हों ।

दर्शन करने के बाद जब वे मुड़े तो उन्हें एक कोने में खड़ा हुआ.....

आँसू बहाता, निराश वैभव दिखाई दिया ।

उनमें से एक उसकी तरफ बढ़ा और बोला - बच्चा !

काल भैरव मंदिर चल !

आजा !!

आगे का रास्ता वही मिलेगा !!!

वैभव किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर उनके पीछे पीछे चल पड़ा ।

शिप्रा नदी के तट पर स्थिति काल भैरव का मंदिर लगभग 6000 साल पुराना माना जाता है । यह एक वाममार्गी मंदिर है । यहां पर प्राचीन काल में तांत्रिक अनुष्ठान संपन्न किए जाते थे और केवल तांत्रिकों को ही यहां आने की अनुमति थी । कालांतर में इसे आम लोगों

के लिए भी खोल दिया गया । यहां भगवान कालभैरव को पूजा सामग्री के अलावा मदिरा का भोग भी चढ़ाया जाता है । दिन भर में कई लीटर उनको भोग में चढ़ाई जाती है लेकिन वह कहां जाती है इसका अभी तक कोई पता नहीं चला है ।

वैभव इन सारी प्रक्रियाओं को आश्चर्य के भाव के साथ देख रहा था । पूजन समाप्त करके नागा बाबा वहां से चले गए वैभव वहीं रुका रह गया । जब वह मंदिर से बाहर निकला तब तक नागा बाबा वहां से गायब हो चुके थे ।
लेकिन मंदिर के सामने खड़ी थी .....
एक लगभग 50 वर्ष के आसपास की आयु प्राप्त महिला साधू .....
झल्ली माई !
जिसने काले रंग के वस्त्र पहने हुए थे !!
गले में रुद्राक्ष की 10-11 मालाएं पड़ी हुई थी । उसकी गोद में काले रंग का एक छोटा कुत्ते का पिल्ला था.....
जिसे वह बड़े प्यार से सहला रही थी ।

सारे कुत्ते उसके इर्द-गिर्द घेरा बनाकर बैठे हुए थे ।

इधर वैभव मंदिर से बाहर निकल कर जमीन पर बैठ गया और उसकी आंखों से आंसुओं की धारा फिर से बहने लगी .....
झल्ली माई का ध्यान अचानक उसकी तरफ गया और वह सधे हुए कदमों से उसकी तरफ बढ़ने लगी ....
माई उसके पास जाकर बैठ गई !
वह नन्हा पिल्ला भी उसकी गोद से निकलकर नीचे उतर गया और वैभव को सूंघकर देखने लगा ।

झल्ली माई का हाथ वैभव के सर पर पहुंचा और उसने पूछा - क्या हुआ बेटा क्यों रो रहा है ?

उसके इतना पूछते ही वैभव की रुलाई फूट पड़ी ...
जैसे कोई फूटा हुआ बांध हो .....
वह फूट-फूट कर रोने लगा !
माई उसके सर पर अपना हाथ फेरती रही !
काफी देर रो लेने के बाद वह थोड़ा सा शांत हुआ !
इतने दिनों के बाद दिल का दर्द शायद आंसुओं के माध्यम से निकला था ....

रो लेने से उसका दिल थोड़ा हल्का हुआ ।

झल्ली माई ने फिर उससे पूछा - क्या हुआ ? बता दे ।

वैभव ने सारी कहानी उसे कह सुनाई । शुरू से लेकर आखिर तक.....

उसकी बात सुनने के बाद झल्ली माई की आंखें गुस्से से लाल हो गई .....

जो कुछ अज्ञात था उसे जानने की इच्छा के साथ संभव है उसने वैभव के सिर पर हाथ रखा और आंखें बंद कर ली .....

कुछ क्षणों के बाद जब उसकी आंखें खुली तो उसमे क्रोध का ज्वालामुखी धधक रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसने वह सब कुछ देख लिया .....

जो वैभव के साथ घटित हुआ !

और उसका परिणाम उसके चेहरे पर दिखाई दे रहा था.....

क्रोध की अधिकता की वजह से उसकी नाक फड़फड़ा रही थी !

उसकी आंख लाल हो गई थी ।

अपने साथ हुए इस भीषण अत्याचार को याद करके वैभव अभी भी रो रहा था ....

सुबक रहा था !

उसे देख कर माई ने कहा - चल तू मेरे साथ चल ।

आज उस #### को सबक सिखाएंगे ।

वैभव की समझ में कुछ नहीं आया.....

लेकिन वह बदले की संभावना से उसके साथ चल पड़ा !

कुछ ही देर में दोनों मंदिर से कुछ दूरी पर बने हुए एक पुराने खंडहर के पास खड़े थे । जिसके बगल से होती हुई शिप्रा नदी बह रही थी ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह स्थान भी साधना के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा होगा !

वहां जमीन पर पूजा सामग्री आदि पड़ी हुई थी.....

झल्ली माई ने जमीन पर सिंदूर से एक यंत्र बनाया और उसके बीच में वैभव को बैठने का इशारा किया ।

वैभव जाकर उसके बीच में बैठ गया ।

अब वह किसी मंत्रमुग्ध व्यक्ति की तरह कार्य कर रहा था !

शायद उसे ऐसा लगने लगा था कि संभवतः वह पंडा से उसके अत्याचारों का बदला लेने में सक्षम है ।
जो भी हो वह उसकी आज्ञा का पालन कर रहा था ।
जैसे ही वह उस यंत्र के बीच में बैठा !
माई ने अपने थैले में हाथ डालकर एक नरमुंड निकाला और उसे यंत्र के सामने रख दिया .....
यह सब देख कर वैभव घबराने लगा जो माई समझ गई और उसने तीव्र सम्मोहन का प्रयोग करते हुए वैभव को स्थिर कर दिया .....
फिर उसने वैभव को निर्देश दिया कि वह पंडा के स्वरूप को अपने मानस पटल पर निर्मित करें । अर्थात अपने दिमाग में उसकी आकृति बनाएं ।

वैभव के लिए पंडा का स्मरण भी पीड़ा का संकेत था .....
फिर भी उसने उसके स्वरूप को अपने मानस पटल पर स्पष्ट करने का प्रयास किया ।

माई के मुख से मंत्र जाप जारी था !
अचानक वातावरण में एक भीषण अट्टहास गूँजा , जो उस नरमुंड के मुख से आ रहा था !

माई ने तुरंत पास रखा हुआ भोग पात्र नरमुंड के मुख से टिका दिया ।

नरमुंड ने उस पात्र में रखा हुआ पूरा भोग द्रव्य ग्रहण कर लिया !

उसके बाद अचानक उस नरमुंड के माथे के बीच वाले भाग पर एक जुगनू जैसी रोशनी दिखाई देने लगी.....

माई का मंत्र जाप जारी था !

कुछ क्षणों के बाद वह रोशनी नरमुंड से अलग हो गई .....

और वैभव के सिर के ऊपर जाकर स्थिर हो गई .....

नरमुंड अपने स्थान पर उछलने लगा ।

तभी माई ने अपने बाएं हथेली के अनामिका उंगली को चीर कर खून की तीन बूंदे नरमुंड के ऊपर टपकाईं.....

तीसरी बूंद के गिरते ही वह चमकती रोशनी ऊपर की ओर उठी .....

और किसी टूटे हुए तारे की तरह तेजी से कक्ष से बाहर निकल गई.....

अपने लक्ष्य अर्थात मोहन पंडा का शिकार करने !!!

जो लोग ज्यादा उल्टे पुल्टे कर्म करते हैं.....

वह बहुत ज्यादा कर्मकांड भी करते हैं । उनको यह एहसास होता है कि वह बहुत गलत कार्य कर रहे हैं , इसलिए वे किसी ने किसी तांत्रिक को, पुजारी को या साधक को अपने लिए पूजन अनुष्ठान करने के लिए निश्चित करके रखे रहते हैं और उनके इस प्रकार के कार्य चलते रहते हैं । वे इस भूल में रहते हैं कि इस प्रकार से वे अपने गलत कर्मों का निराकरण कर लेंगे ।

वे यह भूल जाते हैं कि प्रकृति में न्याय व्यवस्था किसी भी गलत चीज को दंडित करने में विलंब भले कर सकती है लेकिन उसे क्षमा नहीं करती ।

पंडा के अपने तांत्रिक और भी थे जिसमें से चिन्नास्वामी भी एक था । उस दिन पंडा ने चिन्नास्वामी को अपने घर का बंधन करने के लिए बुलाया था .....

सौभाग्य कह लीजिए या दुर्भाग्य !

जब झल्ली माई का मारण प्रयोग पंडा के पास पहुंचा .....

उसी समय चिन्नास्वामी रक्षा के लिए बंधन का कार्य कर रहा था .....

वह अग्नि बिंदु तेजी से पंडा के घर की ओर जा रहा था .....

जैसे ही उसने प्रवेश किया बंधन कर्म करता हुआ चिन्नास्वामी उसके मार्ग में आ गया और वह मारण प्रयोग चिन्नास्वामी से टकरा गया !

वज्रेश्वरी देवी की कृपा से वह जीवित बच गया लेकिन मरणासन्न अवस्था में आ गया ।

वह जमीन पर गिर गया और उसके मुंह से झाग निकलने लगा !

यह देख कर आनन-फानन में उसे अस्पताल ले जाया गया । इलाज की व्यवस्था की गई लेकिन उसके शरीर का गले के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया ।

खंडहर में बैठी हुई मंगला को इस बात का आभास हो गया था कि चिन्नास्वामी का जीवन खतरे में है !!!

इसलिए वह उस दिन विशेष शिव पूजन संपन्न कर रही थी । संभवतः उसी की वजह से चिन्नास्वामी की प्राण रक्षा हो गई थी .....

लेकिन प्रयोग ने अपना असर उसके शरीर पर छोड़ दिया था ।

झल्ली माई उस यंत्र के सामने ध्यानस्त अवस्था में बैठी हुई थी .....

जैसे अपने भेजे हुये मारण प्रयोग को ट्रेस कर रही हो।

अचानक उसे एक झटका लगा ।

उसके मुंह से एक बड़ी सी गाली निकली ।

उसका निशाना चूक गया था .....

पंडा बच गया था ।

रात के 11:00 या 11:30 बजे का समय रहा होगा । माई के चेहरे पर परेशानी के भाव देखकर वैभव भी परेशान हो गया ।

माई ने उसे अपने स्थान पर बैठे रहने के लिए कहा और अगले प्रयोग के लिए तैयार हो गई !

उसके तरकश में ऐसे ढेर सारे बाण थे .....

जो किसी भी व्यक्ति को उसकी इच्छा पर समाप्त करने में सक्षम थे ।

आखिर वह भैरव साधिका थी !

काल भैरव के प्रांगण में !!

महाकाल के सानिध्य में ...

साधना करने वाली एक प्रचंड साधिका !!!

साक्षात काल भैरव ने जिसे दर्शन दिये थे ।
उनकी प्रचंडता को जिसने अपने अंदर समाहित किया था .....
वह हार कैसे मान सकती थी ।

उसका निश्चित विचार था कि:-
"कार्यम साधयेत वा शरीरम पातयेत"
अर्थात - जिस कार्य का निश्चय किया है वह कार्य सिद्ध होगा अर्थात सफल होगा या फिर यह शरीर गिर जाएगा या नष्ट हो जाएगा । वह उन साधिकाओं में से थी जो अगर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संलग्न हो जाए तो या तो वह लक्ष्य प्राप्त होता या फिर वह स्वयं अपने शरीर की समाप्ति तक उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होती रहती .....
ऐसे साधकों को सिद्धियां सहज प्राप्त होती हैं !
क्योंकि उन शक्तियों को भी ऐसे प्रचंड साधकों को अपनी कृपा प्रदान करने में खुशी होती है ।
वैसे भी तंत्र का क्षेत्र प्रचंडता और पौरुष का क्षेत्र है ।
यहां वही साधक साधिकायें सफल होते है जो अपने जीवन को दांव लगाने के लिए तैयार रहते हैं .....

जो तलवार की धार पर चलने के लिए तैयार रहते हैं.....

जो हर परिस्थिति का सामना करते हुए भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का संकल्प नहीं छोड़ते हैं.....

झल्ली माई वैसी ही प्रचंड साधिका थी ।

उसने अगले प्रहार का निश्चय किया !

पहले वाले मुंड को उसने वापस झोली में डाला और अंदर से एक साही का कांटा निकाला और उसे सामने रख दिया ।

साही एक खरगोश या चूहे जैसा दिखने वाला जीव होता है । जिसके पूछ वाले हिस्से पर जो बाल होते हैं वह बेहद कड़े और नुकीले होते हैं । किसी भी आक्रमण की स्थिति में यह अपने बालों को खड़ा कर देता है । अगर कोई वैसी स्थिति में उस पर आक्रमण करें तो वे कांटे उसके शरीर मे घुस जाते हैं ।

कांटों का आकार लगभग 6 से 12 इंच तक का हो सकता है और यह स्वेटर बुनने की सलाई के लगभग मोटाई की होती है और आसानी से नहीं टूटती है ।

उसकी इसी विशेषता की वजह से तेंदुए जैसे आक्रामक जानवर भी उस से टकराने से बचते हैं, क्योंकि अगर वह कांटा मुंह में या हाथ में चुभ गया तो फिर वह बुरी तरह घायल हो सकता है और कुछ दिनों के लिए शिकार करने में अक्षम भी .....

साही के काँटों का प्रयोग विभिन्न प्रकार के तंत्र प्रयोगों में किया जाता है.....
खासतौर से अभिचार कर्म में इसका विशेष महत्व होता है ।
खैर.....

माई ने मंत्र का उच्चारण प्रारंभ कर दिया और उसके साथ ही कमरे का वातावरण भारी होने लगा .....
वैभव इन सारी घटनाओं को स्तंभित अवस्था में बैठा हुआ देख रहा था ।
माई ने उसे फिर से पंडा को याद करने के लिए कहा .....
वह प्रयास करके अपने मन में उसका बिम्ब बनाने की कोशिश कर रहा था ....

तभी उस साही के कांटे को माही ने अपने हाथ में लिया और वैभव के माथे पर स्पर्श कर दिया !

वैभव हक्का-बक्का बैठा हुआ था !

तभी....

उस कांटे को माई ने उसकी दाई जंघा पर चुभा दिया .....

वैभव की चीख के साथ खून की धारा बह निकली ।

जिससे वह पूरा का पूरा काटा भीग गया .....

नीचे गिरते हुए रक्त को माई ने अपने बाएं हाथ की हथेली पर एकत्र कर लिया .....

उसके बाद उस रक्त से भीगे हुए साही के कांटे को हथेली के ऊपर सीधा यानि नोक वाला हिस्सा हथेली पर टिकाकर रखा और छोड़ दिया !

वह साही का कांटा अपने आप....

हथेली के ऊपर सीधा खड़ा हो गया !

हथेली में पड़ा रक्त धीरे-धीरे गायब होने लगा !!

ऐसा लग रहा था जैसे वह कांटा उसको ग्रहण कर रहा हो ।

दो तीन सेकंड में हथेली पर पड़ा हुआ पूरा रक्त गायब हो गया !

शून्य से एक चटखारा लेने की आवाज आई ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था.....

जैसे कोई अपनी मनपसंद चीज को प्राप्त करके उसके स्वाद का आनंद लेते हुए चटकारा ले रहा हो !

अचानक माई ने एक जोर का हुंकारा भरा !

अपनी दाहिने हाथ की मुट्ठी को जमीन पर जोर से मारा और बाएं हाथ को आसमान की दिशा में उठा दिया !

जो काटा हथेली पर खड़ा हुआ था वह अभी आड़ा हो गया .....

लेकिन वह जमीन पर नहीं गिर रहा था ।

माई ने जमीन पर तीन रेखाएं खींची और उसे एक लंबी रेखा खींच कर काट दिया .....

जैसे ही तीनों रेखाएं कटीं .....

साही का कांटा हथेली से निकलकर वैभव की ओर बढ़ा .....

वह उसकी जांघ से बह रहे रक्त से जा चिपका !

ऐसा लग रहा था.....

जैसे वह उस घांव के अंदर घुस कर रक्त खींच रहा हो !

वैभव दर्द से कराह रहा था.....

लेकिन हिल नहीं पा रहा था .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसके हाथ पैर किसी बंधन में बंध गए हो ।

वह अपने स्थान से हिल नहीं पा रहा था ....

लगभग 10 सेकंड तक वह कांटा उसी प्रकार रक्तपान करता रहा और फिर अपने स्थान से उछल कर वैभव के सिर के ऊपर परिक्रमा करने लगा !

सिर के 10-11 चक्कर लगाने के बाद वह तेजी से बाहर की ओर निकल गया ....

यह था माई का पंडा के लिए दूसरा मारण प्रयोग ...

पंडा चिन्नास्वामी को अस्पताल में भर्ती करा कर वापस घर की ओर लौट रहा था ....

घटी हुई घटनाओं के चलते वह भयभीत भी था, लेकिन उसे बिल्कुल आभास नहीं था कि उसके ऊपर किए गए मारण प्रयोग की वजह से चिन्नास्वामी की यह हालत हुई है !

वह उसे स्वाभाविक रूप से पैरालिसिस का अटैक मान रहा था जिसकी वजह से चिन्नास्वामी गिर पड़ा था ।

इन सब बातों पर विचार करते हुए एस पी पंडा अपने घर की ओर लौट रहा था .....

रात के लगभग 12:30 बजे का समय रहा होगा !
सुनसान अंधेरी सड़क पर उसकी जीप 100 किलोमीटर की रफ्तार से चल रही थी .....
और तभी.....
आसमान में एक जलते जुगनू की तरह वह साही का कांटा प्रकट हुआ !
वह सनसनाता हुआ पंडा के सीने से जा टकराया !
चलती गाड़ी में बैठे हुए पंडा को ऐसा लगा .....
जैसे उसकी छाती के अंदर किसी ने हाथ डाल दिया हो .....
या कोई चीज उसके हृदय के अंदर घुस गई हो !
अचानक उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया !
उसकी जीप उस समय नाले के ऊपर बने एक पुल के ऊपर से गुजर रही थी जो अनियंत्रित हो गयी ।
अनियंत्रित होते ही जीप पुल के रेलिंग से टकराई और जीप का स्टेयरिंग टूटकर पंडा के सीने मे जा धंसा ।
जीप पंडा के साथ पलटी खाकर सीधे नाले में गिर गई !
पंडा का काम तमाम हो चुका था !!
माई अपना लक्ष्य भेदन कर चुकी थी !!!
उसने यह बात वैभव को बताइ ।

वैभव के कलेजे को ठंडक पहुंची । उसने माई के चरण स्पर्श कर लिए । माई ने भी उसे हृदय से लगा लिया .....

फिर दोनों उस स्थान से माई के आश्रम की ओर निकल गए ।

वैभव निश्चय कर चुका था कि अब आगे का समय वह इस पापी दुनिया को छोड़ कर साधना के क्षेत्र में गुजारेगा और इसके लिए उसे माई से बेहतर कोई गुरु कहां मिलने वाला था .....

चिन्ना स्वामी का इलाज और अक्षय पात्र की वापसी

इधर अगले दिन सुबह चेलों ने मंगला के पास चिन्नास्वामी की हालत के बारे में जानकारी पहुंचाई । मंगला चिन्नास्वामी को देखने के लिए अस्पताल पहुंची । उसे देखते ही समझ में आ गया कि वह किसी मारण प्रयोग की चपेट में आया था और उसका इलाज अस्पताल में नहीं हो सकता ।

उसकी हालत को नाजुक बताकर डॉक्टरों ने भी अपने हाथ खड़े कर दिए थे । उन्होने बता दिया था कि गंभीर ब्लड हेमरेज हुआ है जिसकी वजह से उसके बचने की संभावना नहीं के बराबर है ..... अब केवल कोई चमत्कार ही इसे बचा सकता है , आप इसे घर ले जाकर ईश्वर से प्रार्थना करें ।

यह सुनकर मंगला चिन्नास्वामी को डिस्चार्ज करवा कर उस के बंगले पर ले आई ।

मंगला ने अपने स्तर पर उसे सही करने का प्रयास किया लेकिन इससे पहले उसने इस प्रकार का कोई प्रयोग नहीं किया था और उसे इस विषय पर ज्यादा जानकारी भी नहीं थी । इसलिए उसका प्रयास बहुत ज्यादा प्रभावी नहीं हुआ ।

जब उसे लगा कि यह उसके बस की बात नहीं है तो उसने देवी वज्र चंडेश्वरी का ध्यान किया और मार्गदर्शन की अपेक्षा की .....

समय कम था और चिन्नास्वामी की हालत को देखकर ऐसा लग रहा था कि अगर उसे जल्द ही राहत नहीं मिली तो उसका बचना लगभग नामुमकिन है !
डॉक्टर तो पहले ही अपने हाथ उठा चुके थे ।

चिन्नास्वामी की गतिविधियों से रुष्ट हो चुकी देवी ने काफी प्रयासों के बाद केवल यह संकेत दिया कि जिसका अक्षय पात्र इस ने उठाया है उसके घर में वह व्यक्ति है जो तेरी मदद कर सकता है .....
इतना बता कर देवी विलुप्त हो गई ।

मंगला ने चेलों को बुलाया और बोली - चिन्नास्वामी ने अक्षय पात्र जिसके पास से उठाया था उस आदमी के यहां जाओ और पता करो कि वहां पे कोई तांत्रिक साधक आया हुआ है क्या ?

चेले तुरंत मुथुस्वामी के घर की ओर निकल पड़े और आधे घंटे में खबर लेकर लौट आए कि छत्तीसगढ़ से वह किसी आदमी को लेकर आया है जो 3 दिनों से उसके घर में मौजूद है ।
मंगला समझ गई कि देवी का संकेत किसकी ओर है .....
वह तुरंत गाड़ी में बैठकर मुथुस्वामी के घर की ओर रवाना हो गई ।

हम दोनों भोजन करने के बाद टीवी पर खबरें देख रहे थे । वह एक लोकल चैनल था जिसमें स्थानीय समाचार दिखाये जा रहे थे और जो समाचार सबसे प्रमुखता से दिखाया जा रहा था वह था एसपी पंडा की दुर्घटना में मौत का .....
उसकी टूटी फूटी जीप क्रेन की सहायता से नाले में से निकालने की कोशिश की जा रही थी और शव की

तलाश में गोताखोर लगे हुए थे लेकिन तब तक उसका शव बरामद नहीं हुआ था ....
तभी दरवाजे की घंटी बजी .....

चेलों ने पहले ही अंदर आने से मना कर दिया था क्योंकि वह मुथुस्वामी के घर की सीमा के अंदर घुस नहीं पाते थे ।
मंगला एक सिद्ध साधिका थी इसलिए उसके लिए देवी शक्तियों के पास आना भी सहज संभव था तो वह दरवाजे तक पहुंच गई और उसीने घंटी बजाई थी ....
मुथुस्वामी ने दरवाजा खोला ।
दरवाजा खुलते ही उसने देखा कि एक अनजान महिला सामने खड़ी है.....
जिसके विषय में उसे जानकारी नहीं थी ।
उसने कहा - मुझे बाबा से मिलना है ।
यह बात सुनते ही मुथुस्वामी ने दरवाजे से हटकर उसे अंदर आने का संकेत किया ।
मेरी नजर भी दरवाजे की ओर थी ।
जैसे ही मंगला अंदर घुसी .....

मैं अपने स्थान से खड़ा हो गया क्योंकि उसके मुथुस्वामी के घर में इस प्रकार से आने की मैंने कतई उम्मीद नहीं की थी ।

शाम के धुंधलके में मंगला के स्वरूप से थोड़ा अलग था अभी का स्वरूप !
सामान्य स्त्री के जैसा था !
नीले रंग के बॉर्डर वाली आसमानी रंग की साड़ी पहने हुए वह एक सामान्य महिला के जैसे ही लग रही थी .....
अगर मैं उससे पूर्व परिचित नहीं होता तो संभवत उसके भैरवी होने का अनुमान नहीं लगा सकता था . ....

वह आकर सोफे पर बैठ गई । बिना किसी भूमिका के उसने कहना प्रारंभ कर दिया - माई ने संकेत दिया है, आप ही उसे बचा सकते हैं । मेरे चिन्नास्वामी को बचा लीजिए ।

मेरे दिमाग की बत्ती जली और मुझे लगा कि इस अवसर में अगर मैं मुथुस्वामी के अक्षय पात्र की वापसी की शर्त रख दूं तो संभव है कि वैसा हो जाए ।

उनकी शांति के दौरान भी उसी प्रकार के अनुभव हो सकते हैं ।
ऐसी स्थिति में उपस्थित किसी असावधान व्यक्ति को भी नुकसान हो सकता है और मैं नहीं चाहता था कि मुथु के साथ ऐसा हो ।

मैं बाहर निकल कर मंगला की गाड़ी में सवार हो गया और हम सब चिन्नास्वामी के बंगले की ओर चल पड़े ।

चिन्नास्वामी का बंगला किसी महल से कम नहीं था ।
हर तरफ वैभव बिखरा पड़ा था ....
फर्श पर संगमरमर लगा हुआ था और छत से कांच के फानूस लटक रहे थे !
सागौन की लकड़ी के भारी काम वाले दरवाजे और खिड़कियां अपनी कीमत खुद बयान कर रहे थे ।

भीतर वाले कमरे में चिन्नास्वामी बिस्तर पर बेसुध पड़ा था । बाजू में ऑक्सीजन का सिलेंडर और कुछ मशीनें लगी हुई थी । देखभाल के लिए एक नर्स का भी इंतजाम किया हुआ था ।

मैंने सभी को कमरे से बाहर जाने के लिए कहा । मंगला वहां पर खड़ी रही !

मैंने उसे भी बाहर जाने के लिए कहा ।

बड़े बेमन से वह बाहर चली गई ।

फिर मैंने दरवाजा बंद कर दिया ।

गुरुदेव का ध्यान करके एक बार चारों तरफ देखा !

उसके सिरहाने पर मुझे पिशाचिनी बैठी हुई नजर आई.....

वह पिशाचिनी जिसे उसने सिद्ध किया था.....

और अपने कान के ऊपर स्थान दिया था ।

वह उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करती हुई.....

वहां बैठी हुई थी ।

पैशाचिक या भूत प्रेत जिन्न आदि की साधना तब तक तो बहुत अच्छी है जब तक आप साधना करते रहें और आपका शरीर आपका साथ देता रहे ।

लेकिन.....

जैसे ही रोगों का आगमन होता है या शरीर अस्वस्थ होने लगता है.....

वही शक्तियां आपकी मृत्यु की आकांक्षी होकर आपको अपने लोक में ले जाने के लिए आतुर हो जाती है.....

इसी क्रम मे वे आपकी कमजोरी को और बढ़ा देती है ।

मेरा पहला काम था.....
उस पिशाचिनी को वहां से हटाना ।
उसके बाद आगे की प्रक्रिया चालू की जा सकती थी ।
मुझे माई के द्वारा किए गए प्रयोग के संबंध में सूचना मिल चुकी थी कि किया गया प्रयोग काफी ताकतवर प्रयोग था और उस की शांति के लिए उसी के टक्कर का शांति प्रयोग होना जरूरी था.....
यहां पर यह बताना भी प्रासंगिक होगा कि मारण प्रयोग में अधिकांशतः पैशाचीक शक्तियां ही कार्य करती हैं । किसी सिद्ध पिशाच को उसका भोग प्रदान करके इस कार्य के लिए संकल्पित करने के बाद भेजा जाता है । वह अपनी शक्तियों के साथ वहां तब तक रुका रहता है जब तक अपने लक्ष्य को उसके अंतिम बिंदु तक न पहुंचा दें .....

यह बात ध्यान आते ही मैंने फिर से एक बार नजर दौड़ाई । उसके गर्दन के पास सूक्ष्म रूप मे वह पिशाच भी बैठा हुआ था ।
संभवतः चिन्नास्वामी के द्वारा की गई साधनाओं ने उसे थोड़ा अतिरिक्त समय दे दिया था ....
जिसकी वजह से वह जिंदा था.....
वरना वह उसे समाप्त करने की पूरी तैयारी में था ।

अपने-अपने देवी देवता या इष्ट की उपासना हर धर्म में की जाती है और अधिकांश धर्म के लोग इस विषय में काफी नियमित हैं । अगर आप सिख धर्म के लोगों को देखें तो उनमें से अधिकांश रविवार के दिन गुरुद्वारे में मत्था टेकने जाते हैं । इसी प्रकार से ईसाई धर्म के लोग भी हर रविवार चर्च अवश्य जाते हैं । यह उस सर्वोच्च सत्ता के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने का एक तरीका है जो उसकी कृपा प्रदान करता है ।

हमारे सनातन धर्म में हर घर में शाम के समय दीपक जलाने का प्रावधान था जोकि साक्षात शक्ति का प्रतीक माना जाता है । इसके अलावा संध्या भी दैनिक दिनचर्या का एक हिस्सा रहा है जिसे हम धीरे-

यह बात ध्यान आते ही मैंने फिर से एक बार नजर दौड़ाई । उसके गर्दन के पास सूक्ष्म रूप मे वह पिशाच भी बैठा हुआ था ।
संभवतः चिन्नास्वामी के द्वारा की गई साधनाओं ने उसे थोड़ा अतिरिक्त समय दे दिया था ....
जिसकी वजह से वह जिंदा था.....
वरना वह उसे समाप्त करने की पूरी तैयारी में था ।

अपने-अपने देवी देवता या इष्ट की उपासना हर धर्म में की जाती है और अधिकांश धर्म के लोग इस विषय में काफी नियमित हैं । अगर आप सिख धर्म के लोगों को देखें तो उनमें से अधिकांश रविवार के दिन गुरुद्वारे में मत्था टेकने जाते हैं । इसी प्रकार से ईसाई धर्म के लोग भी हर रविवार चर्च अवश्य जाते हैं । यह उस सर्वोच्च सत्ता के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने का एक तरीका है जो उसकी कृपा प्रदान करता है ।

हमारे सनातन धर्म में हर घर में शाम के समय दीपक जलाने का प्रावधान था जोकि साक्षात शक्ति का प्रतीक माना जाता है । इसके अलावा संध्या भी दैनिक दिनचर्या का एक हिस्सा रहा है जिसे हम धीरे-

धीरे छोड़ते जा रहे हैं । वर्तमान समय में बहुत कम ऐसे सनातनी परिवार होंगे जो एक साथ रोज शाम के समय पूजन या आरती संपन्न करते होंगे ।

खैर .....

हाँ !

अगर आप नित्य देवी देवताओं जैसे महाकाली, जगदंबा दुर्गा, भगवान अघोरेश्वर महादेव, महाविष्णु, नरसिंह भगवान का मंत्र या कवच आदि संपन्न करते हैं !

बेवजह शमशान, कब्रिस्तान, मजार जैसे मृत आत्माओं के निवास स्थानों पर नहीं जाते हैं, या वहां से कोई चीज लाकर अपने घर या पूजन स्थान में नहीं रखते हैं !!

तो .....

आपकी आध्यात्मिक शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं और आपके इर्द गिर्द एक सुरक्षा चक्र जैसा बना देती है । जिससे इस बात की पूरी संभावना है कि आप के ऊपर किए जाने वाले तांत्रिक प्रयोग या तो हल्का असर दे कर समाप्त हो जाएं या पूरी तरह से निष्क्रिय हो जाएं ।

तीन प्रकार के जगत माने गए हैं । पहला होता है प्राण जगत । दूसरा होता है मनो जगत और तीसरा होता है आत्म जगत ।

इसमें से पहला वह है जिसमें हम सब जीवित अर्थात प्राण से युक्त जीवो की उपस्थिति है और यहां पर प्राणशक्ति क्रियाशील है ।

दूसरा जगत होता है मनोमय जगत और उसमें मन की शक्ति या अतृप्त वासना कामनाएं आदि क्रियाशील होती हैं । इसी जगत में पाए जाते हैं भूत-प्रेत आदि .....

इनमें जो सबसे ताकतवर शक्तियां होती हैं वह इस प्रकार है वेताल, पिशाच, गुहयक, सिद्ध, भूत आदि । इनमें से मनोमय शरीर धारण करने वाले और तामसिक शक्तियों से युक्त बेताल को सबसे प्रबल माना जाता है !

इसके बाद पिशाच का नंबर आता है ।

विख्यात तंत्र विद्या के अन्वेषक डॉ अरुण कुमार शर्मा के द्वारा लिखे गए परलोक विज्ञान नामक ग्रंथ में उन्होंने इन जगतों में रहने वाले प्राणियों का तथा उनकी संरचना का भी उल्लेख किया है .....

उनके अनुसार वेताल के शरीर का रंग लाल होता है लाल अर्थात गाढ़े गहरे खून के जैसा और पिशाच के शरीर का रंग काला होता है । वेताल और पिशाच के दोनों के शरीर की समानता यह होती है कि वह काफी गठीले और विशाल शरीर के होते हैं । उनका आकार अजीबोगरीब होता है । इसके अलावा एक और विशेषता होती है वह यह कि उनका सिर उनके शरीर की तुलना में असामान्य रूप से बड़ा होता है । जिसमें काफी चौड़ा फैला हुआ मस्तक, छोटी छोटी आंखें, अजीब ढंग से फैली हुई लंबी नाक, लटकता हुआ जबड़ा होता है । इसके अलावा इनकी गर्दन काफी मोटी और दांत बाहर की ओर निकले हुए और बड़े बड़े होते हैं ।

शक्ति के हिसाब से पिशाच से हजारों गुना शक्ति संपन्न होते हैं वेताल ।
आप इसके विषय में विक्रम और बेताल नामक कथा से परिचित होंगे जिस की कहानियां हम बचपन में पढ़ते रहे हैं और जिस के विषय में एक सीरियल भी टीवी पर आता था । जिसमें राजा विक्रमादित्य काफी प्रयास के

बाद पेड़ पर लटकने वाले एक वेताल को अपने कब्जे में कर लेता है ।

यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि राजा विक्रमादित्य एक अद्भुत साधक थे और साथ ही उच्च कोटि के विद्वान भी थे । संभवत: इसी बेताल साधना के बल पर उन्होंने असंभव कार्यों को संभव किया था और एक बहुत बड़े राज्य को नियंत्रित विस्तारित और संपन्न बनाया था । उन्हीं के नाम से हम कैलेंडर में विक्रम संवत देखते हैं ।

यह योनियां अपनी शक्ति का प्रयोग प्रकृति में विकृति अर्थात असामान्य परिस्थितियां पैदा करने के लिए करती हैं । जिसके फलस्वरूप समुद्री तूफान आते हैं ! चक्रवात आदि होते हैं ! ऐसा माना जाता है । इस प्रकार से प्रकृति में विकृति उत्पन्न ना हो इसलिए हमारे यहां वैदिक यज्ञ तथा विभिन्न प्रकार के पूजा-पाठ और तांत्रिक अनुष्ठानों का विधान किया जाता है ।

चिन्नास्वामी की हालत काफी गंभीर थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अगर एक-दो दिन के अंदर वह

अनुकूलता की ओर नहीं आ पाया तो उसका बचना लगभग नामुमकिन हो जाएगा । दोनों पिशाचों ने मिलकर उसकी प्राणशक्ति को बहुत ज्यादा क्षीण कर दिया था ।

क्योंकि यहां पर पिशाचों की उपस्थिति थी इसलिए उनके निवारण के लिए उन्हीं के समकक्ष या उससे ज्यादा ताकतवर शक्ति का आह्वान करना जरूरी था । इस विषय पर विचार करने पर मेरे मन में वेताल का विचार आया और लगा कि यही वह शक्ति है जो इन पेशाचिक शक्तियों को सहजता से दूर कर सकती है । इसके साथ ही यह भी जरूरी था कि इस प्रयोग को यथाशीघ्र संपन्न किया जाए ताकि बहुत ज्यादा नुकसान होने से पहले चिन्नास्वामी को इन शक्तियों के चंगुल से मुक्त कर लिया जाए , फिर उसकी पुष्टि के लिए विभिन्न जाप संपन्न करवाएं ।

यह निर्णय कर लेने के बाद मैं कमरे से बाहर निकला । चेले तब भी आसपास घूम रहे थे । मैंने उनको बाहर जाने का इशारा किया । उन्होंने मंगला की तरफ देखा । मंगला ने आंखें तरेरी और वे दोनों कमरे से बाहर हो गए । मैंने मंगला को सारी स्थितियों से अवगत कराया,

जिसके विषय में उसे भी आंशिक जानकारी थी । फिर मैंने बेताल साधना की जरूरत के विषय में बताया और कहा कि इसके लिए श्मशान में जाकर प्रयोग करना आवश्यक है । जिसे सुनकर मंगला ने तुरंत सहमति देते हुए आवश्यक सामग्री की लिस्ट बता देने के लिए कहा । साथ ही सहयोग के लिए साथ में रहने की पेशकश भी की । यह एक अच्छी बात थी क्योंकि एक अनुभवी तथा साधना के क्षेत्र में जानकारी रखने वाला सहायक होना शमशान साधना में हमेशा एक प्लस पॉइंट होता है ।

मृत्यु के इतना करीब खड़े हुए चिन्नास्वामी को छोड़कर जाना उचित नहीं था । इसलिए यह तय किया गया कि चिन्नास्वामी को भी शमशान में ले जाया जाएगा और वहीं पर प्रयोग संपन्न किया जाएगा ।
सारी आवश्यक सामग्रियों की लिस्ट बनाकर मंगला को सौंप दी । मंगला ने चेलों को तत्काल उस सामग्री की व्यवस्था करने का आदेश दे दिया और वह आदेश का पालन करने के लिए निकल पड़े ।

चिन्नास्वामी के बचाव के लिए कुछ वैकल्पिक व्यवस्था करना अनिवार्य था , ताकि प्रयोग संपन्न होने के पहले वे पिशाच शक्तियाँ उसके ऊपर किसी प्रकार का बुरा असर बढ़ाने में सक्षम ना हो सके । इसके लिए जरूरी था कि उनकी पैशाची शक्तियों को बांध दिया जाए । दिन होने की वजह से वह अपनी पूर्ण शक्तिशाली अवस्था में नहीं थे और थोड़े से कमजोर थे । ऐसी स्थिति में उन्हें बांधना ज्यादा आसान होता ।

चेलों को भेजने के बाद मैं उस कार्य मे लग गया । सबसे पहले मैंने चिन्नास्वामी को पूर्ण निर्वस्त्र कर देने के लिए कहा । नर्स उस काम मे लग गयी ।

उसके बाद मंगला से शराब की तीन बोतल मंगवाई जो घर पर ही मौजूद थी । इसके साथ ही कुछ मांस खंड भी मंगवाया । थोड़ी देर मे सामग्री आ गई । कुछ विशेष क्रियाओं के द्वारा कमरे को बांधने के बाद मैंने प्रक्रिया प्रारंभ की । सबसे पहले चिन्नास्वामी के शरीर पर द्रव को डालना प्रारंभ किया । थोड़ी देर में चटखारो की आवाज आने लगी दोनों पिशाच शराब के ऊपर टूट पड़े थे । उनकी तृष्णा बढ़ने लगी थी ....

अब समय था उनसे वचन लेने का ।

मैंने शराब डालना बंद कर दिया ।

क्रोधित पिशाचों की आवाज गूंजने लगी ।

चिन्नास्वामी का शरीर भी अजीब ढंग से हिलने लगा ।

वे प्यासे हो रहे थे .....

मैंने उनसे चिन्नास्वामी का शरीर छोड़ने का आग्रह किया ..... लेकिन इससे उन्होंने इंकार कर दिया ।

मैंने उनके लिए आवश्यक भोग की व्यवस्था करने का आश्वासन दिया और चिन्नास्वामी को छोड़ने के लिए कहा..... इसके लिए वे राजी नहीं हुए ।

हाँ !

काफी मान मुनौव्वल के बाद इस बात के लिए राजी हो गए कि उनकी भोग आपूर्ति होते तक वे चिन्नास्वामी को हाथ नहीं लगाएंगे ।

मैं भी जानता था कि ..... इससे ज्यादा वह मानेंगे नहीं लेकिन इतना आश्वासन मिल जाने से यह निश्चित हो गया कि आज के दिन वे लोग चिन्नास्वामी को ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाएंगे ।

इससे मुझे थोड़ा समय मिल जाएगा , यही मैं भी चाहता था ।

एक व्यवस्था हो चुकी थी ।
पेशाचिक शक्तियों पर ज्यादा विश्वास करना भी उचित नहीं होता है क्योंकि उनका कोई धर्म ईमान नहीं होता और वह कभी भी धोखा धड़ी कर सकते हैं । इसलिए मैंने चिन्नास्वामी की उंगली मे धीरे से एक रक्षा कवच वाली अंगूठी पहना दी थी ।

उस समय रात के दस बज चुके थे । मसान घाट गांव मे सबसे आखरी छोर पर था । गांव में जैसा होता है मसानी शक्तियों से नुकसान पहुंचने की अनगिनत कथाओं के चलते वे यथासंभव शाम के बाद मशान से दूर ही रहते हैं ।
इसलिए उस ओर जनसंचार समाप्त हो चुका था, गांव भी लगभग पूरा सो चुका था ।
मसान घाट पर पहुंचने के बाद मैंने मसान घाट का चक्कर लगाने का निर्णय लिया । एक चेले को दरवाजे पर चिन्नास्वामी के एंबुलेंस के अंदर ही बैठे रहने को कहकर वहाँ एक रक्षा घेरा भी बना दिया और फिर मैंने एक चेले और मंगला के साथ मसान घाट का एक चक्कर लगाया ।

उस दिन मसान घाट में तीन चिताएँ जली थीं । और एक को मिट्टी दी गयी थी यानि जमीन मे गाड़ा गया था । वह एक युवक था जिसका शव वेताल साधना के लिए अत्यंत उपयुक्त था । चेले को उसे बाहर निकालने का निर्देश दिया ।

वह चेला था दुर्गाली !

दुर्गाली चिन्नास्वामी के साथ इस प्रकार की क्रियाओं में पहले भी सहयोगी रहा था इसलिए वह बिना भयभीत हुए इस कार्य में लग गया था ।

आधे घंटे की मेहनत के बाद शव बाहर आ गया ।

जिस चिता के सामने प्रयोग होना था वह चिता एक महिला की थी जिसने फांसी लगा ली थी । उसकी आयु लगभग 35 के आसपास की रही होगी । उसका शव पूरा जल चुका था सिर्फ कुछ हड्डियाँ दिख रही थीं ....

युवक के शव को दुर्गाली ने नहलाया । फिर उस चिता के बगल मे लिटा दिया ।

दुर्गाली हट्टा कट्टा था !

काफी साहसी भी था !

तभी वह इस प्रकार के कार्य कर पाता था ।

लेकिन जब वह उस शव को लिटा रहा था तभी .....

अचानक !

उस युवक शव की आंखें फटाक से खुल गई । उसने दुर्गाली का गला अपने हाथ में दबोच लिया !

दुर्गाली ने ज़ोर की चीख मारी !

डर के मारे उसका चेहरा पीला पड़ गया !

और वह बेहोश हो गया ।

चीख सुनकर मेरा ध्यान उसकी तरफ गया और फिर मैंने शव को मंत्रों के द्वारा शांत करके वापस लेटा दिया .....

लेकिन तब तक दुर्गाली बेहोश हो चुका था !

यह एक नई मुसीबत थी ।

क्योंकि वह इतना हट्टा कट्टा था कि उसे उठाकर श्मशान से बाहर ले जाना भी संभव नहीं था ।

ऐसी स्थिति में उसे एक अलग सुरक्षा घेरे में डाल देने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा .....

तो .....

मैंने वैसा ही किया !

उसे चिता से थोड़ी दूरी पर एक और सुरक्षा घेरा बनाकर उसमें घसीट कर डाल दिया ।

वह इतना भारी था कि इस प्रकार से घसीटने में ही पसीना निकल गया था !

वह बिल्कुल किसी शव की तरह पड़ा हुआ था ।

उसे इस तरह पड़ा देख कर मुझे लगा कि कहीं यह डर के मारे मर तो नहीं गया ?

ऐसा हो गया तो फिर एक नई मुसीबत आने वाली थी .....

मशान मे हमेशा साधक को सजग और किसी भी मुसीबत के लिए तैयार रहना चाहिए ....

घेरे में लिटाने के बाद मैंने उसकी गर्दन पर अपनी उंगली रखकर इस बात की पुष्टि की कि वह जीवित है या नहीं ?

नाड़ी चल रही थी .....

अर्थात वह जीवित था !

इस बात से मुझे थोड़ी संतुष्टि हुई !

मैंने उसे उसके घेरे के अंदर डालने के बाद आवश्यक मंत्रों के द्वारा कीलित किया और वापस चिता के पास आ गया ।

चिता की आग अभी हल्की-हल्की सुलग रही थी । सारी आवश्यक सामग्रियों जिसमे एक बड़े साइज का काला बकरा और शराब की बोतलों के अलावा तीन प्रकार की अन्य चीजें भी शामिल थी को अपने पास रख लिया । मैंने मंगला को भी अपने पास बैठा लेने के बाद सभी को लेते हुए चिता के चारों तरफ सुरक्षा घेरा बनाया तथा अन्य साधनात्मक आवश्यकताएं पूरी की । दिगंबर अवस्था में बैठकर मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया । मंत्र प्रारंभ होने के साथ वातावरण में भारीपन बढ़ता चला गया.....

कुल तैंतीस माला का जाप होना था और वह भी अस्थियों से बनी माला से.....

हड्डी में बीच में छेद होता है | इसमे से आंत का धागा डालकर माला बनाई जाती है | उसे बनाने के लिए भी विशेष प्रक्रिया की जाती है .....

मसान साधनाएं विशेष रूप से वेताल जैसी प्रचंड शक्तियों की, जब साधना की जाती है तो पहले शमशान जागृत किया जाता है !

मसान मृत आत्माओं का स्थान होता है और वहां पर प्राण जगत का नियंत्रण नहीं होता । वह मनो जगत के नियंत्रण में होता है । वहां पर परा मानसिक शक्तियां हावी होती हैं । वहां इस जगत की शक्तियां अर्थात प्रेतादी शक्तियां अपने अपने विकार और वासना के अनुसार समस्त प्रकार की क्रिया करने के लिए स्वतंत्र और उन्मुक्त होती हैं । उनके ऊपर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं होता । इस संसार में जिस जिस प्रकार की क्रियाएं और घटनाएं हो सकती हैं, उससे भी ज्यादा वीभत्स, कामुक और भयानक क्रियाएं मसान के अंदर यह प्रेत और पिशाच संपन्न करते रहते हैं ।

ऐसी ऐसी क्रियाएँ जिन्हे अगर सामान्य व्यक्ति देख ले तो फिर अपनी जिंदगी मे दुबारा श्मशान की ओर देखने की भी हिम्मत नहीं कर पाएगा ! जाना तो बहुत दूर की बात है !

यह हमारा सौभाग्य है कि प्रकृति की व्यवस्था ऐसी है कि हम उस जगत की गतिविधियों को नहीं देख सकते हैं ।

खैर .....

जब शमशान जागृत होता है तो अंदर श्मशान मे स्थित समस्त शक्तियां जागृत होकर बाहर निकल आती हैं । यह सारी की सारी शक्तियां उस साधक को बरगला कर, डरा कर, प्रपंच करके अपने स्थान से हटाने की कोशिश करती हैं ।

चिता की अग्नि उस समय हल्की हल्की जल रही थी जब मैने आहुतियां देनी प्रारंभ की .....
लेकिन जैसे-जैसे उसकी आहुतियां बढ़ती गई चिता की आग भी धीरे-धीरे भड़कने लगी.....
बढ़ती हुई आग के साथ शमशान के अंदर से आ रही आवाजों की तीव्रता भी बढ़ती जा रही थी .....
आवाजें कई प्रकार की थी !
किसी के रोने चीखने की आवाज !
तो कभी ऐसा लगता था जैसे कोई नाम लेकर पुकार रहा हो .....
कभी ऐसा लगता था जैसे कोई लड़की हंस रही हो !
कभी ऐसा लगता था जैसे कोई मोटी आवाज वाला पुरुष जोरदार अट्टहास कर रहा है !

इन सबके बीच वातावरण का भारीपन भी उसी प्रकार से बढ़ता जा रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे हवा में ऑक्सीजन की कमी हो गई हो.....
सांस लेने में थोड़ी सी दिक्कत हो रही थी ..... लेकिन मैं अपने कार्य में लगा हुआ था ।

जिस घेरे में मैं बैठा था, उसके बाहर चित्र विचित्र आकृतियाँ मेरी ओर झपाटा मारती खड़ी थीं, लेकिन वे सुरक्षा घेरा नहीं पार कर पा रही थीं |
ये सब वेताल की सहयोगी शक्तियाँ थीं जो साधक का परीक्षण करती रहती हैं और कमजोर साधक को समाप्त भी कर देती हैं | इनमें से सभी का स्वरूप एक से एक विचित्र और भयानक था ।

एक स्त्री का शरीर लगभग 10 फीट ऊंचा था लेकिन उसकी मोटाई मुश्किल से 6 इंच की थी !

एक और स्त्री डामर की तरह काली थी, केवल उसके सफ़ेद सफेद लंबे नुकीले दांत दिखाई दे रहे थे !

एक स्त्री ऐसी भी थी जो किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही थी !
पुष्ट और भरे भरे वक्षस्थल की स्वामिनी वह महिला बेहद मादक देहयष्टि की स्वामिनी थी ।

उस सुंदर स्त्री ने अपनी सुंदर देह को अलग अलग तरीके से दिखाया और मुझे विचलित करने का हर संभव प्रयास किया ।
उसने पूरी उन्मुक्तता के साथ ऐसी ऐसी मुद्राएं दिखाईं जिसे अगर कोई सामान्य पुरुष देख ले तो किसी हालत में अपने आप को ना रोक पाए ।
यह सारी स्त्रियां निर्वस्त्र थी ।
आप भी जानते होंगे कि मसान की शक्तियां सभी बंधनों से मुक्त होती है ।
यह सब चल रहा था तभी.....
कुछ देर में वहां पुरुष प्रेत भी प्रकट हो गए । उनमें से कुछ का आकार एक से डेढ़ फुट का था और वे बेहद मोटे यानि लगभग तीन तीन फुट चौड़े थे ।

कुछ का आकार बीस पचीस फुट लंबा दिखाई दे रहा था और कुछ का तो ऊपर का भाग ही नहीं दिखाई दे रहा था ..... वे इतने लंबे थे ।

तभी .....

एक बेहद भयानक मुखाकृति वाला किसी पहलवान के जैसे दिखने वाला एक प्रेत भी वहां पर प्रकट हुआ और उसने उस सुंदर महिला प्रेतीन को दबोच लिया.....

और फिर प्रारंभ हो गया पैशाचिक संभोग.....

एक तरफ दो प्रेतों की कुश्ती चल रही थी !

दूसरी तरफ कुछ अपने नाखूनों से एक दूसरे को नोच नोच कर खा रहे थे .....

कुल मिलाकर वीभत्सता और कामुकता का नग्न प्रदर्शन हो रहा था ....

जो किसी को भी विचलित करने के लिए पर्याप्त था ।

लगभग एक घंटे तक प्रेत लीला चलती रही....

मेरा मंत्र जाप भी साथ में चलता रहा.....

इसके बाद अचानक ऐसा लगने लगा जैसे मौसम बदलने वाला है !

बेमौसम बारिश शुरू हो गई !

बिजली कड़कने लगी !!

हवाएं तेजी से चलने लगी !!

जैसे तूफान आने ही वाला हो !!!

अचानक एक धमाका सा हुआ .....

उसके बाद .....

एक चक्रवात जैसा हवा का घेरा दक्षिणी कोने से उठा और तेजी से मेरी तरफ बढ़ने लगा .....

वह चक्रवात जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता था .....

रास्ते में पड़ने वाली सारी चीजों को उखाड़ कर अपने में समाता जा रहा था ।

मसान घाट के अंदर आम तौर पर पड़े रहने वाले पदार्थ जैसे बांस , मटकी के टुकड़े, पुराने तकिए, गद्दे, चादर, कफन , सब उस चक्रवात के अंदर गोल गोल घूम रहे थे !

वह चक्रवात तेजी से मेरी तरफ बढ़ रहा था ।

ऐसा लग रहा था जैसे अभी वह हम सब को अपने अंदर समेट लेगा !

वह बढ़ता हुआ दुर्गाली के घेरे तक आ गया और दुर्गाली भी उसी चक्रवात के अंदर घूमने लगा !

शमशान की साधनाएं बेहद उग्र और शीघ्र फलदायक होती हैं जिसके परिणाम बेहद जल्दी मिल जाते हैं । हाँ !
इसके लिए तयार होने अर्थात सही अर्थों मे अघोरी बनने या इन साधनाओं के योग्य बनने मे वर्षों लग जाते हैं .....
यह बात भी है कि इस प्रकार की साधना में या तो सफलता मिलती है या फिर साधक को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है !

इस प्रकार की साधना को बीच में छोड़ने का मतलब भी मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है । इसलिए थोड़ा भयभीत होने के बावजूद मैं अपने आसन पर पूरी ताकत के साथ में बैठा हुआ था ।

वह चक्रवात मेरी तरफ तेजी से बढ़ रहा था । जिस चिता के पास में बैठा था उसके ऊपर शेड भी था जो लोहे की शीट से बना हुआ था । वह चक्रवात आगे बढ़ते बढ़ते हमारे पास तक आ गया और उसके चारों तरफ चक्कर लगाने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे हवा

से बनी कोई विशाल आकृति हमारे चारों ओर गोल गोल घूम रही हो .....

ऊपर के शेड की फड़फड़ाने की और शीटों के आपस मे टकराने की आवाज आ रही थी । ऐसा लग रहा था कि वह अब टूटा और तब टूटा ।
शेड के नीचे जो स्ट्रक्चर बना हुआ था वह पतले लोहे के एंगल का था ।
अगर उस एंगल का बड़ा टुकड़ा टूट कर सर पर गिरता तो बचना बेहद मुश्किल था ।
लेकिन.....
मेरे पास कोई उपाय नहीं था ।
सिवाय इसके कि अपने आसन पर बैठकर अपनी साधना को पूर्ण करूँ ।

मंत्र जाप बढ़ता गया और उसके साथ चक्रवात की गति भी तेज और तेज होती चली गई । कुछ समय के बाद ऊपर लगा हुआ शेड भी उखड़ गया और सारे शीट चक्रवात के साथ घूमने लगे । एंगल के टुकड़े मेरे आजू-बाजू गिरने लगे ।

तभी.....

वेताल का आगमन

दुर्गाली का शरीर सीधा चिता के बीच में आकर गिरा । उसके ऊपर सवार थी एक सुर्ख लाल रंग की भयानक आकृति जो उस चक्रवात के ऊपर तक समाई हुई थी ..... केवल उसके पाँव दिख रहे थे जिसमे एक पाँव के नीचे पूरा दबा हुआ था दुर्गाली .....

मंगला भी भयभीत होकर काँप रही थी .....
शायद उसे लग रहा हो कि यह कहां फंस गई ? लेकिन अब कोई रास्ता भी नहीं बचा था ।

यह क्रम चलता रहा और इसके बाद वह चक्रवात सिमटा और उसी चिता में समा गया ।

चिता के ऊपर दुर्गाली का उत्तान शरीर पड़ा हुआ था और उसके ऊपर विराजमान था .....

वेताल !
साक्षात वेताल !!
शक्तिशाली वेताल !!!

वह विशालकाय लाल आकृति अब सिमटकर लगभग 15 से 20 फुट की हो चुकी थी !
तब भी आप समझ सकते हैं कि वह कितनी विशालकाय रही होगी ।

उसका रंग गाढ़ा खून के जैसा था । ठीक वैसे जैसे आपने अगर रक्तदान किया हो तो जिस थैली में खून जमा होता है उसमें से खून का जो रंग दिखाई देता है ठीक वैसा .....

उसका चेहरा काफी बड़ा था !
लगभग 4 फुट के व्यास का रहा होगा ।
दांत लंबे लंबे और लगभग एक से डेढ़ फुट तक मुंह से बाहर की ओर निकले हुए थे और किसी सुई की तरह नुकीले थे ।
वह अपनी बाईं जांघ पर अपना बाया हाथ रखकर बैठा हुआ था और मेरी ओर झुका हुआ था !
उसका चेहरा मुझसे मुश्किल से एक या डेढ़ फुट की दूरी पर रहा होगा ।
वह अपने दूसरे हाथ से दुर्गाली की गर्दन को पकड़कर चिता के अंदर घुसा रहा था !

जैसे मुझे मेरा अंजाम दिखाने की कोशिश कर रहा हो ।
दुर्गाली के बाल और मांस के जलने की गंध बिखरती जा रही थी ।
उसने दहाड़ कर कहा - बंद कर मंत्र जप !

उसकी आवाज ऐसी थी जैसे आस-पास कोई बड़ा सा बम फूट गया हो !
पहले से भयभीत बैठी हुई मंगला इस आवाज को बर्दाश्त नहीं कर पाई और वह भी अपने आसन पर बेहोश होकर लुढ़क गई.....

भय मुझे भी लग रहा था लेकिन मुझे पता था कि अगर मंत्र जाप पूरा नहीं हुआ तो भी जीवित रहने की संभावनाएं कम हो जाएंगी ....
दुर्गाली तो ऐसे ही हाथ से जा चुका था ....
इसलिए हर हालत में निर्धारित और संकल्प लिया हुआ मंत्र जाप पूरा करना ही है यह शमशान का नियम है ।

आखरी माला का मंत्र जाप जारी था जब अचानक मैंने देखा कि चिन्नास्वामी की एंबुलेंस मसान घाट के अंदर की ओर आ रही है वह भी रिवर्स में .....

चिता से लगभग 10 फुट दूर आकर वह एंबुलेंस अचानक रुक गई !

उसका दरवाजा भड़ाक से खुल गया ।

मैंने सोचा कि अब शायद चिन्नास्वामी की देह भी बाहर आ गिरेगी !

लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ.....

मेरा मंत्र जाप पूरा हो चुका था और मैंने सामने रखे हुए भोग पात्र को आगे बढ़ा दिया.....

जिसे वेताल ने ग्रहण कर लिया !

उसके बाद मैंने उस काले बकरे को चिता की ओर बढ़ा दिया । एक ही बार में वेताल ने पूरा बकरा निगल लिया ।

उसके बाद एक हुंकार की ध्वनि आई जैसे पूछ रही हो कि क्या चाहिए ?

मैंने हाथ जोड़कर चिन्नास्वामी के ऊपर बैठे हुए पिशाचों से मुक्ति की प्रार्थना की ।

वेताल के मुंह से एक अजीब सी आवाज निकली.....

और तभी ....

मैंने देखा कि वे दोनों पिशाच काले धुए की शक्ल मे एंबुलेंस मे पड़े चिन्नास्वामी के शरीर से बाहर निकले और चिता के बगल में आकर खड़े हो गए !
ठीक वैसे ही जैसे किसी बड़े दादा को देखने पर छोटे-मोटे गुंडे हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं !
वे दोनों ठीक वैसे ही खड़े थे ।

उसके बाद वेताल ने दोनों पिशाचों को अपनी हथेली मे किसी गोली की तरह उठा लिया और अपने मुंह में डाल लिया !
वेताल के सामने उन भयानक पिशाचों की उतनी ही औकात थी !
इतना करने के बाद फिर से एक जोरदार हुंकार की आवाज आई और काला धुआं चारों ओर फैल गया ....
जब धुआँ छट गया तो वेताल वहां से लुप्त हो गया ।
उसी के साथ दुर्गाली का शरीर भी चिता के ऊपर से गायब हो गया....

उस समय रात के लगभग 1:00 या 1:30 बजे का समय रहा होगा ।
अंधेरा सुनसान शमशान !

दूर-दूर तक किसी इंसान का नामोनिशान नहीं दिखाई दे रहा था .....

उस अंधेरे में एक अधजली चिता के बाजू में मैं निर्वस्त्र बैठा हुआ था ....

मेरे बगल में मंगला बेहोश पड़ी थी !

और थोड़ी ही दूरी पर एक एंबुलेंस खड़ी थी जिसमें एक मरणासन्न व्यक्ति पड़ा हुआ था !

बेहद विचित्र और अजीबोगरीब सा माहौल बना हुआ था !

कुछ देर तक मैं घटी हुई घटनाओं के बारे में सोचता हुआ अपने आप को नियंत्रित करने की कोशिश करता हुआ बैठा रहा.....

क्योंकि जो हुआ था वह अप्रत्याशित था और संभवतः अब जो होने वाला था वह भी अप्रतीक्षित ही था.....

जैसा कि मैंने आपको पहले भी कहा था कि किसी भी तांत्रिक के जीवन में अजीबोगरीब घटनाएं और असंभावित घटनाएं होती रहती है !

उसे ऐसी किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहना पड़ता है.....

और यही उसकी नियति है !

जिसे मैं स्वीकार कर चुका था ।

लगभग 15 मिनट तक अपनी सांसो को नियंत्रित करने का प्रयास करता रहा और अपने मस्तिष्क को भी शांत करने की कोशिश करता रहा और अंततः उसमें सफल रहा ।
फिर मैंने मंगला को हिलाकर जगाने की कोशिश की लेकिन वह तो बेहोश पड़ी हुई थी ।
मैंने सोचा कि हो सकता है एंबुलेंस के अंदर दुर्गाली का सहयोगी जागृत अवस्था में हो तो उसकी सहायता से मंगला को भी उठाकर एंबुलेंस में डाल देंगे और ले चलेंगे .....

लेकिन जब मैं एंबुलेंस के पास गया तो हैरान रह गया ....
क्योंकि ....एंबुलेंस की ड्राइविंग सीट पर या उसके बगल वाली सीट पर कोई नहीं था । यानी दुर्गाली का सहयोगी भी गायब हो चुका था ।
यानि वह एंबुलेंस अपने आप श्मशान के अंदर चलती हुई आ गई थी ।

मेरे मन में एक विचार यह आया कि हो सकता है यह बंदा बाहर पड़ा हुआ हो !
मैं उसे देखने के लिए मसान से बाहर निकल कर उस स्थान पर आया जहां पर एंबुलेंस खड़ी हुई थी लेकिन वह वहां भी मौजूद नहीं था ।

कुछ देर मैंने इधर उधर देखा.....
लेकिन दूर दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था ऐसी स्थिति में वहां पर ज्यादा देर खड़े रहना भी उपयुक्त नहीं था.....
और चिन्नास्वामी को वापस घर पहुंचाना भी जरूरी था.....
लेकिन उससे पहले जरूरी था मंगला को होश में लाना ....
तो मैंने एंबुलेंस के अंदर देखा तो पानी की एक बोतल पड़ी हुई मिली उसमें से पानी लेकर जब मैंने मंगला के ऊपर छिडका तो उसने मिचमीचाते हुए आंखें खोल दी और जोर से चिल्लाई ।
मुझे देख कर फिर उसने डरते हुए चिता की ओर देखा । वहाँ वेताल को न देखकर उसकी जान मे जान आई और

वह उठकर बैठ गयी । मैंने उसे चलने का इशारा किया और हम दोनों वापस चिन्नास्वामी के बंगले की ओर लौट गए ।

मेरी हालत खराब हो चुकी थी । बंगले पर पहुंचने के बाद मैं बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद में चला गया चिन्नास्वामी का क्या हुआ यह देखने के लिए भी मेरे पास ताकत नहीं बची थी ।
मंगला ने चिन्नास्वामी को नर्स की मदद से अंदर बिस्तर तक पहुंचाया ।
तब तक मैं सो चुका था ।

घर वापसी

लगभग तीन चार घंटे की नींद के बाद शरीर में थोड़ी सी ताकत वापस आई ...

तब तक सुबह के लगभग सात या आठ बज चुके थे । मंगला चाय लेकर मेरे कमरे में आई । तब तक मैं फ्रेश हो चुका था । चाय पीने के बाद स्नान आदि कर्मों से निवृत्त होने के बाद नाश्ते की टेबल पर हम बैठे ।

मंगला ने बताया कि चिन्नास्वामी की हालत में काफी सुधार है । उसने अपनी आंखें खोल दी है । नाश्ता करने के बाद हम दोनों उसके कमरे में गए । मंगला ने चिन्नास्वामी को मेरे बारे में बताया उसने हाथ जोड़कर मेरा धन्यवाद किया । उसके बाद मंगला ने अक्षय पात्र के बारे में उससे पूछा उसने मंगला को इशारों से उसके बारे में बता दिया ।

संभवत: मंगला ने मेरी शर्त के बारे में उसे जानकारी दे दी थी और पिशाच तथा श्मशान साधना के विषय में भी उसे बता दिया था जिसकी वजह से चिन्नास्वामी इतनी सहजता से राजी हो गया था ।

मंगला मुझे लेकर बंगले के अंदर बने हुए तहखाने में ले गई । वहां से एक रास्ता जो सुरंग की शक्ल का था वह उसी खंडहर के पास निकलता था । हम उसमें से होते हुए खंडहर के पास पहुंचे । मंगला ने तिलस्म खोला और हम दोनों उसके अंदर प्रवेश कर गये ।
वास्तव में वह एक अद्भुत दृश्य था जिसकी सामान्यत: कल्पना भी नहीं की जा सकती । एक मुश्किल से 10 या 12 फीट चौड़ा झरने जैसा पानी का साफ सोता बह रहा था और उसके बगल में वह अद्भुत मंदिर स्थापित था ।
उस मंदिर के अंदर स्थापित थी वज्र चंदेश्वरी की काले रंग के पत्थर से बनी हुई वह अद्भुत मूर्ति जो देखने में किसी जीवित स्त्री के जैसे लगती थी ।

वहां पहुंचकर मंगला ने कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ कर दिया और थोड़ी देर में उसके शरीर में देवी का आवेश आना चालू हो गया । उसी मंदिर के अंदर देवी के सानिध्य में मंगला ने मुझे वह अक्षय पात्र सौंप दिया ।

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था कि मंगला विभिन्न प्रकार की साधनाओं में लगी हुई थी और उस मंदिर मे उसने कई सिद्धियां भी प्राप्त की थी ।
संभवत: उसे मेरे द्वारा चिन्नास्वामी को बचाने के लिए किए गए प्रयास और श्मशान में की गई साधनाओ को देखकर उचित लगा होगा या फिर देवी वज्र चंडेश्वरी की इच्छा रही होगी , जिसकी वजह से उसने मुझे एक क्रिस्टल बॉल प्रदान की । यह गोल सफेद रंग के पत्थर से बना हुआ था । उसने उसके प्रयोग की विधि भी मुझे समझाई । इसका प्रयोग रात्रि ग्यारह बजे के बाद किया जाता है । कुछ विशेष मंत्रों के उच्चारण के बाद वह क्रिस्टल बॉल किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रदान कर देता था । यह एक अद्भुत सिद्धि थी जो उन्होंने प्राप्त की थी और बड़ी ही सहजता से मुझे प्रदान कर दी थी । मैंने उसे लेकर अपना अभिवादन प्रस्तुत किया और फिर हम दोनों वापस उसी रास्ते से होते हुए चिन्नास्वामी के बंगले तक लौट आए ।

चिन्नास्वामी के दोनों चले गायब हो चुके थे, इसलिए मैंने मुथुस्वामी को मुझे आकर ले जाने के लिए कहा

और लगभग आधे घंटे के बाद वह वहां उपस्थित हो गया ।

वहां से निकलते समय कृतज्ञता भरे हुए नेत्रों के साथ मंगला ने मुझे विदा किया !

कुछ वैसे ही भाव मेरे मन में भी थे क्योंकि मंगला ने शर्त से ज्यादा मुझे प्रदान कर दिया था । मैंने तो केवल एक शर्त पर वह कार्य किया था कि वह अक्षय पात्र वापस लौटा देंगे लेकिन उन्होंने अक्षय पात्र के साथ-साथ मुझे वह चमत्कारी बॉल भी प्रदान कर दिया था जिसके लिए मैं हृदय से उनका आभारी था ।

कुछ देर मे ही मुथुस्वामी के साथ में उसके घर वापस लौट आया और घर आने के बाद जब मैंने उसे अपनी जेब से अक्षय पात्र निकाल कर दिया तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा !

वह नाचने लगा और उसने मुझे गले लगा लिया ।

कालांतर में मुथुस्वामी ने अक्षय पात्र की सुरक्षा की और बेहतरीन व्यवस्था की और उसके आशीर्वाद से ऐश्वर्य और समृद्धि की ऊंचाइयों को स्पर्श करता चला गया ।

इधर मैं चिन्नास्वामी के दोनों चेलों को लेकर संशय में था कि वे दोनों कहां चले गए ?

इसके निराकरण के लिए मैंने कपालिनी से प्रश्न किया और उसने बताया कि जब अंदर चक्रवात घूम रहा था उसी समय दुर्गाली का साथी जिज्ञासावश शमशान की सीमा का उल्लंघन करके अंदर आ गया था । जबकि मैंने उसे श्मशान से बाहर रहने के लिए ही कहा था । उसके इस कदम से सुरक्षा रेखा भी टूट गई थी और वेताल ने उन दोनों की बलि ग्रहण कर ली थी ।

खैर .....

जो भी हुआ वह भले के लिए हुआ ।

चिन्नास्वामी पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हो पाया । उसका शरीर का बायां हिस्सा विशेष रुप से बाया पैर लगभग लकवा ग्रस्त स्थिति में बना रहा । उसे पूर्ण स्वस्थ स्थिति तक पहुंचने में भी लगभग 3 महीने का समय लग गया । इस दौरान मंगला ने चिन्नास्वामी के लिए कई प्रकार के मृत्युंजय अनुष्ठान आदि संपन्न करवाएं जिसकी वजह से वह लगभग स्वस्थ हो गया ।

इस घटना से चिन्नास्वामी के अंदर व्यापक परिवर्तन हुआ और उसने अपने दुष्कर्म का त्याग कर दिया ।

संभवतः उतने दिन मंगला के साथ अकेले रहने के कारण मंगला के सानिध्य ने उसे परिवर्तित कर दिया होगा .....

जो भी हो .....

अंत भला तो सब भला .....

समाप्त

श्री गुरु चरणार्पणम

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।
14. अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं ।
15. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गं ।
16. अघोरानंद और चम्पा बंजारन ।
17. कापालिक चंडेश्वर ।
18. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।
19. वह रहस्यमय युवती ।
20. परेतिन की शादी ।

साधना विधियाँ :-

1. **गुरुपूजन की विधियाँ ।**
2. **मंत्र साधना और गुरु की आवश्यकता ।**
3. **अकाल मृत्यु तथा रोग नाशक मंत्र ।**
4. **श्री गणेश पूजन की विधियाँ ।**
5. **महालक्ष्मी पूजन ।**

आप मेरी औडियो बुक्स कूकू एफ एम तथा प्रतिलिपि एफ एम पर सुन सकते हैं ।